CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा का इतिहास

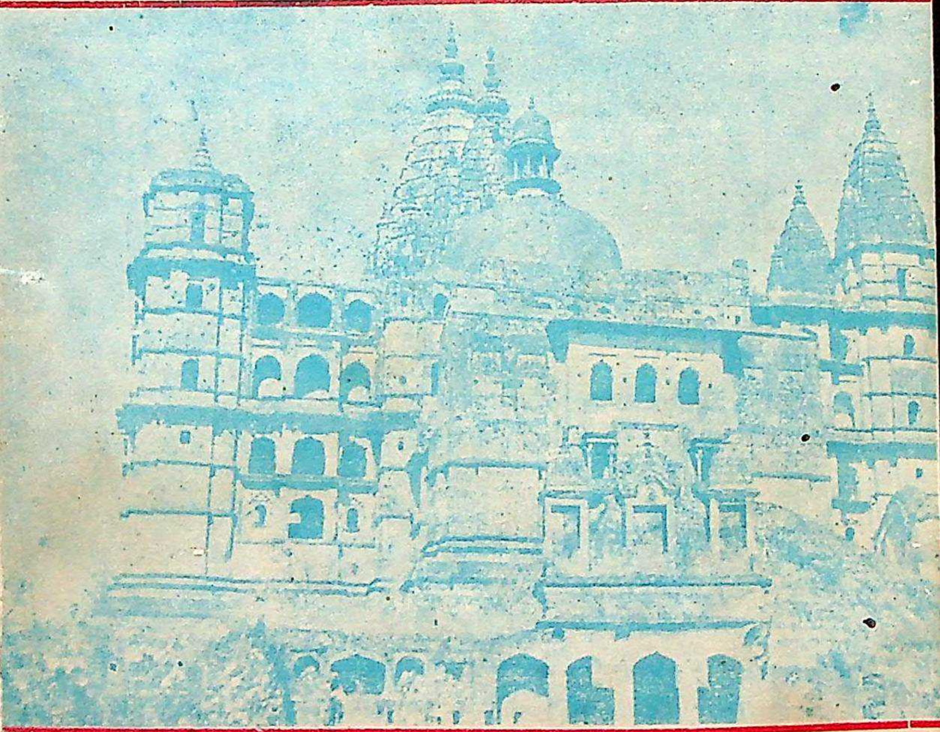

लेखक व प्रकाशक

ठाकुर लछमनसिंह गौर

ओरछा (जिला टीकमगढ़) म. प्र.

नौवां संस्करण

सन् १९८२ ई०

मूल्य

दस रुपये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री दिमान हरदौल महाराज देव तुल्य ओरछा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा का इतिहास

[सर्वाधिकार लेखकाधीन है]

लोक शिक्षण संचालनालय म० प्र०

क्रमांक ग्रन्थालय/सं०/७८/१४०/१९९ भोपाल, २४ फरवरी ७८
अनुसार स्वीकृत है।

9340

रचियता लेखक व प्रकाशक

सर्व सत्व स्वाधीन

ठा० लछमनसिंह गौर ओरछा

रामनवमी १२-४-८१ ई०

नौवां संस्करण ११००] वि० सं० २०३८ सन् १९८२ ई० [मूल्य दस रुपये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नौवाँ संस्करण

रामनवमीं-केशव जयन्ती दिनांक १२-४-८१ ई०

(वि० सम्वत् २०३८)

विक्री संख्या दस हजार

5355

१० हजार सन् १९८१ ई० तक

State Museum Library Lucknow

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

लोक शिक्षण संचालनालय म० प्र०

क्रमांक ग्रन्थालय/सं०/७८/१४०/१९९ भोपाल २४ फरवरी ७८

अनुसार स्वीकृत है।

मिलने का पता :

ठाकुर लछमनसिंह गौर, ओरछा

तहसील-निवाड़ी जिला-टीकमगढ़

(म० प्र०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

— निवेदन —

संसार में जीवित और उन्नत जातियों के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने पूर्वापर इतिहास का भली प्रकार ज्ञान रखें। देश काल की गतिविधि उसके समय समय पर हुये परिवर्तन आदि और अनेक आवश्यक बातें इतिहास से ही मानी जाती हैं। इतिहास साहित्य का एक मुख्य अङ्ग है। इतिहास और साहित्य की सृष्टि लेखकों और कवियों द्वारा ही हुआ करती है। अतः यह आवश्यक है कि प्रथम हम अपने इन इतिहास ग्रन्थों के निर्माताओं के सम्बन्ध में जान लें। प्रस्तुत पुस्तक इन ही भावनाओं से प्रेरित होकर लिखी गई है।

ओरछा वीरों और कवियों की खान है इसमें कितने वीर पुरुष दानी महाराजा हुये। ओरछा के जन मानस में सदैव आचरण की गंगा प्रवाहित होती रही है। कला और संस्कृति के अद्वितीय गढ़ यहां की गरिमा के प्रतीक बने हैं यहां का कंकर २ शंकर की पावन भावना से धन्य है। अपनी अध्यात्मिक गरिमा और संस्कृति सभ्यता में सदैव अग्रणी रहा है।

बुन्देलखण्ड का इतिहास लिखना एक बड़ा कठिन काम है दो हजार वर्ष का यदि बुन्देलखण्ड का इतिहास देखा जाय तो इस समय में इतना उत्थान एवं पतन हुआ है और राजनीति में इतनी आंधी एवं तूफान आये हैं कि बुन्देलखण्ड का इतिहास उसमें धूमिल हो जाता है बुन्देलखण्ड के वीरों का इतिहास व जिन्होंने बुन्देलखण्ड की रचना की उसका इतिहास बहुत गौरवपूर्ण इतिहास है बुन्देलखण्ड में कालिंजर का किला महोबा का इतिहास ओरछा और पन्ना का इतिहास उसकी वस्तु स्थिति को प्रकट करता है महोबा का इतिहास महान है। कालिंजर के महान सेनापति शेरशाह सूरी को यहां के बहादुरों ने जतारा में परास्त कर विजय किया था। अकबर का महान सेनापति अब्दुल फजल जब अपनी डेढ़ लाख सेना को लेकर बुन्देलखण्ड के ऊपर बढ़ा तो ओरछा के महाराजा वीरसिंह देव ने डबरा (आंतरी) के मोर्चे में उसे खतम कर दिया था महाराजा छत्रसाल का इतिहास बुन्देलखण्ड के युद्ध स्थल में आज भी गूंजता है। लक्ष्मीबाई को दुर्गावती और बक्सर की महारानी को भारत में कौन नहीं जानता, आल्हा ऊदल की अद्वितीय वीरता विश्व के इतिहास में अनुपम है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा एक ऐसे ही स्थानों में से है जिसका अपना सांस्कृतिक महत्त्व है। यहां की वीरता, त्याग एवं विद्वता की महानता के समक्ष सबको नतमस्तक होना पड़ता है।

ऐसे साँस्कृतिक स्थान का परिचय प्रकाशित कर हमें प्रसन्नता हो रही है। आशा है इसे अमर बनाने में सभी सहायक होंगे।

ओरछा संसार के उन स्थानों में से है जो आज भी अपनी छाती के नीचे सांस्कृतिक थाती को काल के कठोर आघातों से बचाकर अतीत के मूक गीत गाते हुये उत्थान और पतन के विधान की दुहाई दे रहे हैं। यहा कितनी संस्कृतियों का विकास और ह्रास हुआ इसका हमारा अपना कोई इतिहास नहीं है। आदि काल से लेकर मौर्यो, शकों, मालवी, नाग, भार–शिवों, वाकाटकों गुप्तों और चन्देलों के समय इसका क्या वैभव था। उससे भी हम परिचित हैं। परिहारों ने इसे अपनी राजधानी बनाया और गंगानगर नाम रखा। चन्देलों ने उसे ढहा दिया। यह इतिहास के बिखरे पन्नों में बहुत ढूंढने पर मिल जाता है।

इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रार्थना है कि मैं निश्चित ही शुद्ध रूप से लेखक नहीं हूं लेकिन गत इतिहास की जाग्रत कहीं अवश्य है इसलिये मैंने जो अपने सिर पर लिये महान दायित्व को हृदयावेश में जिस प्रकार निभाया है उसमें अनेकों त्रुटियां होना स्वाभाविक है। पाठक इसके लिये मुझे क्षमा करेंगे और अपना अमूल्य सुझाव देकर कृतार्थ करेंगे जिससे मैं अपने इस संकल्प को श्री रामराजा भगवान की कृपा से आगे दसवाँ संस्करण में पूरा करने का प्रयास कर सकूं। ओरछा का इतिहास के एडीसन का आठवां (संस्करण) निकल चुका है और अब नये रूप में जनता के सामने पुनः नोंवां संस्करण लाने की चेष्टा की है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी छाया चित्र श्री डा० देवेन्द्र वर्मा तहसीलदार छिन्दवाड़ा के सौजन्य से व श्री जगदीश नारायन पुरोहित शिक्षक से प्राप्त हुये हैं मैं इस कृपा का आभारी रहूंगा।

रामनवमीं
दिनांक १२-४-८१
वि० सं० २०३८

ठाकुर लछमनसिंह गौर ओरछा
तहसील–निवाड़ी
जिला–टीकमगढ़ (म० प्र०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

• •

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ठा० श्री लछमनसिंह ओरछा राज्य के समय से ही मन्दिर श्री रामराजा ओरछा में सेवारत हैं। यह मात्र शासकीय सेवक ही नहीं वरन धर्मनिष्ठ कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। इन्होंने प्रायः अपना सम्पूर्ण जीवन ही मन्दिर की सेवा में समर्पित कर दिया है। समर्पण की इस भावना से अभिभूत होने के कारण ही यह आर्थिक अभावों की चिन्ता किये बिना अपना पूरा समय मन्दिर की सेवा हेतु समर्पित किये हुये हैं।

ठाकुर श्री लछमनसिंह उन इने गिने व्यक्तियों में से हैं जिन्हें मन्दिर श्री रामराजा ओरछा एवं ओरछा से सम्बन्धित इतिहास का अच्छा ज्ञान है। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने इसे लिपि वद्ध करने का प्रयास किया है। आशा है पाठकगण इस प्रामाणिक जानकारी से अपनी जिज्ञासा एवं शंकाओं का समाधान कर सकेंगे।

मैं उनके इस सत्प्रयास की सफलता की कामना करता हूं।

प्रे० ना० सिंह
उपजिलाध्यक्ष, टीकमगढ़
तहसीलदार निवाड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

टीकमगढ़ जिले की मेरी ३ साल की अवधि में मुझे ओरछा जाने तथा देखने का काफी अवसर प्राप्त हुआ। इस दरम्यान ठाकुर लछमणसिंह से शासकीय तथा अन्य कार्यों के कारण सम्बन्ध बना रहा।

ठाकुर लक्ष्मणसिंह पुरातन नगरी ओरछा में काफी वर्षों से निवास कर रहे हैं। पर्याप्त साधनों के अभाव में भी यह अपने लिखने-पढ़ने तथा अनुसंधान का कार्य करते रहते हैं। यह एक महत्वपूर्ण तथा प्रशंसनीय बात है। यह इनकी लगन तथा तपश्चर्या का ही फल है कि प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसके संस्करण के संस्करण प्रकाशित हो रहे है।

'ओरछा का इतिहास' अब अजनवी न होकर प्राय: मध्य प्रदेश के सभी लोग इससे परिचित हो गये हैं और इसका महत्व जानने लगे हैं। यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि संचालक लोक शिक्षण, म० प्र० भोपाल द्वारा इस पुस्तक की माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुस्कार में देने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

इस नवीन नौवां संस्करण के लिये मैं ठाकुर लक्षमणसिंह को हार्दिक बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक दिनों दिन ज्यादा प्रगति पायेगी और ठाकुर लक्षमणसिंह अपने अनुभव तथा विद्वान लोगों की टिप्पणी के अनुसार समय-समय पर इसमें संशोधन करते रहेंगे।

इस किताब का सौंदर्य बढ़ाने के लिये डा० देवेन्द्र वर्मा ने छायाचित्र उतार कर दिये हैं, वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

डा० कृ० मु० भवरासकर
जिलाध्यक्ष
जिला दतिया (म० प्र०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृष्णदत्त बाजपेयी
टैगोर प्रोफेसर तथा अध्यक्ष :
प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग
संचालक :
उत्खनन तथा सर्वेक्षण सागर वि० वि०
अध्यक्ष :
भारत मुद्राशास्त्र परिषद

स्नेहाच्च बहुमानाच्च स्मारयं त्वां, न शिक्षाये
(रामायण ३, ९, २४)

सागर विश्वविद्यालय
सागर (म० प्र०)

क्रमांक···/प्राभाई

दिनांक २९–११–७६

शुभ-कामना संदेश

ठाकुर लक्ष्मनसिंह गौर द्वारा लिखित पुस्तक 'ओरछा का इतिहास' पढ़कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में ओरछा की गणना है। भारतीय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन में ओरछा निवासी अनेक मनीषियों ने बिपुल योग दिया। विद्वान मित्र मिश्र जी, महात्मा हरीराम व्यास स्वनामधन्य नृपति मधुकरशाह जी महारानी गणेश कुमारी जी, राय प्रवीण जी, लाला हरदौल जी, आचार्य केशवदास जी आदि ने अपनी महान कृतियों से ओरछा का नाम उज्जवल किया। यहीं वीरसिंह देव जी जैसे उदारचेता शासक हुए जिनके बनवाये हुये मन्दिर और प्रासाद बुन्देलखण्ड तथा ब्रजभूमि की शोभा है।

वस्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, साहित्य और संगीत के संबर्धन में ओरछा के राज परिवार का योगदान इस देश के इतिहास में अमर रहेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस महत्वपूर्ण नगर का मनोरंजन विस्तृत इतिवृत लिखकर ठाकुर लक्ष्मनसिंह जी ने एक शुभ कार्य सम्पन्न किया है। इस पुस्यक में प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक युग तक ओरछा का गौरवपूर्ण इतिहास दिया गया है। जिन महानुभावों ने ओरछा क्षेत्र में रहकर साहित्य संस्कृति की सेवा की उनके सम्बन्ध में खोजपूर्ण सामग्री इस पुस्तक में दी गयी है। मैं ठाकुर साहब के इस सत्यप्रयास की सराहना करता हूं। आशा है मध्य प्रदेश शासन उन्हें उपयुक्त आर्थिक सहायता प्रदान करेगा।

पुस्तक में आपने बुन्देलों के गौरव को उभार कर नयी पीढ़ी के सामने रखा पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि बुन्देलों की कीर्ति के सामने राजपूताने का इतिहास भी बौना सा लगता है आपने जो बुन्देलखण्ड और ओरछा का इतिहास ढूँढ़-ढूँढ़ कर लिपि बद्ध किया है एक सराहनीय कदम है दुर्लभ इतिहास को आपने प्रकाश में रखा और नयी पीढ़ी के लिए इतिहास बना कर रख दिया बुन्देलों के गौरव से परिचित कराया इस कार्य के लिए मूल्य चुका पाना असम्भव है।

कृष्णदत्त बाजपेयी

दिनाँक : २९ नवम्बर, ७६

सम्मतियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रीयुत लक्ष्मणसिंह जी गौर अभिरचित ओरछा का इतिहास निश्चय ही न केवल बुन्देलखण्ड के इतिहास को एक नया मोड़ देकर जीर्ण मान्यताओं को निराकृत करता है। प्रत्युत मुगल कालीन भारतीय इतिहास के माप दण्ड को ही नवीन संस्करण प्रदान कर सकता है। इतिहास शब्द की उत्पत्ति "इति–ह–आस" अर्थात् ऐसा हुआ था के सन्दर्भ में लेखक ने मनसावाचा कर्मणा पूर्ण न्याय किया है।

लेखक ने किसी भ्रम अथवा कल्पनाओं का सम्बल न लेकर उपलब्ध विश्वस्त हस्तलेखों के अनसार इतिहास की इमारत खड़ी कर भावी पीढ़ी के लिये संविधान तैयार किया है।

लेखक का सुमहान प्रयत्न अब भी गहरी पर्तों में दबे हुये इतिहास के ध्वंसावशेषों को निकाल कर भव्य प्रासाद का निर्माण करने का है। जो कि अत्यन्त जटिल किन्तु श्लाध्य है। जिन परिस्थितियों में एक पर्ण कुटी में रहने वाले कलाकार ने इस सृष्टि का निर्माण किया वह शब्दों द्वारा व्यक्त करना सम्भव नहीं।

मुझे आशा है इस सुमहान प्रयत्न से भारतीय इतिहास को उन्मेष तथा भारतीय पीढ़ी को नवीन सन्देश मिलेगा।

आपके द्वारा लिखित पुस्तक 'ओरछा का इतिहास पढ़कर ऐसा लगा जैसे आपने गागर में सागर भर दिया हो।

डा० विष्णुदेव शर्मा

कर्मक्षेत्र–कालेज

मेम्बर—बोर्ड आफ स्टडीज

ज्ञान भारती प्रकाशन

५३—न्यू कालौनी इटावा यू० पी०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छायाकार की ओर से

स्थायी–निवास
९४५, बाई का बगीचा
जबलपुर (म० प्र०)
दिनांक १८ जनवरी सन् १९७८ ई०

हिन्दी साहित्य में एम० ए० करते समय मुझे भक्तिकाल के रीतिबद्ध महाकवि केशवदास के साहित्य का अध्ययन करने का अवसर मिला था।

सन् १९६७ में नायब तहसीलदार के पद पर नियुक्त होने के बाद में हिन्दी साहित्य से अलग-अलग सा हो गया और केशवदास जी का साहित्य मेरे लिये विगत-स्मृति बनकर रह गया। शासकीय सेवा में होने वाले स्थानान्तरणों की निरन्तर चलती रहने वाली कड़ी में मुझे भी सन् १९७५ में निवाड़ी जाने का अवसर मिला। निवाड़ी तहसील में ही ओरछा ग्राम स्थित है। अवकाश के दिनों में एक दिन ओरछा भ्रमण का सुयोग भी प्राप्त हुआ। ओरछा की पुण्य भूमि पर पहुंचते ही विगत स्मृतियां ताजी हो गयी और ओरछा नगरी का गौरवशाली अतीत एक एक कर चलचित्र की भांति मेरे सामने आता गया। यहीं केशवदास की 'रामचन्द्रिका' के प्रेरणास्रोत साक्षात् रामराजा भगवान के दर्शन करने का पुण्य-लाभ भी मिला। 'रामराजा मन्दिर' 'चतुर्भुज मन्दिर' 'लक्ष्मी मन्दिर' 'जहाँगीर महल' 'केशव भवन' राय प्रवीन का भवन आदि स्थानों को देखकर मन अतीत में खो गया।

ओरछा आने वाले पर्यटकों को ओरछा के इतिहास एवं साहित्य की जानकारी देने के उद्देश्य से. रामराजा मन्दिर के कर्त्तव्य–निष्ठ कर्म–

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चारी श्री लक्ष्मणसिंह ने निजी प्रयास से कई पुस्तकों की रचना की है जिसमें ओरछा एवं बुन्देलखण्ड के गौरवपूर्ण अतीत को प्रकाशित किया गया है। पर्यटक इन पुस्तकों में इस ऐतिहासिक नगरी के महत्वपूर्ण स्थलों के छाया-चित्रों की कमी महसूस करते थे। लेखक के आग्रह पर मैंने इन सभी महत्वपूर्ण स्थलों के छाया-चित्र उतारने का संकल्प किया। इस कार्य में टीकमगढ़ जिलाध्यक्ष श्री डा० के० एम० भवरास्कर एवं निवाड़ी तहसील के अनुविभागीय अधिकारी श्री टी० पी० श्रीवास्तव से मुझे प्रेरण एवं प्रोत्साहन मिला है, जिसके लिये मैं उनका आभारी हूं।

प्रस्तुत पुस्तक में जो भी छाया-चित्र दिये गये, वे मेरा ही विनम्र प्रयास है। व्यवसायिक रूप से छायाकार न होने पर भी शौकिया तौर पर यदाकदा छायाकन का प्रयास करता रहता हूं। यह सब श्री रामराजा की कृपा का ही फल है जो सबके समक्ष है। इन छाया चित्रों से पर्यटक कहां तक संतुष्ट होते हैं, यह अलग बात है, फिर भी इन छाया चित्रों से इस ऐतिहासिक नगरी के पर्यटन की स्मृतियों को संजोकर रखने में कुछ न कुछ मदद अवश्य ही मिलेगी। यही मेरी उपलब्धि है। इस ऐतिहासिक स्थली के छायांकन के प्रयास में जो कमी रह गई हो, उसकी ओर इंगित करने पर उसे पूर्ण करने का भी प्रयास किया जाएगा, प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित छाया-चित्रों के सम्बन्ध में पर्यटकों के सुझावों से मुझे भविष्य के लिये प्रेरणा मिलेगी।

भवदीय—

डा० देवेन्द्र वर्मा

तहसील छिन्दवाड़ा

(म० प्र०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समर्पण

श्री रामराजा भगवान ओरछा की विशेष अनुकम्पा
एवं परमपूज्य पाद

श्री गुरू जी श्री श्री १०८ श्री रामभुवन दास जी स्वर्गीय महान्त
ओरछा मड़ोर बनारस के चरणप्रसाद से निमित्त मात्रदास
का लघु प्रयास गुरू जी के चरणों में सादर समर्पित
जिनकी सतत प्रेरणा का
फल यह
कृति

नौवां संस्करण

सन् १९८२ ई० (वि० सं० २०३८)

लेखक :

ठा० लछमनसिंह गौर

ओरछा

जिला–टीकमगढ़ (म० प्र०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा का इतिहास

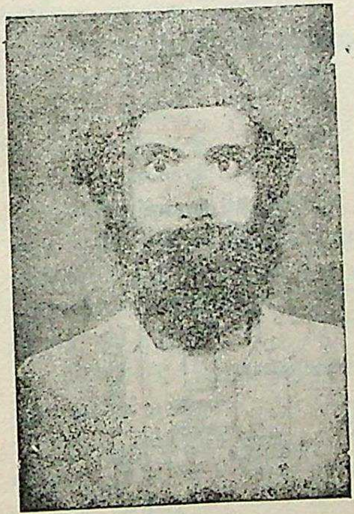

लेखक व प्रकाशक

ठाकुर लछमनसिंह गौर

ओरछा (टीकमगढ़) म० प्र०

नौवाँ संस्करण] सन् १९८२ [वि० सं० २०३८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा के दर्शनीय स्थल

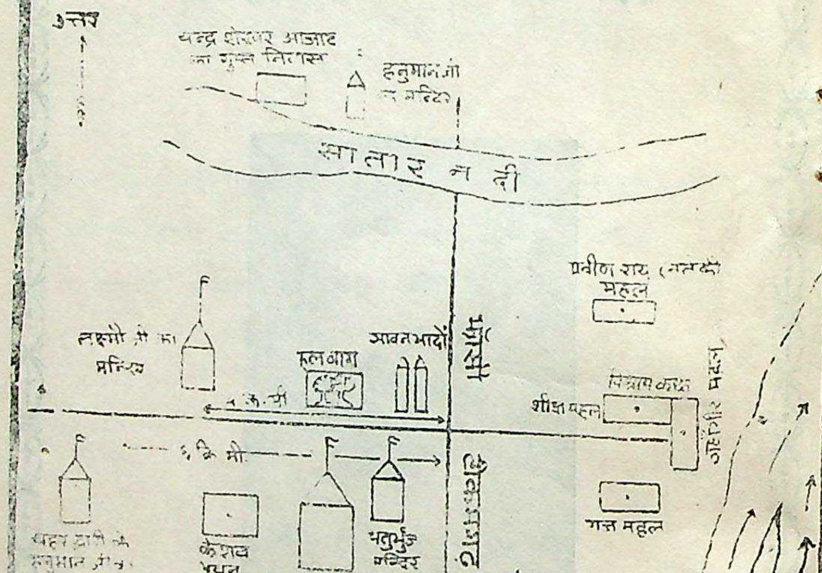

ठा लक्ष्मणसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१	भूमिका	१७
२	ओरछा राज्य बुन्देलखण्ड	१९
३	दिमान प्रताप सिह बड़ागाँव	२८
४	दिमान हरदौल का वंश वृक्ष	३१
५	प्रारम्भिक इतिहास	३२
६	महौनी जगम्मनपुर में बुन्देला महाराजाओं का राज्य शासन	३२
७	महाराजा मलखानसिंह के छः पुत्र	३४
८	ओरछा का इतिहास	३५
९	महाराजा भारतीचन्द्र	३६
१०	महाराजा मधुकरशाह	३७
११	श्री रामराजा भगवान का आगमन	३८
१२	अनन्य रसिकाचार्य श्री हरीराम व्यास	५४
१३	महाराजा रामशाह	५८
१४	बुन्देलखण्ड का स्वर्णयुग	५९
१५	इक्यासी मन सोना	७२
१६	इष्टपूर्ति यज्ञ एवं ५२ इमारतों का निर्माण	७३
१७	केशव देव का मन्दिर	७४
१८	वीरसिंह जू का अद्भुत न्याय	७७
१९	महाराजा जुझारसिंह	८३
२०	महाराजा देवीसिंह	८९
२१	महाराजा चम्पतराय	९०
२२	लोक साहित्य में कल्पित रानी सारन्धा	९८
२३	सुजान सिंह (प्रथम)	१०५
२४	ऐतिहासिक घटना	१०६
२५	महाराजा इन्द्रमणि	११३
२६	महाराजा उद्द्तसिंह	११४
२७	महाराजा पृथ्वीसिंह	११६
२८	महाराजा हेतसिंह	११७
२९	महाराजा विक्रमाजीत सिंह	११८
३०	महाराजा धर्मपाल सिंह	११९
३१	महाराजा सजानसिंह	१२०
३२	महाराजा हम्मीरसिंह	१२२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रमांक	विषय	पृष्ठांक
३३	श्री सवाई महेन्द्र महाराजा प्रतापसिंह जू देव	१२३
३४	पलेरा पर चढ़ाई	१२४
३५	श्री सवाई महेन्द्र महाराजा वीरसिंह जू देव	१२६
३६	खरगापुर चढ़ाई	१२७
३७	ओरछा राज्य से कृषकों की सुविधायें	१२९
३८	श्री सवाई महेन्द्र महाराजा देवेन्द्रसिंह जू देव	१३१
३९	वीरांगना महारानी विजयी कुँवरि	१४५
४०	चन्देरी बानपुर में बुन्देला राज्य की स्थापना	१४६
४१	चन्देरी सिंधिया की चपेट मे	१५१
४२	महाराजा मर्दनसिंह, बानपुर	१५३
४३	दतिया के बुन्देला नरेशों की परम्परा	१६४
४४	ओरछा के राजाओं का वंश वृक्ष	१८२
४५	पन्ना के राजाओं का वंश वृक्ष	१८३
४६	बुन्देलखण्ड के विभिन्न राज्य संस्थापकों की वंशावली	१८५
४७	दतिया राज्य संस्थापकों की वंशावली	१८६
४८	श्री दिमान हरदौल जू ओरछा वंश वृक्ष	१८८
४९	बिजना वंश वृक्ष	१८९
५०	टोड़ी फतेहपुर वंश वृक्ष	१९०
५१	जैतपुर के राजाओं का वंश वृक्ष	१९१
५२	शाहगढ़ के राजाओं का वंश वृक्ष	१९२
५३	चरखारी के राजाओं का वंश वृक्ष	१९३
५४	सरीला के राजाओं का वंश वृक्ष	१९४
५५	जिगनी के राजाओं का वंश वृक्ष	१९५
५६	चन्देरी के राजाओं का वंश वृक्ष	१९६
५७	खनियाधाना के राजाओं का वंश वृक्ष	१९७
५८	चिरगाँव के राजाओं का वंश वृक्ष	१९८
५९	क्षत्रियों का परिचय	१९९
६०	तेरह शाखा वाले क्षत्रियों का विवरण	२०६
६१	श्री रामचन्द्रिका तथा सस्कृत ग्रन्थ	२०८
६२	कविप्रिया तथा संस्कृत के आचार्य	२०८
६३	अलंकार	२१०
६४	ग्रन्थ रचना सम्पूर्ण व्याख्या	२१५
६५	इन्द्रजीत महाराजा ओरछा	२१६
६६	रायप्रवीन ओरछा की नर्तकी	२१७
६७	महाराजा ओरछा के राज्य शासन काल का परिचय	२२०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

ओरछा के दर्शनीय स्थलों का परिचय

१—जन-जन के आराध्य श्री रामराजा भगवान मन्दिर ओरछा।

२—श्री चतुर्भुज भगवान का विशाल मन्दिर ओरछा।

३—स्थापत्य कला का अद्‍भुत प्रतीक श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर ओरछा।

४—आचार्य कवीन्द्र केशव भवन ओरछा।

५—देवतुल्य श्री दिमान हरदौल लाला का स्मारक स्थल विषपान स्थान।

६—इतिहास प्रसिद्ध जहांगीर महल, शीश महल, राजमहल, ओरछा।

७—बगीचा फूलबाग व चन्दन कटोरा, फव्वारे, अठखम्भा, श्रीहरदौल जू का विश्राम-गृह स्थल, स्थित बगीचा फूलबाग ओरछा।

८—गगन चुम्बी स्तम्भ सावन भादों।

९—महर्षि तुङ्ग की तपो भूमि तुङ्गारण्य कञ्चना घाट।

१०—पुनीत सरिला वेत्रवती।

११—प्रसिद्ध कवियत्री रायप्रवीन का निवास-भवन आनन्द मन्डल इन्द्र भवन (किला ओरछा)

१२—राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी की भस्मी विसर्जन तट :—

१२ फरवरी सन् १९४८ ई० को वेतवा नदी के तट पर 'कंचना घाट' नामक स्थल पर पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की अस्थि विसर्जित हुई थी। इसी घाट को रानी कंचन कुंवर ने सं० १७०९ वि० में अपने नाम से बनवाया था। यहीं विभिन्न राजाओं की समाधियां स्थित हैं।

१३—श्री हरीराम व्यास की हवेली, श्री जुगलकिशोर मन्दिर व्यासपुरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४—छारद्वारी हनुमानजी, ओरछा से लगभग ३ किमी० पश्चिम में स्थित हैं। यहां पर श्री मारुत नन्दन की विशाल प्रतिमा एवं बावड़ी आदि दर्शनीय हैं।

१५—अमर शहीद श्री चन्द्रशेखर आजाद का अज्ञात वास स्थल सातार तट ओरछा।

श्री चन्द्रशेखर आजाद ने लाला लाजपतराय के हत्यारे कप्तान सैन्डर्स की हत्या कर दिनांक २६-९-१९२८ ई० को ओरछा के बीहड़ घनघोर जंगल में साधू वेषधारी तपस्वी ब्रह्मचारी रूप धारण किये श्री चन्द्रशेखर आजाद अज्ञात रहने लगे। सन् १९२९ ई० व सन् १९३० ई० अर्थात सम्बत १९८६ वि० व सम्वत १९८७ वि० में सातार नदी के किनारे अज्ञात निवास किया। जिस समय सन् १९३० में लार्डइरबिन पांच हजार सैनिक खुफिया पुलिस सहित आये उस समय चन्द्रशेखर आजाद ने सन् १९३० ई० में हजारों गोपनीय पुलिस रहते हुये भी अपने क्षेत्र सातार नदी के किनारे अपना कार्य किया। गुप्तरूप में अज्ञात निवास ओरछा में किया। अंग्रेज सार्जेंट से वह कम्पनी बाग इलाहाबाद अल्फ्रेड पार्क में अपनी अपूर्व वीरता प्रदर्शित कर दिनांक २७ फरवरी सन् १९३१ ई० को स्वर्गवासी (शहीद) हुये। २३ जुलाई १९०६ को ग्राम भावरा रियासत आलीराजपुर वर्तमान जिला झबुआ म० प्र० में पं० सीताराम तिवारी के यहां माता जगरानी की कोख से जन्म लिया था। दिनांक ७-८-७६ को अस्थि कलश ओरछा में आया था अपार जन समूह ने अस्थि कलश का स्वागत किया था।

सन् १९३० में सरदार श्री भगतसिंह ने असेम्बली हाल लाहौर में बम फेंका था सरदार भगतसिंह जैसे महान क्रान्तिकारी को गिरफ्तार कर दिनांक २३-३-३१ ई० के शाम ८ बजे लाहौर में फांसी दी गई थी। इसमें भगतसिंह के अतिरिक्त चन्द्रशेखर आजाद बी० के० दत्त बिस्मिल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा राज्य बुन्देलखण्ड के राज्यों का क्षेत्रफल आमदनी और उपाधियां अंग्रेजी राज्य तक की परिशिष्ट बुन्देला ठाकुर राज्य वंश उपाधियाँ

नाम राज्य	वर्ग मील	आदमनी	राज्यों की उपाधियाँ जो अंग्रेजों के समय में उपलब्ध थीं
ओरछा	२०७९	८० लाख	हिज हाईनेन्स सरमद-ए-राजा-ए-बुन्देलखण्ड महाराजा महेन्द्र सवाई सर बहादुर जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. एच. एच. श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर के.सी.एस.आई.
दतिया	९११	५६ लाख	हिज हाईनेन्स महाराजा लोकेन्द्र सर बहादुर के. सी. एम. आई.
समथर	१८०	१५ लाख	हिज हाईनेन्स महाराजा सर बहादुर के.सी.एस.आई. (गूजर)
जगम्मनपुर	२८ गाँव	८४ लाख	सेंगर क्षत्रिया राजा साहब
रामपुर	२८ गाँव	८० लाख	कछवाहे क्षत्रिय राजा साहब
पन्ना	२५९६	४० लाख	हिज हाईनेन्स महाराजा महेन्द्र सर बहादुर के. सी. आई. ई.
चरखारी	८८०	१० लाख	हिज हाईनेन्स महाराजा धिराज सियहदा-रूलमुल्क देवबहादुर
अजयगढ़	८०२	१० लाख	हिज हाईनेन्स महाराजा सवाई बहादुर
बिजावर	९७३	१० लाख	हिजहा[illegible]नेन्स महा[illegible] सवाई सर बहा[illegible] सी. [illegible] ई.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वावनी	१२१	६ लाख	हिज हाईनेन्स खान सफदर-जंग पठान
छतरपुर	११३०	४५ लाख	हिजहाईनेन्स महाराजा बहादुर पंवार ठाकुर
गोपालपुर	१८ गाँव	५४ लाख	राजा
भेड़	१८ गाँव	५४ लाख	कुर्मी भइया साहब राव साहब
सिकरी	१८ गाँव	५४ लाख	राजा
अलीपुरा	७३	२ लाख	राजा पड़िहार राजपूत
बाकापहाड़ी	५	१४ हजार	दीवान बुन्देला ठाकुर
बेरी	३२	७५ हजार	राव पंवार ठाकुर
बीहट	१६	६५ हजार	राव बुन्देला ठाकुर
बिजना	८	४७ हजार	दीवान बुन्देला ठाकुर
घुरवई	१५	३५ हजार	दीवान बुन्देला ठाकुर
गरौंली	३९	४० हजार	दीवान बहादुर बुन्देला ठाकुर
गौरिहार	७१	१॥ लाख	जागीरदार जुझौतिया ब्राह्मण
जिगनी	२०	४२ हजार	राव बुन्देला ठाकुर
लुगासी	४५	३० हजार	दीवान बुन्देला ठाकुर
नैगुवां	१२	९० हजार	जागीरदार दौआ अहीर
सरीला	३५	२ लाख	राजा बुन्देला ठाकुर
टोड़ी फतेहपुर	३६	१ लाख	राजाबहादुर दीवान बुन्देला ठाकुर

महाराजा देवतुल्य (दीवान) हरदौल जू ओरछा

महाराजा ओरछा वीरसिंह देव प्रथम के बारह पुत्र थे उनमें सबसे बड़े [illegible] जुझारसिंह थे जो वीरसिंह देव की मृत्यु वि० सं० १६८४ के बाद जुझारसिंह [illegible] के राजा हुये थे। इन्हीं के छोटे भ्राता दिमान हरदौल थे आपका जन्म वि० सं० १६६५ में हुआ था हरदौल ऐरछ व बड़ौनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

H H श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर वीरसिंहजू देव बहादुर द्वितीय
के० सी० एस० आई० ओरछा

ओरछा-नरेश (अन्तिम) फोटो : डा० देवेन्द्र शर्मा

(355)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

म[illegible]काि[illegible] का[illegible] क[illegible]ास

फोटो डा. देवेन्द्र वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

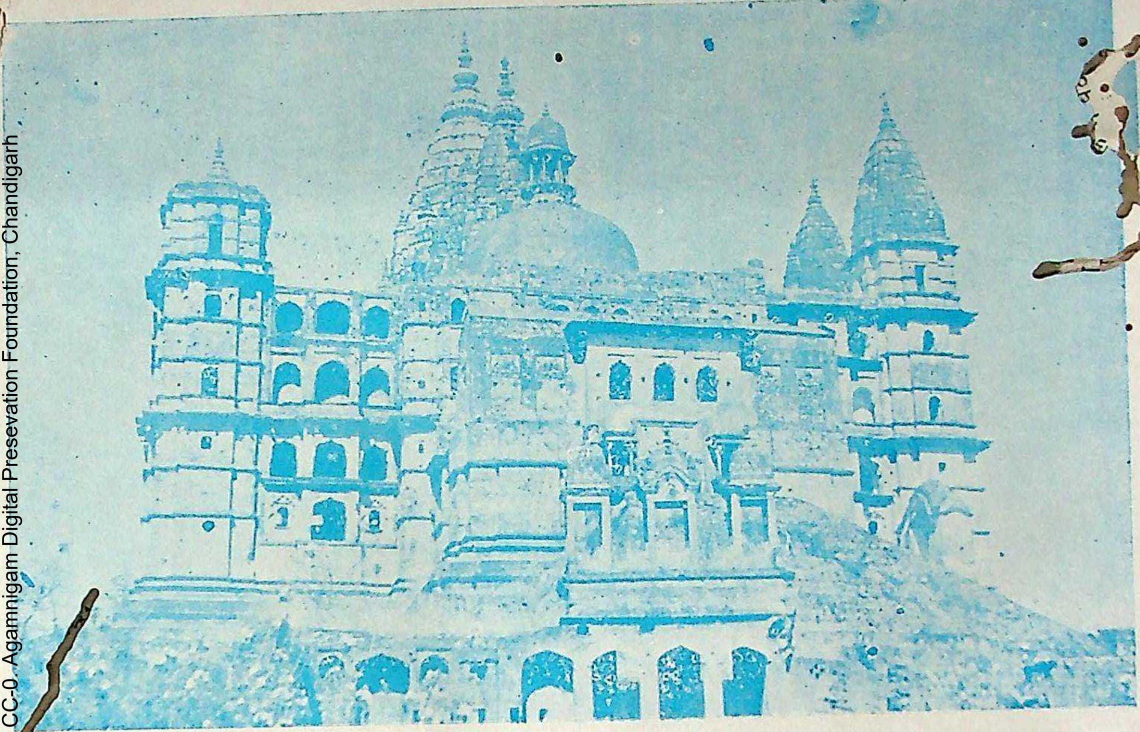

श्री चतुर्भुज जी मन्दिर ओरछा

फोटो : डा० देवेन्द्र वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

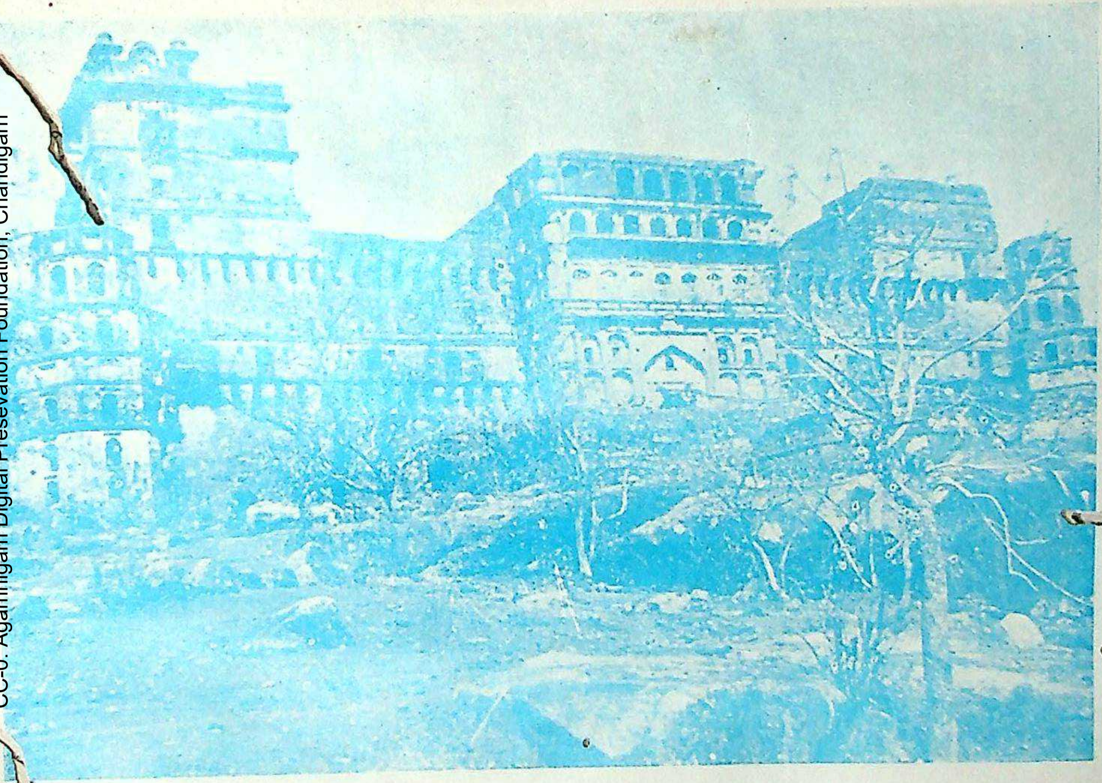

ढ़ कुड़ार का किला

फोटो डा० देवेन्द्र वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और बड़ा... के जागीरदार थे जिसकी आमदनी दस लाख रुपया थी। हरदौल बहुत वीर थे चम्पतराय की तरह हरदौल बुन्देलखण्ड को स्वतंत्र कराना चाहते थे इनके समय में मुगलों के आक्रमण हुआ करते थे परन्तु हरदौल ने मुगल सम्राट शाहजहाँ को बहुत ही परेशान कर दिया था।

दिमान हरदौल की शादी दुर्गापुर के जागीरदार लाखनसिंह प्रमार की लड़की हिमाचल कुंवरि के साथ वि० सं० १६८५ में हुई थी। इनके एक पुत्र पैदा हुआ था जिनका नाम विजयसिंह था, विजयसिंह का जन्म वि० सं० १६८७ में हुआ था। जिस समय हरदौदल का देहान्त हुआ उस समय उनके पुत्र की उमर चार माह की थी। इसके बाद विजयसिंह अपने चाचा अर्थात् हरदौल के बड़े भ्राता भगवानराय दतिया के महाराज के पास रहे थे। बाद में अपने पिता हरदौल की जागीर ऐरछ बड़ौनी बड़ागांव के जागीरदार हो गए विजयसिंह के पुत्र प्रतापसिंह हुए थे।

ओरछा राजवंश में भ्रात-भक्त श्री दिमान हरदौल जैसे महान पुरुष हुए है, जिन्होंने अपने वंश जनपद और स्त्री समाज की मर्यादा रखने के लिए अपने जीवन तक का उत्सर्ग कर दिया। यह एक ऐसा कलंक है जो भुलाया नहीं जा सकता, यद्यपि उनका बलिदान उनको अमरत्व प्रदान कर गया। केवल बुन्देलखण्ड में ही नहीं सुदूर उत्तर और दक्षिण भारत के गांव-गांव में उनकी पुण्य स्मृति में चबूतरे बने हुए हैं। प्रत्येक विवाह कार्य को सफल बनाने हेतु उनका आवाहन किया जाता है। देवता रूपी हरदौल सब प्रकार की मनोकामना सबकी पूरी करते हैं और सब प्रकार के संकट विघ्न बाधाएँ दूर हो जाती हैं भूत बाधाएँ दूर हो जाती हैं सन्तानहीन को पुत्र रतन प्राप्ति होती है।

"भौजी भोजन परसें, अंसुआ चौंमासे से बरसें"

आज भी बुन्देलखण्ड के ग्रामवासी गरीब किसान व्यस्त और श्रम साध्य जीवन की कुछ घड़ियों में उकास पाकर गांव की चौपाल में बैठकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने दुखों को गीतों के स्वरों में भुलाकर तन्मय हो जाते हैं। और बीच में जब उपरोक्त गीत छिड़ जाता है तो इसको गाते-गाते उनकी आंखें छल-छला उठती हैं और गला रुंध जाता है फिर वे गा नहीं पाते।

यह दिमान हरदौल वीरसिंह देव (प्रथम) के पुत्र और मधुकरशाह के पौत्र एवं जुझारसिंह के भ्राता थे।

दिमान हरदौल बड़े कुशाग्र बुद्धि थे, इस कारण सत्तरह वर्ष की अवस्था में शिक्षा और शिकार खेलने में दक्ष हो गए। राज्य का कार्य भार सम्भालने में निपुण तो थे ही, शस्त्र चलाने में भी वे पूर्ण कुशल थे। कुश्ती लड़ने में अद्वितीय पहिलवान थे।

दिमान हरदौल के सम्बन्ध में इस जनपद में एक घटना यह भी प्रचलित है कि फारस का एक तलवार वाज जिसका नाम महदी हुसैन था, ओरछा आया और उसने सातार सरिता के तट पर अपने तलवार चलाने के जौहर दिखाये, जिसमें ओरछा के कई तलवार चलाने वाले पराजित हुए। यह समाचार जब दीवान हरदौल को विदित हुआ तब वे अत्यन्त क्रोधित हो उससे मुकाबला करने को उद्यत हुए। वह प्राचीन तलवार, जो जुझारसिंह द्वारा रानी चम्पावती के पास सुरक्षित रखी गई थी, लेने गए। भाभी चम्पावती ने तलवार जो डिबिया में बन्द रहती थी दिमान हरदौल को दे दी।

सातार तट पर हरदौल और महदी हुसैन की दो घण्टा तलवार वाजी हुई, जिसमें महदी हुसैन पराजित हो गया, किन्तु हरदौल की जांघ में एक गहरा घाव हो गया जिसके कारण वे अपने महल में चले गए। रानी चम्पावती को जब लाला हरदौल के घायल होने का समाचार ज्ञात हुआ [illegible] उन्होंने महल में बुलाकर उनके उपचार का समुचित प्रबन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया जिससे वे शीघ्र स्वस्थ्य हो गए। तलवार और पटेबाजी की प्रथा आज भी बुन्देलखण्ड में प्रचलित है।

दिमान हरदौल को जिस प्रकार अस्त्र-शस्त्रों से प्रेम था ठीक उसी प्रकार प्रकृति से भी। इसी कारण वे राजमहल में न रहकर श्री रामराजा मन्दिर के समीप फूलबाग में निवास करने लगे थे। वे यहां की बारादरी में बैठ कर जनता की विन्तवांरी सुन उसका समाधान किया करते थे। जहां चन्दन कटोरा फूलबाग में है।

दिमान हरदौल के प्रति जनता की बढ़ती हुई अभिरुचि देख जुझार सिंह के मन में असन्तोष ही नहीं, प्रत्युत राज्यलिप्सा के कारण द्वेष रूपी "वासा" का पौधा पनपने लगा जो विनाश का द्योतक था।

वि० सं० १६८५ में बुन्देलखण्ड की सेना की एरच के समीप वेतवा के तीर पर शाहजहाँ की मालवा, कनौज और आगरा की फोजों से मुठ-भेड़ हुई। उसमें शाही सेना बुरी तरह पराजित हुई। फलस्वरूप चम्पत–राय और दिमान हरदौल, शाहजहां के हृदय में बबूल के कांटों की तरह चुभने लगे।

शाहजहाँ ने यह निश्चय किया कि इन दो बुन्देलों को परास्त किये बिना बुन्देलखण्ड को अपने आधीन रखना असम्भव हैं। इसी दृष्टि से उसने हिदायत खां को जो प्रसिद्ध षड़यन्त्रकारी था, बुन्देलखण्ड में फूट का विषम जाल बुनने को भेजा। लेकिन बुन्देलों के संगठन के आगे वह असफल रहा।

वीर चम्पतराय और दिमान हरदौल ने कालान्तर में धामौनी के गोड़ राजा को मिलाकर देवगढ़ पर धावा बोल दिया। दुराघर्ष संग्राम हुआ। विजय श्री ने बुन्देलों का ही वरण किया, जिससे देवगढ़ पर बुन्देलों का झण्डा फहराने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शाहजहां ने अपनी इस पराज्य से आग बबूला होकर औरंगज़ेब को यह फरमान भेजा कि अपने पराक्रम से चम्पतराय और हरदौल को गिरफ्तार करके दरबार में हाजिर करो, तो तुम्हें दक्खिन के सूबेदार पद से विभूषित किया जायेगा।

दिमान हरदौल को यह शाही फरमान ज्ञात हो गया और वे सजग हो ओरछा आकर सेना का संगठन करने लगे। चौरागढ़ की देखरेख और सुरक्षा का प्रबन्ध राजा जुझारसिह करते रहे।

हिदायत खां को जब यह विदित हुआ, तब उसको अपने कर्त्तव्य का पुनः ध्यान आया और वह उसे पूर्ण करने को आतुर हो उठा। उसने अपनी कपट रूपी तलवार को शीघ्र चापलूसी की मढ़शान पर विचार पूर्वक चढ़ाया और हरदौल को परास्त करने की दृष्टि से अपना कुटिल मन्त्र फूंकने जुझारसिंह के समीप चौरागढ़ पहुंचा।

जुझारसिंह उसकी वाक्पटुता पर पहले से मुग्ध था। सशय पाकर हिदायत खां ने कहा 'महाराज हरदौल का महारानी के पास महल में अकेला रहना जनता में भ्रम पैदा करता है।"

हिदायत खां के गूढ़ बचन सुनकर जुझारसिंह का हृदय ग्रीष्म ऋतु में बेतवा की तप्त रेत की भांति जलने लगा। उसमें झारें छूटने लगीं। 'रानी और हरदौल की संयमता पर जनता को भ्रम है, हिदायत खां ?' राजा ने भृकुटी और तेवरी चढ़ाते हुए बड़ी शंकित पर दबी वाणी से कहा। हिदायत खाँ ने अपना हार्दिक स्नेह भाव दिखा कपट की तेज तलवार चलाते हुए कहा 'हां' महाराज।'

जुझारसिंह को रानी के प्रति अविश्वास हो गया। वे हरदौल को द्वेष दृष्टि से देखने लगे। जब यह समाचार हरदौल के विरोधी सरदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतीतराय और पहाड़सिंह एवं रानी हीरा देवी को विदित हुआ तब वे भी अवसर पाकर जुझारसिंह के ओरछा लौटने पर मिले और बहुत सी मिथ्या बातें गढ़कर हरदौल के विरूद्ध राजनीतिक षड़यन्त्र रचने लगे।

जुझारसिंह महलों में गये। रानी चम्पावती राजा के आगमन की खुशी में बहुत विह्वल थी। भोजन करने को जुझारसिंह और हरदौल एक साथ बैठे। उस समय रानी चम्पावती प्रसन्नता से प्रेम में इतनी मग्न हो गई कि राजा जुझार को चांदी के थाल में भोजन परोसा और देवर हरदौल को सोने के थाल में भोजन परोसा। यह देखकर जुझारसिंह जल भुन गये और हिदायत खां, प्रतीतराय, पहाड़सिंह की बात सत्य मान ली। जुझारसिंह ने रानी पर लांछन लगाकर उसका तिरस्कार किया। रानी ने बहुत कुछ कहा पर राजा का सन्देह न मिटा। राजा ने हरदौल को विष देने का प्रस्ताव रानी के समक्ष रखा। रानी स्तम्भित रह गई। रानी ने हर प्रकार से राजा का सन्देह दूर करने का प्रयास किया पर सफल न हुई।

रानी धर्म संकट में पड़ गई। एक ओर निर्दोष देवर की हत्या करने का पाप था तो दूसरी ओर पतिता कहलाने का आरोप। नारी अपने चरित्र की रक्षा के लिए सब कुछ कर सकती है। दुश्चरित्रता का लाँछन हत्या से भी जघन्य है। वह विवश हो गई। भोजन का प्रबन्ध किया गया। हरदौल को आमन्त्रित किया गया। रानी ने अपने हाथों पकवान तैयार किए। वर्तमान श्री रामराजा मन्दिर के चौक में थाल परोसे वह हरदोल को पंखा झलने बैठी। बहुत रोकने पर भी रानी की आंखों से आंसू टपक रहे थे। हरदौल ने देखा और बोले—'भौजी, मुझे भोजन कराते समय तुम्हारी आंखों मे आंसू ? तुम्हें ऐसा क्या कष्ट है जो तुम इतनी दुखी हो ?'

रानी ने उत्तर दिया—'लाला, यह भोजन करना तो मैं चाहती पर लोग समझते कि मैं सचमुच पतिता हूं। अतः मृत्यु से भी अधिक कष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झेलने को तैयार होना पड़ा है।' रानी क्या कह रही थी, हरदौल की समझ में न आया। उन्होंने रानी की ओर प्रश्न पूर्ण दृष्टि से देखा और बोले, 'मैं तुम्हारा मतलब समझा नहीं। मृत्यु से बढ़ा कष्ट ?......मेरे रहते हुये।

रानी बोली, समझना ही चाहते हो तो समझ लो। कम से कम तुम्हें मैं धोखे में नहीं रखना चाहती। विश्वासघातनी तो न कहलाऊंगी। तुम मेरे कष्ट को नहीं मिटा सकते तुम्हारे सामने जो भोजन हैं यह विषाक्त है। महाराज सन्देह करते हैं कि तुम्हारे और मेरे बीच अनैतिक सम्बन्ध हैं। अपनी सच्चरित्रता सिद्ध करने के लिये उन्होंने शर्त रखी है कि अपने हाथ से मैं तुम्हें विष दूं। तुम चाहो तो थाल खिसका सकते हो। यह भोजन मैं कर लूंगी। इतना अवश्य है कि बलिदान देकर भी लांछन न मिटा पाऊंगी। मेरी लाज की रक्षा तुम्हारे हाथ है रखो चाहे डुबाओ।'

हरदौल को अपने कानों पर विश्वास न हो रहा था। जिस बड़े भाई को वह पिता तुल्य मानते, उसके हृदय में ऐसा सन्देह हरदौल अत्यन्त हर्षित हो भोजन करने लगे।

रानी की आंखों से आंसू झरे जा रहे थे। उसकी इच्छा हुई कि सामने का थाल हटा दें। तब तक हरदौल ग्रास पर ग्रास तेजी से निगल गये। और इस प्रकार वि० सं० १६८८ में २३ वर्ष उम्र में हरदौल स्वर्गवासी हुये।

लाला हरदौल की मृत्यु का समाचार ओरछा में फैल गया। उनके साथी ९०० बुन्देलों ने आत्म हत्या कर ली। झूठन सासले मेहतर ने खाकर प्राण त्याग दिये।

दिमान हरदौल की मृत्यु के पश्चात् एक विलक्षण घटना घटी। उनकी बहिन कुन्जावती बेरछा दतिया में रणजीतसिंह प्रमार को ब्याही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी उसकी पुत्री का विवाह था। विवाह के अवसर पर बहिन भाई से भात मांगने जाती है।

राजा जुझारसिंह को दोष लग चुका था। हरदौल की मृत्यु हो चुकी थी। इस विषम परिस्थिति में कुन्जावती ने भाई हरदौल की मकडारिया के पास स्पित समाधि पर जाकर भात माँगना उचित समझा और वे ओरछा जाकर हरदौल की समाधि के सम्मुख उपस्थित हो रुदन करती हुई भात माँगने लगी। समाधि से गम्भीर स्वरों में स्नेह-पूर्ण भावों से युक्त एक आवाज गूंजी। बहिन को पूर्ण विश्वास हो गया और वह जुहार कर अपने गृह वापिस लौट आई। उसी रात हरदौल ने अपने सचिव धर्मपालसिंह से कहा कि "खजाने से धन लेकर ब्याह की सामग्री दतिया भेजो।" धर्मपालसिंह ने हरदौल की आज्ञानुसार ब्याह सामग्री दतिया भेजी। दतिया में लाला तालाब पर अगवानी होकर दतिया राज-महल के पास कृपाराम गौर की हवेली में हरदौल ठहरे थे। कुन्जावती की पुत्री रतन कुमारी का विवाह श्री मानसिह आत्मज श्री प्रीतमसिंह खड़ऊवा के साथ सम्पन्न हुआ था। मण्डप के दिन भ्राता हरदौल ने अप्रत्यक्ष रूप से बहिन कुन्जावती को भात दिया। पंगति के समय भोजनार्थ समस्त बरात बैठी तो घी का एक पात्र और केवल हाथ ही बरातियों को दिखाई दिया। जब दूल्हा मानसिह के सामने घी का पात्र आया तो दूल्हा ने हाथ पकड़ लिया और कहा कि मामा जी दर्शन दीजिये। दूल्हा के आग्रह पर समस्त बरात को हरदौल ने दर्शन दिये तथा भागौनी बरुआ अमरपुर मट, बाजना (उ० प्र०) के ग्राम मानजी को दान में दिये।

दिमान हरदौल युद्धों में शौर्य दिखाने के कारण अमर नहीं हुये। अपनी भाभी की चरित्र रक्षा केलिये उन्होंने हंसते-हंसते विष पान किया था। भारत के इतिहास में विष पीने और पिलाये जाने की अनेक घटनायें हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिमान प्रतापसिंह बड़ागाँव के निम्न पुत्र हुए

१ राव जसकरन लडवारी के जागीरदार
२ भगवन्तसिंह दिगौड़ा के जागीरदार
३ रायसिंह अष्ठ गढ़ी जागीरदार
४ उद्दैतसिंह महाराजा ओरछा वि० सं० १७४१–१७९३ तक
५ पंचमसिंह टकरौली पठार बकोंरा भदरबार के जागीरदार
६ अचलसिंह लखैपुरा मौगना सिमरा मोहनगढ़ टेहरी जागीरदार

आठ भैया जागीर

दिमान रायसिंह—महाराजा वीरसिंह के पुत्र दिमान हरदौल के प्रपौत्र थे। दिमान हरदौल को महाराजा वीरसिंह देव ने बड़ागाँव जागीर में दिया था। बहुत दिनों तक यह जागीर इसी नाम से प्रसिद्ध रही। दिमान रायसिंह के आठ पुत्र थे। इन्होंने वि० सं० १८४७ में (सन् १७९० ई०) में जागीर के आठ भाग करके हर एक को एक एक भाग दे दिया था इससे यह जागीर आठ भैया जागीर से मशहूर है। इसमें दातपुरा करीं, पसराई, टारौली, चिरगांव, धुरवई-बिजना, टोरीफतेपुर बंका पहाड़ी आठ जागीर थी। पोलिटिकल एजेन्ट नौगांव छावनी ने अपनी वि० सं० १८७८ दिनांक १०/९ सन् १८२१ ई० की रिपोट में यह लिखा है कि दातपुरा करीं और पसराई की जागीरें लावारिस हो जाने से ओरछा रियासत में शामिल हो गई थी।

टारौली

दिमान रायसिंह के पुत्र दिमान लछमनसिंह को टारौली की जागीर वि० सं० १८४७ में मिली थी दिमान लछमनसिंह ने ग्राम बगौरा चरखारी से दिमान गम्भीरसिंह को गोद लेकर टारौली की जागीर दे दी थी। पचबारा, गैराहा, रजपुरा, बार, अमनपुरा, सनौरा, खानपुरा, ब्याटा आठ ग्राम तहसील मऊ जिला झाँसी के जागीर में मिले थे। सन् १८४२ ई० में बुन्देला विद्रोह के बाद सन् १८५७ ई० के स्वाधीनता आन्दोलन में दिमान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गम्भीरसिंह ग्राम पचवारा में कुंआ के पास जहां बीजक लिखा है, शहीद हुए थे। गम्भीरसिंह की मृत्यु के बाद दिमान ईश्वरीसिंह को जागीरदार बनाया गया था जो वार्षिक निर्धारित राजस्व बकाया का भुगतान नहीं करने से जागीरदार अधिकारच्युत करके दिमान ईश्वरी सिंह को वि० सं० १८६१ में पचबारा केवल जमीदारी हक प्रदान किया गया था पचवारा में पुरानी गढ़ी खंडहर रूप में स्थिति है। आपके पुत्र दिमान जंगजीत सिंह और आपके पुत्र दिमान बलवन्तसिंह पचबारा के जमीदार रहे आपके पुत्र दिमान भानुप्रतापसिंह और आपके पुत्र पुष्पेन्द्रसिंह और सुरेन्द्रसिंह हैं दिमान भानुप्रतापसिंह सन् १९२७ ई० से सन् १९३० तक चन्द्रशेखर आजाद की पार्टी में रहकर कई दफे जेल गये थे। आप स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे हैं सन् १९३० ई० से सन् १९४७ तक ओरछा राज्य में तहसीलदार पद पर कार्य करते रहे हैं आज कल ७७ साल की उमर में दतिया में सपरिवार निवास करते हैं।

चिरगाँव

राव बहादुर बखतसिंह ने एक इकरारनामा कम्पनी की सरकार को दिनांक २६–११–१८२१ ई० को इस शर्त का लिखा दिया था कि मैं और मेरे खानदान के लोग सदा सरकार अंग्रेज के शुभचिन्तक आज्ञाकारी बने रहेंगे इससे इनको दिनांक ११/४/सन् १८२३ ई० को १० (दस) ग्राम की सनद मिली थी। परन्तु इन्होंने सन् १८४१ ई० में अंग्रेज–सरकार से राजद्रोह किया इससे जागीर छीन ली गई थी बाद में परिवार को पेन्सन का हक प्रदान हुआ था। वर्तमान समय में पेन्सन समाप्त हो गई है।

टोरीफतेपुर

दिमान रायसिंह ने टोरीफतेपुर की जागीर दिमान हिन्दूसिंह को दी थी। आपके पुत्र दिमान मेदनीमल को जागीर मिली जो सन्तान हीन थे इससे इन्होंने बिजना की जागीर दिमान सुरजनसिंह के पुत्र हरप्रसाद को गोद लेकर जागीरदार बनाया आपको वि० सं० १८८० दिनांक ११/४/सन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८२३ ई० में १४ गांव की सनद मिली थी। वि० सं० १९१५ में स्वर्गवासी हुए। यह निसन्तान थे। इससे बिजना की जागीर से पृथ्वीसिंह को गोद लेकर राजा बनाया था। राव अर्जुनसिंह वि० सं० १९३७ से वि० सं० १९५४ तक जागीरदार रहे हैं वर्तमान समय में टोरी फतेपुर के राजा झाँसी में रहते हैं।

धुरबई

दिमान रार्यासह ने अपने पुत्र अमानसिंह (मानसिंह) को धुरबई की जागीर दी थी। आपके खेतसिंह, जयसिंह, जसवन्तसिंह तीन पुत्र थे। अंग्रेजी राज्य स्थापित होते समय दिमान बुधसिंह को वि० सं० १८८० दिनांक ११।४।१८२३ ई० में सनद आठ गांव की मिली थी यह जयसिंह के लड़के थे। बुधसिंह के लड़के नाहरसिंह जागीरदार हुए इनके पुत्र वि० सं० १९०८ में रनजोरसिंह जागीरदार हुये। आपके पुत्र हमीरसिंह जागीरदार हुये थे। वर्तमान में धुरबई वाले राजा से विख्यात हैं।

बिजना

दिमान रार्यासह ने बिजना की जागीर अपने पुत्र सामन्तसिंह को दी थी। आपके अजीतसिंह जगतराज और प्रानसिंह तीन पुत्र थे। अजीतसिंह के बाद दिमान सुरजनसिंह जागीरदार हुए आपके समय कम्पनी सरकार ने वि० सं० १८८० दिनांक ११।४।सन् १८२३ ई० में ६ गांव जागीर की सनद मिली थी आपके पुत्र वि० सं० १८९६ में जागीरदार दिमान खण्डेराव हुये थे। वि० सं० १९०७ में दिमान मुकुन्दसिंह जागीरदार हुए इनके मर्दनसिंह, रतनसिंह, हीरासिंह तीन पुत्र थे। हीरासिंह के पुत्र हिम्मतसिंह लछनसिंह हुए थे दिमान अजीतसिंह के पुत्र बखतसिंह चिरगांव धुरमन्द टोरीफतेहपुर गोद गए थे। कुंवर विजयबहादुर को प्रानसिंह ने गोद लिया। वर्तमान में बिजना वाले राजा नाम से विख्यात हैं।

बंका पहाड़ी

दिमान रार्यासह ने अपने पुत्र उम्मेदसिंह को बंका पहाड़ी की जागीर दी थी, आपके पुत्र दीवान बंका दुरगसिंह जागीरदार हुए आपके पुत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दीवान बंका छत्रपति और दीवान बहादुरसिंह दो पुत्र थे। दीवान बंका छत्रपति के शत्रुजीतसिंह, ईश्वरीसिंह दो लड़के थे। दीवान बंका ईश्वरीसिंह को वि० सं० १८८० दिनांक ११/४/सन् १८२३ ई० में पांच ५ गाँव की सनद अंग्रेज सरकार से मिली थी। आपके पुत्र दीवान बंका विजय बहादुर, परतापसिंह, पर्वतसिंह तीन पुत्र थे। वि० सं० १९०७ में दीवान बंका विजय बहादुर सिंह जागीरदार हुए वि० सं० १९२८ में आपके पुत्र दीवान बंका प्यारेजू जागीरदार हुए वि० सं० १९४७ में दीवान बंका महरबानसिंह को जागीर मिली थी वर्तमान समय में बंका पहाड़ी के राजा कहलाते हैं।

दिमान हरदौल का वंश वृक्ष

हरदौल (वीरसिंह के पुत्र)

बेजनीशाह (विजयसिंह) बड़ागाँव

|

प्रतापसिंह

१	२	३		४	५	६
राव जसकरन लड़वारी	दिमान भगवन्तसिंह दिगौड़ा	उद्दैतसिंह	महाराजा ओरछा	रायसिंह अष्ठगढ़ी	दिमान पंचमसिंह टकरौली	अचलसिंह लखैपुरा मौगना

अमरसिंह (खनियाधाना)

अष्ठ भैया जागीर

अ	ष्ठ	भैं	या	जा	गी	र	
फतेह सिंह	उमेद सिंह	मान सिंह	भुजवल सिंह	हिन्दूपत	सावंत सिंह	लछमन सिंह	माहकम सिंह
दातपुरा	बंकापहाड़ी	धुरबई	पसरारी	टोड़ीफतेहपुर	बिजना	टहरौली	चिरगाँव
१	२	३	४	५	६	७	८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रारम्भिक इतिहास

भारतवर्ष के मध्य भाग में नर्वदा के उत्तर और जमुना के दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत की शाखाओं से समाकीर्ण और जमुना की सहायक नदियों के जल से सिंचित सृष्टि-सौन्दर्य कृत जो प्रदेश है उसे बुन्देलखण्ड कहते हैं। समय समय पर इसके नाम दक्षिण-वज्र वेजाकमुक्ति जुझौती जुझारखण्ड तथा विध्यल खण्ड भी रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि विध्याटवी में स्थिति होने के कारण इस प्रदेश का नाम विध्यलखण्ड पड़ा, बाद में अपभ्रष्ट हो यह बुन्देलखण्ड कहलाया। इस भूभाग के उत्तर में यमुना का प्रचण्ड प्रवाह पश्चिम में मन्द मन्द बहने वाली चम्बल और सिन्ध नदियां दक्षिण में नर्वदा नदी और पूर्व में बघेलखण्ड है। इस प्रदेश का उत्तर भाग जिसमें आज कल झाँसी, जालौन, ललितपुर, बाँदा और हमीरपुर जिले हैं। मध्य भाग में ओरछा समथर और दतिया के राज्य तथा चरखारी छतरपुर पन्ना बिजावर अजयगढ़ इत्यादि राज्य हैं। दक्षिण भाग में सागर दमोह और जबलपुर जिले हैं। इस प्रान्त में बहने वाली नदियां बेतवा, धसान, सुनार, कैन, टोस (तमसा नदी) है। जिस प्रदेश का इतिहास लिखा जा रहा है उसे आज कल बुन्देलखण्ड कहते हैं। इसका बुन्देलखण्ड नाम पड़ने का यही कारण है कि यहां पर सं० ११०५ वि० से बुन्देला ठाकुरों का राज्य रहा है।

प्राचीन गहिरवार राज्यवंश से बुन्देलों की उत्पत्ति हुई है।

सं० ७३१ वि० से सं० ११०५ वि० तक बुन्देलों की राजधानी काशी बनारस में थी उस समय इनको गहिरवार क्षत्री कहते थे काशी बनारसी में निम्न २० महाराजों ने राज्य शासन किया :—कर्तृराज=महिराज—मूर्धराज=उदयराज-गरुड़सेन-समरसेन—आनन्दसेन, करनसेन—कुमारसेन मोहनसेन—राजसेन-काशीराम॰श्यामदेव-पहलाददेव=हमीरदेव=आस—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करन–अभयकरन-जैतकरन-मोहनपाल–करनपाल हुए। महाराजा करनपाल के तीन पुत्र हुये:–हेमकरण=अरिब्रह्म=अरिमर्दन हुये। वीर हेमकरण को राजा करनपाल ने काशी (बनारस) का राज्य दे-शेष को जागीरदार बनाया पिता की मृत्यु के उपरान्त अतिब्रह्म ने हेमकरण का राज्य छीन लिया। इससे हेमकरण बनारस से विन्ध्याचल पर्वत पर जगदम्बा विन्ध्य-वासिनी की तपस्या करने लगा। जगदम्बा ने प्रसन्न होकर हेमकरण को सं० ११०५ वि० बैशाख सुदी १४ ता० २९/४/१०४८ ई० वरदान दिया कि बुन्देलखण्ड राज्य विन्धेलमूल के संस्थापक हो जाओ आपकी विजय होगी जगदम्बा का वरदान पाकर हेमकरण तमाम सेना इकट्ठी करने में लग गया और अपने पराक्रम द्वारा राज्य स्थापित करने का अच्छा मौका मिल गया मुसलमानों का राज्य उस समय पक्की तौर से नहीं था थोड़े दिन इनका राज्य भी रहा तो बुन्देले इनकी ओर से सूबेदार रहे और वह भी हेमकरण के साथी बन गये और स्वतन्त्र राज्य स्थापित वि० सं० ११०५ से हो गया बुन्देलखण्ड के महाराजा हेमकर्ण ने अपनी राजधानी महौनी जगम्मनपुर में स्थापित करके राज्य करने लगे और १६ साल राज्य करके वि० सं० ११२८ में परलोक सिधारे।

महौनी जगम्मनपुर में बुन्देला महाराजाओं का राज्य शासन काल

१ हेमकरण वि० सं० ११०५ से वि० सं० ११२८ तक
२ वीरभद्र वि० सं० ११२८ से वि० सं० ११४४ तक
३ करनपाल वि० सं० ११४४ से वि० सं० ११६९ तक
४ किन्नरशाह वि० सं० ११६९ से वि० सं० ११८७ तक
५ शौकनदेव वि० सं० ११८७ से वि० सं० १२०९ तक
६ नानकदेव वि० सं० १२०९ से वि० सं० १२१६ तक
७ मोहनपाल वि० सं० १२१६ से वि० सं० १२५४ तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८ अभयभूपति वि० सं० १२५४ से वि० सं० १२७२ तक
९ अर्जुनपाल वि० सं० १२७२ से वि० सं० १२८८ तक
१० वीरपाल वि० सं० १२८८ से वि० सं० १३०८ तक

गढ़कुड़ार में बुन्देला महाराजाओं का राज्य शासनकाल (कुड़ार राजधानी)

११ सोहनपाल वि० सं० १३०८ से वि० सं० १३१६ तक
१२ सहजेन्द्र वि० सं० १३१६ से वि० सं० १३४० तक
१३ नौनकदेव वि० सं० १३४० से वि० सं० १३६४ तक
१४ पृथ्वीराज वि० सं० १३६४ से वि० सं० १३९६ तक
१५ रामसिंह वि० सं० १३९६ से वि० सं० १४३२ तक
१६ रामचन्द्र वि० सं० १४३२ से वि० सं० १४५१ तक
१७ मेदनीपाल वि० सं० १४५१ से वि० सं० १४९४ तक
१८ अर्जुनदेव वि० सं० १४९४ से वि० सं० १५९५ तक
१९ मलखानसिंह वि० सं० १५२५ से वि० सं० १५५८ तक
२० रुद्रप्रताप वि० सं० १५५८ से वि० सं० १५८८ तक

महाराजा मलखानसिंह के छै पुत्र थे जिनमें रुद्रप्रताप ने सं० १५८८ से ओरछा राजधानी हुई ।

१ रुद्रप्रताप गढ़ कुड़ार के राजा रहे ।
२ खंगसिंह बरेठी के जागीरदार रहे ।
३ जगजीतसिंह रावली का जागीर मिली ।
४ जैतसिंह को तलहेटा की जागीर दी ।
५ शाह दीवन को असाटी में जागीर दी ।
६ देवीसिंह को निवाड़ी में जागीर दी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा का इतिहास

महाराजा रुद्रप्रताप (वि. सं. १५८८), (सन् १५३१ ई०)
(जन्म वि० सं० १५०१, मृत्यु वि० सं० १५८८)

बुन्देला शासक रुद्रप्रताप ने गढ़ कुड़ार के स्थान पर ओरछा को राजधानी बनाने का निश्चय किया।

ओरछा गजेटियर पृष्ठ क्र० १७, १८, २९ पर सरजार्ज ए० प्रियर्सन "दी मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ इण्डिया" में ओरछा का इतिहास लिखा है कि बैशाख शुक्ल १३ सं० १५८८ वि० अर्थात मई सन् १५३१ ई० को महाराजा रुद्रप्रताप ने ओरछा के किले का निर्माण प्रारम्भ किया। ज्यों-ज्यों निर्माण कार्य आगे बड़ा नगर का विस्तार भी बड़ने लगा और नगर १२ कोस के क्षेत्रफल में बस गया। नगर की सुरक्षा के लिए ७ कोट बनवाये गए थे, उनमें से तीन चार कोट अब भी विद्यमान हैं।

रुद्रप्रताप की दो रानियां थीं। प्रथम गंगादास प्रमार करैरा के परिवार की और द्वितीय दीवान मानसिंह घंघेरे सिहौरा के परिवार की। रुद्रप्रताप के ९ पुत्र थे। जिनका विवरण निम्न है :—

१ श्री भारतीचन्द्र ओरछा ने २३ वर्ष राज्य किया।
२ श्री मधुकरशाह ने ओरछा में ३८ वर्ष राज्य किया।
३ श्री उदयादित्य नुना—महेबा के जागीरदार। इन्हीं के वंश में महाराज छत्रसाल पैदा हुए। पन्ना राज्य स्थापित किया।
४ श्री अमानदास पँड़रा के जागीरदार।
५ श्री प्रानदास हरसपुर ललितपुर के जागीरदार।
६ श्री दुर्गादास (दुर्गापुर) दतिया में जागीर दी।
७ श्री चन्दनदास कटेरा के जागीरदार बने।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८ श्री घनश्यामदास मेगुवां में जागीर दी ।
९ श्री भूपतशाह चरखारी में जागीर मिली थी ।

दतिया स्टेट गजेटियर पृष्ठ नं० ९७ पर लिखा है कि ओरछा अधीनस्थ दतिया स्टेट थी, पन्ना स्टेट गजेटियर पृष्ठ नं० १८४ पर ओरछा का गौरव लिखा है तथा ओरछा राज्य के अधीनस्थ दतिया, महोबा, पन्ना अजयगढ़ बांधवगढ़ आदि आज्य थे ।

तुंगारण्य वन में जाते समय महाराज रुद्रप्रताप ने वन से गाय के कराहने की आवाज सुनकर भक्ति से प्रेरित होके गाय को बचाने दौड़ पड़े और शेर से आहत होकर सं १५८८ वि० में स्वर्ग सिधारे ।

(२) महाराजा-भारती चन्द्र राज्य (वि० सं० १५८८ से १६११ तक सन् १५३१ ई० सन् १५५४ ई० तक) जन्म वि० सं० १५२० मृत्यु वि० सं० १६११

रुद्रपताप की मृत्यु के पश्चात उनके ज्येष्ठ पुत्र भारतीचन्द्र सं० १५८८ वि० में ओरछा के सिहासन पर आसीन हुये । इन्होंने अन्तिम रूप से पूर्णतः राजधानी गढ़कुण्ढार से ओरछा स्थानांतरित कर दी । राजधानी बन जाने से ओरछा का शान्त वातावरण वैभव में परिर्वातित होने लगा था । उस समय श्री हरीराम व्यास ओरछा में साधु प्रकृति के महात्मा थे । व्यास जी का समय भगवान भक्ति और उपासना में जाता था । राजा भारतीचन्द्र ने राजमद में लीन होकर श्री हरीराम व्यास को बुलाकर उनका अनादर किया । जिससे व्यास जी ने राजा को पुत्रहीन होने का शाप दिया । फलतः राजा के कोई पुत्र न था । (लेख व्यासवाणी नं० २९०) सं० १५९६ वि० में ओरछा का किला बनकर तैयार हुआ ।

महाराजा भारतीचन्द्र का शुभ विवाह रूपकुंवरि प्रमार बम्हौरी तथा अमृत कुवरि प्रमार उदगुवां के साथ सम्पन्न हुआ थ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री किशोरी जी विजयते

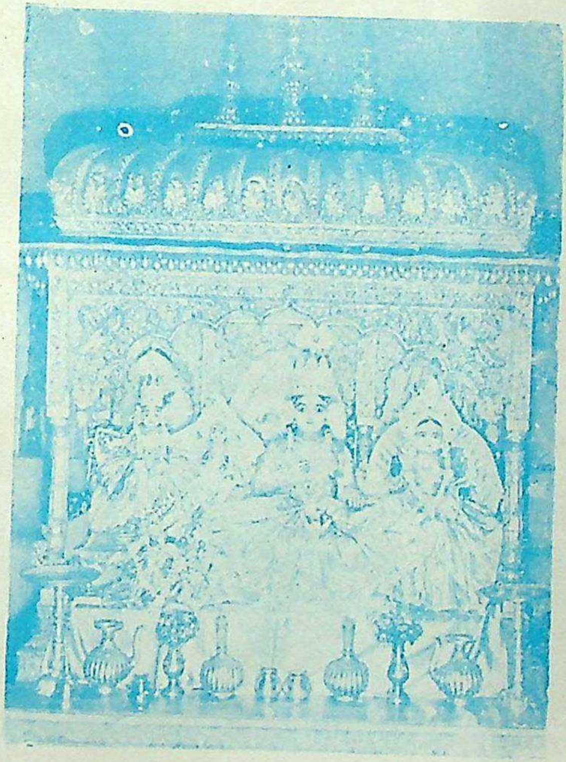

श्री कनक भवन दरबार अयोध्याधाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर में लेखक व छायाकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेरशाह सूरी इनके समय में बुन्देलखण्ड पर वि० सं १६०२ में आक्रमण करने आया। परन्तु भारतीचन्द्र और मधुकरशाह ने अपने पराक्रम से उसे स्लामाबाद नामक स्थान पर परास्त किया और इस विजय के उपलक्ष्य में स्लामाबाद का नाम बदलकर 'जयतारा' (जतारा) रखा। किला जतारा का बनवाया था। ओरछा का यह यौवन काल था। सं० १६११ वि० (सन् १५५४ ई०) में भारतीचन्द्र की मृत्यु हो गई।

(३) महाराजा मधुकरशाह (वि. सं. १६११ से १६४९) (सन् १५५४ ई० से १५९२ ई० तक)

भारतीचन्द्र की मृत्यु के बाद सं० १६११ वि० (सन् १५५४ ई०) में उनके छोटे भाई मधुकरशाह ओरछा के सिंहासन पर आसीन हुए। आपका जन्म वि० सं० १५२४ में हुआ था।

मधुकरशाह को मुगल सेना का कई बार सामना करना पड़ा। अपनी वीरता से अकबर के कई किले विजित किये। मुरादशाह नामक मुगल वीर को पराजित कर अपने पराक्रम से बुन्देलखण्ड के राज्य का बहुत दूर तक विस्तार किया था। इन्होंने 'मधुपुरी' का बसाया था जो वर्तमान में 'मऊरानीपुर' कहलाता है।

ओरछा के इस यौवनकाल के दो शब्द मधुकरशाह और टीकमशाह इतिहास जगत के जाज्वलमान नक्षत्रों की भांति हैं। बुन्देलखण्ड में 'मधुकर शाही' तिलक बहुत प्रसिद्ध है। ओरछा की एक भित्ति चित्र पर देखा है। जिसमें एक बादशाह तख्त पर बैठा है। एक राजपूत तलवार लिये तनकर खड़ा है। उसके इर्द-गिर्द कुत्ते जीभें निकाले खड़े हैं। यह चित्र आज भी ओरछा के राज प्रासाद की एक भित्ति पर धुंधली अवस्था में अविशिष्ट है महाराजा मधुकरशाह बादशाह अकबर के दरबारी थे और वे भारतीय संस्कृति के सच्चे भक्त थे। मुगल बादशाह अकबर तिलक से चिढ़ गया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और उसने आज्ञा दी कि दरबार में कोई भी तिलक लगाकर नहीं आयेगा। दूसरे दिन सब ठाकुरों के तिलक भाल से उड़ गये परन्तु मधुकरशाह तो उस दिन नाक से लेकर टीका लगाकर पहुंचे। बादशाह बड़ा कुढ़ा और उनके तिलक का भाल से पुछवाने के लिये कुत्ते बुलवाये। राजा ने यह देखकर म्यांन से तलवार निकाल ली और तनकर खड़े हो गये। इस पर अकबर झुक गया। मधुकरशाह का अपूर्व साहस देखकर उल्टा सराहने लगा। आज भी बुन्देले लोग नाक के अग्र भाग से टीका धारण करते हैं। जो तिलक नाक के अग्र भाग से लगाये जाते हैं उनको 'मधुकरशाही' तिलक कहा जाता है। धन्य है वह मधुकरशाह और ओरछा जिसका टीका अमर हो गया और तभी से उसे टीकमशाह की उपाधि मिली है।

भक्त शिरोमणि महारानी श्री गणेश कुंवरि (कमला देवी) ओरछा की रानी

श्री रामराजा भगवान का आगमन

परम भक्त महाराजा मधुकरशाह की महारानी गणेशकुंवरि देवी (कमला) भक्ति मय गाथा प्राचीन ग्रन्थ भक्त माल में विस्तार से वर्णन की गई है। महारानी परमभक्ति की मूर्ति थी। बड़ी उदार दानी थीं। बचपन से ही श्री काशी विश्वनाथ के वरदान से श्री रामराजा भगवान की परम उपासक थीं।

महारानी गणेश कुंवरि का जन्म वि० सं० १५६९ में करइया (डबरा) में अनुरुद्धसिंह जू प्रभार के यहां हुआ वा आपके पिता बड़े ही धर्म निष्ठ और वीर पुरुष थे। इनके पूज्य पिता जितने गुणवान थे उनसे कई गुणा अधिक भक्त उनकी माता जी श्री विजयकुंवरि थी। माता की शिक्षा से श्री काशी विश्वनाथ की उपासना करके वि० सं० १५७९ में वरदान प्राप्त किया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वि० सं० १५९६ में अगहन शुक्ल ५ गुरुवार को गनेश कुंवरि (कमला) का शुभ विवाह मधुकरशाह के साथ हुआ था।

वि० सं० १६३० की बात है कि महाराजा मधुकरशाह अपने राज महल में बैठे महारानी गणेश कुंवरि (कमला) से भक्ति पक्ष सम्बन्धी विवाद चल रहा था। महाराजा श्री कृष्ण भगवान की उपासना श्रेष्ठ मानते थे। और महारानी श्री रामराजा की उपासना सर्वश्रेष्ठ मानती थी। रात भर विवाद हुआ।

महाराजा ने कहा 'अबकी जब तुम मेरे साथ बृज चलोगी तो वहां की शोभा देखकर कहोगी कि यह बृज पृथ्वी का स्वर्ग है। यमुना के समान कोई प्रेम मयी नदी ही नहीं है। वह कृष्ण प्रेम से ही श्यामा बन गई है। जिस प्रकार शिवजी के स्पर्श से गंगा जी का जल श्वेत है। इसी तरह कृष्ण जी के स्पर्श से यमुना जी श्यामली हैं।

प्रेम की ऐसी ही महिमा है महाराज। इसमें प्रेमी और प्रियतम मिलकर एक जैसे हो जाते हैं महारानी ने कहा।

महाराजा ने कहा 'अबकी बार आप भी वृन्द्रावन साथ अवश्य चलना।

नहीं महाराज। महारानी ने कहा।

अच्छा यह बताओ कि तुम क्यों नहीं चलना चाहतीं। महाराजा ने कहा।

आप कृष्ण जी के उपासक हैं आप ही जावें। महारानी ने कहा।

तो तुम किसकी उपासिका हो। महाराज ने पूछा।

मेरे उपास्य देव तो अयोध्यापुरी में हैं। मैं वहीं जाऊंगी महारानी ने कहा।

अच्छा तो यह बात है। आज तुम्हारा भेद खुला है। ये तो हम कहीं और तुम कहीं का मामल है। इतना गूढ़ प्रेम है कि नाम भी नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेती। सच कहो इसका क्या रहस्य है महाराजा ने आश्चर्य चकित होकर पूछा।

सच ही कहा है महाराज। मानसी ध्यान में नाम लेने की आवश्यकता नहीं होती। महारानी ने कहा।

लेकिन मैंने तुम्हें कभी पूजा पाठ करते हुए तो नहीं देखा। महाराजा ने कहा।

पूजा पाठ और भजन तो दिल की चीज है महाराजा आडम्बर या दिखावे में क्या रक्खा है। महारानी ने कहा।

आपके उपास्य तो केवल पुरुषोत्तम थे महारानी ! वही उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष सर्वनाम। जानती हो न। अच्छा हँसी न करो सच सच कहो वृज चलोगी ना। महाराजा ने पूछा।

सच कहती हूं महाराज मैं वृज नहीं जाऊँगी। महारानी ने गम्भीरता से कहा।

महाराज बोले ! तब तो समस्या बड़ी कठिन है। अच्छा–तुम्हारे राम जी कौन थे, केवल मर्यादा बनाने वाले, कानून रचना करने वाले। उनके चरित्र तो प्राकृत मनुष्य जैसे हैं। रहस्य नहीं। ये तुमने भारी धोखा खाया है महारानी।

आपकी इन बातों में कोई सार नहीं महाराज और न इन बातों का कोई फल ही होगा। महारानी ने कहा।

महाराजा के मुख पर कुछ क्रोध के लक्षण होने लगे उन्होंने महारानी से कहा ! तब तो हमारी तुम्हारी नहीं बनेगी। मेरी उपासना दूसरी और तुम्हारी उपासना दूसरी है। मैं तुमसे फिर कहता हूं महारानी। राम की उपासना छोड़ दो और हमारे साथ वृन्दावन चलो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षमा करें महाराज। ऐसा कभी नहीं हो सकता ! महारानी ने उसी गम्भीरता से कहा।

यहाँ तक ! ठीक है ! जाओ अवश्य ही जाओ। लेकिन अपने इष्टदेव राम को साथ लेकर ही आना समझीं ! यहां अकेली मत आना। महाराजा ने क्रोधित होकर कहा।

जैसी आपकी आज्ञा। महारानी ने कहा।

श्री गुरू जी महाराज व्यास जी से महाराजा ने कहा कि महारानी अयोध्या जी जा रही हैं मेरी इच्छा है कि वह हमारे साथ वृन्दावन तीर्थ करने चलें तो अच्छा है लेकिन वह मानती ही नहीं हैं अपनी ही हठ ठानती हैं। मैंने बहुत ही समझाया है क्या करूं।

व्यास जी बोले ! ठीक ही तो कहा आपने। अभी वृन्दावन जाती और अगले साल तुम्हारे साथ अयोध्या जाती। तीर्थों में पति पत्नी का साथ साथ जाना और स्नान दान करना ही वेदों में श्रेष्ठ बतलाया गया है।

महाराजा ने कहा ! लेकिन वह तो कहती हैं कि कृष्ण भगवान ईश्वर के अवतार नहीं थे। वे अहीर थे घर घर चोरी करना ही उनका पेशा था। महाभारत में महाराज युधिष्ठिर से झूंठ बुलवाया, कर्ण द्रोणाचार्य आदि को धोखे से मरवाया। क्या ईश्वर के ऐसे ही अनैतिक कार्य होते हैं।

व्यास जी ने कहा ! महारानी को ऐसा नहीं कहना चाहिये ऐसा भी कोई कहता है। हे भगवान, हे वासुदेव, हे राधारमण कहां हो तुम कह कर नेत्र बन्द कर लिये।

कृष्ण का अवतार सोलह कला से हुआ था या नहीं और रामावतार बारह कला से हुआ था या नहीं। अब आप ही बताओ सोलह अवतार अधिक होते हैं या बारह कला अवतार ? महाराजा ने कहा !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यास जी मन ही मन सोचने लगे कि महाराजा ईश्वर में भी भेद-भाव मानते हैं। राम और कृष्ण, विष्णु और शिव क्या ये सब एक नहीं अनेक हैं ? उस अनन्त नाम गुण वाले के लिए मोह से वसीभूत मनुष्य इसी भांति लड़ा करते हैं। लेकिन राजहट को ध्यान में रखते हुये प्रकट में महाराजा से बोले—अहा कृष्ण के बराबर राम कभी हुए हैं ऊनकी बराबरी कौन कर सकता है। हे! कंस निकन्दन, हे गिरवर धारी तुम समान कोई नहीं। नाम लेते ही हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। नाचने को जी चाहता है। हे! श्यामा श्याम मुझे भी अपनी रहस्य लीला में सम्मिलित कर लो प्रभु।

महाराजा बोले! एक बार आप भी महारानी को समझा देखो। वह तो आपको बहुत मानती हैं। जो भी हो मुझे बतलाना और मेरे प्रस्थान के लिए एक रथ, आठ घुड़सवार और एक बैलगाड़ी भोजन सामग्री का प्रबन्ध कर देना बैलगाड़ी और चार सवारों को आज ही रवाना कर देना।

अवश्य ही महारानी को समझाने का प्रयास करूँगा और आपके प्रस्थान का भी प्रबन्ध हो जायेगा।

• •

सायंकाल राजमहल के आंगन में महारानी गणेश कुंवारी उदास मुद्रा में बैठीं हैं। उनकी सखी सजनी पास ही बैठी हुई पंखा झल रही हैं। व्यास जी खांसते हुए आते हैं। सजनी दौड़कर उनके लिए आसन लाती है। व्यास जी उस पर बैठ जाते हैं। महारानी उनके चरण छूती हैं और व्यास जी आशीर्वाद देते हैं तभी सजनी उन्हें पान लाकर देतीं हैं।

व्यास जी अब मैं आपके दर्शन न कर सकूंगीं। मैं सदा के लिए जा रही हूं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यास जी बोले ! नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं कहते। पति से रूठना अच्छा नहीं होता। स्त्री के लिए तो पति ही देवता है। वही स्वर्ग है वही परम गति है और तुम्हारे हाथ में तो सदा रामायण रहती है- भगवती सीता जी का आचरण देखो।

मैंने बुरा नहीं माना। उन्होंने ही त्याग किया है। महारानी बोली।

व्यास जी बोले ! ऐसा कभी नहीं हो सचता है। राज्य लक्ष्मी का त्याग बिलकुल असम्भव। एक ही फटकार में महाराजा को ज्ञानोदय हो जायेगा। तुम आधे राज्य की मालिक हो।

...वाह ! कोई हँसी खेल है क्या।

महारानी बोली ! मुझसे कहने लगे वृन्दावन चलो। मेरी उपासना श्रृङ्गार रसकी नहीं है। मर्यादाशील उपासक के लिए बृज में क्या है। इसी कारण मैंने इन्कार की थी और अवध जाने को कहा था।

व्यास जी बोले ! इसमें कौन सी बात गलत थी ? कोई भी नहीं। गम्भीर मनुष्य कों तो इस बात से आत्मानन्द ही होगा। अरे ! राम की उपासना के समान कहीं कृष्णोपासना हो सकती है। कहां राजराजेश्वर वृह्माण्ड नायक साकेत विहारी राम और कहां दूध दही चुराने वाले वन वन गाये चराने वाले कृष्ण। कदापि समानता नहीं हो सकती।

वे कह रहे थे कि मेरे आराध्य भगवान नहीं केवल उत्तम पुरुष थे। इसीलिये पुरुषोत्तम कहलाये। महारानी ने कहा।

व्यास जी बोले ! क्या कहा ? थे, थे का क्या मतलव, ईश्वर की भी कहीं मृत्यु होती है। वह तो पूर्ण ब्रह्म हैं। अखिल वृह्माण्ड नायक शिवादि देवों से पूज्य हैं। जिसके हृदय में प्रेम हो और नेत्र निरोग हों वह आज देखले। शर्त बांधकर कर कह सकता हूं कि साकार ब्रह्म राम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सदा थे, सदा हैं और सदा रहेंगे "जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी" यह चौपाई प्रतिक्षण लागू हैं। जो कठिन जानता है उसके लिये कठिन है, जो सरल जानता है उसके लिये सरल है। जो 'नहीं' कहता उसके लिये नहीं जो 'हैं' कहता है उसके लिये हैं, सदैव हैं। बस प्रेम से एक बार पुकारने की आवश्यकता हैं। और उनके प्रकट होने में देर नहीं लगती।

उनमें और कृष्ण में कोई अन्तर नहीं उस एक के ही अनेक चरित्र हैं। व्यास जी। महारानी ने कहा।

व्यास जी महारानी की बात सुनकर अति प्रसन्न होकर बोले बिल-कुल ठीक कहा। मैं क्या इतना भी नहीं जानूंगा। तुम्हारी बुद्धि विशेष परिष्कृत है। महाराज को केवल पक्षपात है और पक्षपात से 'दो' का भाव मन में आता है। जबकि सभी महात्माओं ने उसे एक और अद्वैत ही कहा है। गीता में तो स्वयं भगवान ने साफ ही कह दिया है कि—

समझती हो न, अज्ञानी लोग मुझे मनुष्य रूप धारण करने के कारण, परन्तु प्राणियों के स्वामी को नहीं जानते। साथ ही व्यंग भी करते हैं। अरे! वही एक अनन्त रूप गुण सम्पन्न है। उन्होंने स्वयं ही गीता में कहा है "मैं विष्णु, सूर्य चन्द्रमा हूं, मैं शिव हूं, मैं राम हूं, मैं कृष्ण हूं, और कहां तक कहूं मैं सब मैं ही हूं।"

व्यास जी की यह बात सुनकर महारानी ने पूछा। क्या गीता में यह भी लिखा है कि उनके दर्शन भी हो सकते हैं।

व्यास जी बोले! क्यों नहीं, उन्होंने छटवे अध्याय के एक श्लोक में कहा है कि "जो मुझे सर्वत्र देखता है यानी समस्त प्राणियों में मुझे आत्म रूप जानता है और संसार को ईश्वर के भीतर समझता है उससे मैं छिपा नहीं हूं और वह मुझसे छिपा नहीं" । जब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐसी अवस्था हो तो सच्चे प्रेम के कारण इच्छा होने पर दर्शन देते हैं। और कई लोगों को दर्शन दिये भी हैं।

प्रभु सर्वत्र हैं। परन्तु चित्रकूट और अयोध्या में श्रीराम रूप से बृज में श्री कृष्ण रूप से तथा काशी में शिव रूप से साक्षात् वर्तमान रहते हैं। व्यास जी ने कहा।

अच्छा। श्री अवध में भी वर्तमान है। महारानी ने कहा।

व्यास जी ने कहा! हां! 'जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि" उसे कभी भुला सकते हैं। ये बातें गुप्त और सत्य हैं। हाथ कंगन की आरसी क्या— अनन्य भक्ति और चाह, पूर्ण विश्वास और हृदय की पुकार होनी चाहिये। वे तो बड़े दयालु हैं।

महाराजा ने मुझसे क्या कहा था ? मालूम है व्यास जी महारानी ने पूछा।

मुझे कुछ नहीं मालूम। मुझसे तो केवल यही कहा था कि कल मेरी यात्रा होगी सारा प्रबन्ध करा दो।

महारानी बोली। मैं ही आपको बताती हूं। आप ही मेरे माता-पिता और गुरू हैं। परम पूज्य ब्राह्मण हैं, हृदय से परमेश्वर के निश्चल भक्त हैं। जो आज्ञा दोगे वही करूंगी। मैं तो बड़े संकट में फंस गई हूं।

क्या महाराज ने वास्तव में कोई कठोर बात कही है, व्यास जी ने पूछा।

हां, महारानी ने उत्तर दिया।

क्या कहा है। व्यास जी ने पूछा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराजा ने कहा है कि अवध ही जाओ। श्री रामजी को साथ लेकर ही आना। महारानी ने कहा।

व्यास जी सोचनीय मुद्रा बनाकर मन ही मन कहने लगे। हे नाथ यह क्या मर्जी हुई है। इस बीहड़ बुन्देलखण्ड की भूमि को पवित्र करोगे। अवश्य पधारो भगवन्! फिर महारानी से कहा—ऐसा! यहां तक! अनुचित बात कही गई है।

जो होना था सो हो ही गया। अब मैं अवध जाऊंगी न रामजी को यहां ला सकूंगी और न लौट कर आऊंगी। आप मुझे वहां तक भिजवा दें। महारानी ने कहा।

व्यास जी मन ही मन सोचने लगे अवश्य ही प्रभु यहां पधारेंगे। महारानी के विचार ने मेरे विचार पर मुहर लगा दी है। फिर महारानी से बोले—पति के कहने का कुछ ख्याल नहीं करना चाहिए। भला रामजी कैसे आ सकते हैं। उनके दर्शन ही होना कठिन हैं। मुफ्त में आत्म-हत्या करना उचित नहीं। यह तो पाप है।

महारानी ने कहा नहीं व्यास जी यह कोई साधारण बात नहीं हैं। इस बात ने मेरा हृदय छेद डाला है। या तो मैं राम को लाऊंगी नहीं तो वहीं प्राण त्याग दूंगी। यह मेरा निश्चय है।

यह तो निरा पागलपन है। ऐसा कभी हुआ है। कोई भी आज तक राम जी को कहीं ले गया है। व्यास जी ने कहा।

महारानी ने कहा। यदि मैं राम के सिवाय किसी देवता को नहीं मानती होऊंगी। यदि मैं मन वचन और कर्म से राम की दासी होऊंगी और यदि मेरी लाज रखना राम को उचित समझना पड़ेगा तो श्री रामजी मेरे साथ जरूर आयेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यास जी सोचने लगे कि महारानी में पूर्ण विश्वास है, साथ ही दृढ़ता है। भक्ति है ही जो व्यक्ति इन बातों पर तुल जाता है। मरने पर उतारू हो जाता है। वह कुछ न कुछ जरूर कर सकता है। हे प्रभु। क्या इस वृद्ध के घर पर ही आकर दर्शन दोगे। कैसी लीला है। हे करुणामय ! क्या ओरछा के ऐसे भाग्य हैं। हे लीलामय तुम्हारी जय हो। फिर महारानी से कहा—यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो तुम जाओ। परमात्मा तुम्हारी मनो कामना पूरी करें।

आपके आशीर्वाद से मुझे और भी साहस हो गया है। महारानी ने कहा। अब मैं सुख से जाऊंगी।

व्यास जी बोले ! महाराजा जी कल यात्रा करेंगे। उनको जाने दो सोमवार को प्रातः काल तुम्हारी यात्रा होगी। सोमवार शंकर जी का दिन है, उनका पूजन करके उन्हें प्रसन्न करके जाओ। उनकी कृपा से हो राम जी के दर्शन हो सकते हैं।

जैसी आपकी आज्ञा महारानी ने कहा।

महारानी ! आज मेरे हृदय में ऐसा लगता है, मानो कोई कह रहा हो कि तुम्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। तुम्हारा नाम अमर होगा। व्यास ने कहा।

महारानी ने व्यास जी के चरण छुए और उनका आशीर्वाद पाकर हृदय प्रसन्नता से भर गया।

महाराजा साहब श्री कृष्ण भगवान की उपासना करने को अपनी पक्ष में विजयी बनने की तपस्या करने वृन्दावन चले गये और गुरू हरीराम व्यास की सहयता से कठिन तपस्या की आकाशवाणी हुई कि महारानी गणेश कुंवरि (कमला) को काशी विश्वनाथ का वरदान है इससे उनकी ही विजय होगी महाराजा साहब मधुकरशाह ने गुरू जी हरीराम व्यासजी से इस आकाशवाणी का प्रसंग सुनाया तब हरीराम व्यास ने ध्यान लगाकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखा तो महारानी साहिबा की भक्ति की सराहना करते हुए महाराज को उपदेश करके सन्देह निवारण किया।

उसी समय, महारानी साहिबा गणेश कुंवरि (कमला) ने अवधपुरी को प्रस्थान कर दिया था। लक्ष्मण किला के पास सरजू के किनारे जाकर कठिन तपस्या की और भोजन, शयन, नींद का त्याग करके भक्ति में मगन हो गई। लेकिन एक माह के लगभग तपस्या करते हो गया परन्तु महारानी साहिबा गणेश कुवंरि को श्री रामराजा भगवान का दर्शन नहीं हुआ रात्रि को १२ बजे अथाह सरजू जल में अपने शरीर त्याग करने को कूंद पड़ी परन्तु तीन बार वह आपके आप किनारे पर आकर खड़ी हो गई तब चौथी बार बीच धारा में जाकर शरीर त्यागने को आगे बढ़ी। बीच जल धारा में एक स्वर्ण जटित सिंहासन दिखाई दिया और आपके आप वह उस सोने के सिंहासन पर वैठ गईं उसी समय बालक रूप में श्री रामराजा भगवान साक्षात्कार प्रगट होकर गोदी में आकर विराजमान हुए और कहा कि आपकी भक्ति तपस्या पर मैं प्रसन्न हैं आप वरदान मांग लीजिये तब महारानी ने हाथ जोड़ अस्तुति की और विनती करके अपनी सारी कथा सुनाई और कहा कि आप हमारे साथ साक्षात्कार रूप में ओरछा को चलने की कृपा करें। तब हमारी हार जीत का फैसला होगा। बात की बात है और भक्ति का प्रसंग है उपासना का मतभेद है इसी बजह से हम अपने शरीर को त्याग ने की इच्छा से अवधपुरी आये थे। महाराजा साहब की महान उपासना की विजय हो जायगी। वह समरथ हैं पतिदेव हैं परम पूज्यनीय हैं। लेकिन वाद विवाद में मैंने आपकी भक्ति की परीक्षा करने अनुचित वचन महाराजा से कहे और आपको भी मैंने कष्ट दिया है आप इस अपराध को क्षमा प्रदान करें। में नारी जाति हूं अज्ञान हूं हे नाथ मैं आपसे बारम्बार क्षमा चाहती हूं।

श्री रामराजा भगवान कहते हैं कि महारानी आपकी भक्ति के वश में होकर और आपकी भक्ति की परीक्षा को सफल करने अवश्य ही ओरछा चलूंगा। परन्तु हमारे तीन वचन आपको स्वीकार करना होगा—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—केवल पुष्य नक्षत्र में ही प्रस्थान करूंगा और जहां पुष्य नक्षत्र समाप्त हो जायगा उसी जगह पर ठहर जाऊँगा। बाद में पुष्य नक्षत्र आने पर पुनः प्रस्थान होगा। क्रमशः इसी तरह अयोध्या से ओरछा तक यात्रा होगी।

२—यात्रा पैदल होगी और साधुओं के समूह के साथ मेरा जाना ओरछा होगा।

३—सर्वप्रथम जहां पर विराजमान कराओ फिर उस भवन से अन्य दूसरे भवन (मन्दिर) में नहीं जाऊँगा मेरा ही राज्य होगा। श्री रामराजा कहलाऊँगा !

तब महारानी साहिबा गनेश कुंवरि (कमला) हाथ जोड़कर के विनती करती हैं कि आपके तीन वचनों का मैं पालन करूंगी।

इधर मधुकर शाह महाराज वृन्दावन से ओरछा में राजमहल में सो रहे थे। भगवान श्री रामराजा ने सपने में कहा कि आपके नगर ओरछा में हम आ रहे हैं। शीघ्र मन्दिर बनवाना शुरू कर दें और साधुओं के समूह सहित आप शीघ्र अवधपुरी में आकर हमको लेने चले आवें। महाराजा उठकर बैठ जाते हैं और मन में विचार करते है कि देखो महारानी की मनोकामना तो पूरी हो गई लेकिन मैं अपने इष्टदेव भगवान (श्री कृष्ण) के दर्शन को प्राप्त नहीं कर पाया। ठीक है महारानी की अटल भक्ति थी उन्हीं की विजय हो गई।

थोड़ी देर महाराजा फिर सो गये और वही श्री रामराजा भगवान रूप से श्री कृष्ण भगवान के दर्शन देकर महाराजा की मनोकामना पूरी की। महाराजा साहब बहुत प्रसन्न हुए और मन्दिर निर्माण कार्य शुरू करके अपनी समाज सहित भक्त जनों का समूह लेकर अवधपुरी पहुंचे। श्री रामराजा सरकार को सबसे पहिले कृष्ण रूप में महाराजा ने दर्शन करके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़ा भारी विश्वास हो गया फिर बालक रूपी श्री रामराजा को गोदी में लेकर महाराजा साहब फूले नहीं समाये और महारानी साहिबा की भक्ति की बड़ी सराहना करने लगे तव महारानी साहिबा ने कहा महाराज यह सब महान कार्य श्री रामराजा का दर्शन आपकी प्रेरणा से ही हुआ है। मैंने तो आपकी आज्ञा का पालन किया है यह सुन कर महाराजा साहब बहुत प्रसन्न हुए।

अवधपुरी में इस घटना का समाचार सब जगह फैल गया अनेकों महात्मा वहीं पर इकट्ठे हुए और श्री रामराजा भगवान को अयोध्या से ओरछा जाने वाले कार्य में महात्मा बाधा प्रकट करने लगे तब महात्मा तुलसीदास की अध्यक्षता में सब समाज ने इस विवाद को सुलझाने की पचायत इकट्ठी करके सबने अपने-अपने विचार प्रकट किए। परन्तु इस बात का फैसला करना कठिन हो गया कि श्री रामराजा भगवान अयोध्या से ओरछा जावें अथवा नहीं जावें। तब अन्तिम मत महात्मा तुलसीदासजी ने अपना प्रकट किया कि जब भक्ति और तपस्या के कारण श्री रामराजा भगवान ने महारानी गनेश कुंवरि (कमला) को वरदान दे दिया कि हम ओरछा चलेंगे फिर अब यह विवाद करना अपने को अनुचित है इससे अवश्य ही श्री रामराजा भगवान को हम सब भक्तजन साथ में चलकर ओरछा तक भेजने चलेंगे।

वरदान तो केवल श्री रामराजा भगवान ही अकेले बालक रूप में जाने का हुआ था। श्री किशोरी जी को अपने धाम अयोध्या से नहीं भेजना है। इससे श्री रामराजा का सदा निवास ओरछा और अयोध्या दोनों जगह होगा।

यह प्रसंग सुनकर सब महात्माओं ने बड़े भारी समारोह के सहित माह श्रावण शुक्ल ५ वि० सं० १६३० में अयोध्या जी से पुष्य नक्षत्र में प्रस्थान कर दिया और चैत्र शुक्ल ९ भोमवार वि० सं० १६३१ में ८ माह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२७ दिन के बाद अयोध्या से ओरछा में श्री रामराजा भगवान महारानी गनेश कुंअरि (कमला) के महल में विराजमान हो गये उसी समय से तुलसीदास ने रामायण का लिखना शुरू कर दिया। ओरछा तीर्थ हो गया।

मधुकरशाह ने श्री रामराजा भगवान का जो मन्दिर बनवाया था उसके सामने किला राजमहल बनवाया था। किला से मन्दिर के दर्शन एक खिड़की में होकर बहुत आसनी से हो सकते थे मधुकर शाह ने यह खिड़की इसी आशय से सामने मन्दिर के बनवाई थी कि मैं महल के अन्दर ही से सामने बैठे श्री रामराजा भगवान के दर्शन करता रहूंगा परन्तु यह बात मधुकरशाह की श्री रामराजा भगवान ने अस्वीकार कर दी और महारानी गनेश कुंवरि (कमला) के महल (रनिवास) से फिर नहीं उठे। उसी महल को ही मन्दिर के नाम में विख्यात कर दिया।

श्री रामराजा भगवान के लिए जो मन्दिर बनवाया गया था उसमें चतुर्भुज भगवान की मूर्तियां पधराई गई थीं। तब से अभी तक यह मन्दिर चतुर्भुज का मन्दिर कहलाता है।

वि० सं० १६४२ में ज्येष्ठ शुक्ल ११ गुरुवार को निर्जला ग्यास को महारानी गनेश कुंवरि का स्वर्गवास हो गया था।

महारानी गनेशकुंवरि के उपनाम कमला देवी, कमल कुंवरि और कमला कुमारी था। परन्तु प्रचलित नाम महारानी गनेशकुंवरि के ही नाम से माना गया है।

कनक भवन महिमा ग्रन्थ पष्ठ नं० ९५ पर तथा मधुकरशाह चरित्र पुस्तक पृष्ठ नं० १४ तथा हिन्दी साहित्य पुस्तक पृष्ठ नं० २४५ पर इस प्रकार लिखा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा धाम सब जगह विख्यात है यहां पर सभी जगह से भक्त जन दर्शन करने आते हैं ओरछा की प्रत्यक्ष महिमा है जो भक्तजन मनोकामना करके दर्शन करने आते हैं सबकी मनोकामनायें अवश्य ही पूरी हो जाती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है प्रत्यक्ष को प्रमाण की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

एक दिन श्री रामराजा मन्दिर के द्वारे एक साधु महात्मा भूखा पड़ा था। किसी ने उस साधू के खाने पीने की बात तक न पूंछी। रात को श्री रामराजा भगवान बालक के रूप में महात्मा के पास जाकर पूंछा कि महात्मा जी भोजन करोगे तब साधू कहते हैं कि हम बहुत भूखे हैं। तब बालक रूपी भगवान हलवाई के पास जाकर महात्मा को भोजन कराने को कहा कि जो महात्मा भोजन में माँगे इनको भरपेट भोजन करा देना और यह हमारी सोने की अगूठी अमानत में रख लीजिए सुबह हम अपनी अंगूठी वापिस लेकर तुम्हारा रुपया भोजन कराने का दे जायेंगे।

अंगूठी हलवाई ने अपने पास रखली और महात्मा को प्रेम-पूर्वक भर पेट भोजन बालक रूपी भगवान की तरफ से हलवाई ने कराया।

सुबह जब पुजारी गबदू (पन्डा) पूजा करने गये तो भगवान के हाथ में अंगूठी न देखकर बाहर आकर कहने लगे आज अंगूठी नहीं मिल रही सारा सामान मन्दिर का देखा भी नहीं मिली। पता नहीं लगता कि अंगूठी कहां गई। आरती के बाद महाराज साहब दर्शन करने आये तो गबदू पुजारी ने महारज से कहा कि अंगूठी का पता नहीं लगता है मालूम नहीं कहां चली गई है। इस बात की खबर सब जगह फैल गई और बाजार में भी अंगूठी की चर्चा हो रही थी तो एक हलवाई अंगूठी लेकर मन्दिर पहुंचा। और कहा कि रात को ११ बजे यह अंगूठी कोई बालक मन्दिर से आकर हमको दे गया था एक महात्मा को भोजन कराके यह कह गये कि सुबह आपको भोजन कराने का रुपया मिल जायगा तब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम अंगूठी मंगवा लेंगे। राजा ने अंगूठी पहिचान ली और मिठया (हलवाई) का रुपया दे दिया। उसी दिन आज तक मन्दिर द्वार पर कोई भूखा नहीं रह सकता है। महाराजा साहब की तरफ से महात्माओं को भोजन कराने का प्रबन्ध सदा से चला आ रहा है। अब भी झाँसी के सेठ भक्त लोग महात्माओं के भोजन कराने का हर समय प्रबन्ध रखते हैं। यह भगवान की महिमा है महाराजा मधुकरशाह नृसिह भगवान के उपासक थे। एक दिन अकबर ने इन्हें आखेट में चलने के लिये कहा पर महाराजा मधुकरशाह ने निर्भीकता पूर्वक उत्तर दिया कि मैं अपने ईष्टदेव को मारने नहीं जा सकता। यह सुन बादशाह चुप रहा। इस प्रकार इन दोनों में विरोध बढ़ गया। अन्त में दो बार ओरछा को विजय करने सेना भेजी पहली बार न्यामत कुली खां और अली कुली खां आये। और दूसरी बार जाम कुली खां और सैयद कुली खां आये। परन्तु दोनों युद्ध में शाही सेना को नीचा देखना पड़ा वि० सं० १६३४ में मुहम्मद सादिक खां के सेनापतित्व में सेना भेजी। ग्वालियर के राजा आसकरन तोमर भी साथ में आये थे। इन्होंने सन्धि करने की बहुत कुछ कोशिश की, परन्तु महाराजा ने सुलह करना स्वीकार नहीं किया। इससे युद्ध छिड़ गया। होरिलराव युद्ध में मारे गये और रामशाह घायल हो गये थे। तब दोनों में सुलह हो गई। पर यह कुछ दिन न चली। वि० सं० १६४५ में फिर अकबर ने आसकरन और अब्दुल खाँ को ओरछे पर आक्रमण करने को भेजा। इस बार ओरछे का कुछ भाग मुगलों के हाथ लगा किन्तु महाराजा ने नहीं माना तो फिर अकबर ने मुराद के सेना-पतित्व में वि० सं० १६४८ में सेना भेजी। इस समय ओरछे पर अकबर का अधिकार हो गया इससे कुछ दिनों पीछे मधुकरशाह का देहान्त वि० सं० १६४९ में हो गया। (सन् १५९२ ई०) कुल ३८ साल तक राज्य किया।

• •

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्य रसिकाचार्य श्री हरीराम व्यास

ओरछा में श्री हरीराम जी का जन्म सं० १५६७ वि० अगहन कृष्ण ५ को वहां के सम्मानित सनाढ्य ब्राह्मण के कुल में हुआ था। उनके पिता का नाम समोखन शुक्ल और माता का देविका जी था। हरीराम जी बड़ी कुशाग्र बुद्धि के मेधावी बालक थे। अल्पायु में ही ये प्रकाण्ड विद्वान हो गये थे। पुराण वक्ता होने के कारण यह व्यास जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह सम्बोधन इन्हें स्वयं ही इतना रुचिकर प्रतीत हुआ कि कविता के निमित्त इन्होंने अपना उपनाम 'व्यास' ही रख दिया। गुरू होने के कारण ओरछा नरेश महाराजा मधुकरशाह इन्हें 'गोस्वामी' की उपाधि से अभिहित करते थे।

यों तो व्यास जी श्री राधा कृष्ण के युगल स्वरूप के अनन्य उपासक थे, किन्तु साधु मात्र के प्रति उनके हृदय में वह प्रगाढ़ प्रेम था कि श्री नाभादास जी ने अपनी भक्त-माल में भक्त को ही व्यास जी ईष्ट देव निरूपित किया है।

ओरछा में व्यास जी के कार्य में बाधायें उपस्थित की जाने लगीं, यहां तक की उन्हें ओरछा छोड़ देना पड़ा। उस समय उनकी उम्र ४५ वर्ष की थी।

इस प्रकार सं० १६१२ वि० में व्यास जी वृन्दावन चले गये। महाराजा मधुकरशाह व्यासजी को ओरछा में ही रखना चाहते थे और व्यासजी वृन्दावन में ही अन्त तक निवास करने की अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ थे। उस समय महाराजा मधुकरशाह ने एक पद लिखकर व्यास जी के पास भेजा ताकि व्यास जी ओरछा लौट आयें।

ओरछा में सोने के फूल आकाश से बरसे थे।

शरद निर्मल रजनी में बेतवा नदी के किनारे पर भक्त हरीराम व्यास ने ओरछा में रामोत्सव की योजना की। व्यास जी के प्रिय शिष्य मधुकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शाह जी महाराजा ओरछा भी उत्सव में सम्मिलित हुये थे। रसिक भक्त शिरोमणि व्यास जी आन्नद में नृत्य कर रहे थे। साथ ही प्रेम विभोर में भक्त मधुकरशाह नाचने लगे। उत्सव की अलौकिकता देख करके आकाश से सुमन-वृष्टि होने लगी। वह सुमन (पुष्प) भूमि पर गिरते ही स्वर्ण के हो गए। ओरछा निवासी तथा बुन्देलखण्ड के भक्त चरित्र प्रेमी वंश परम्परा से यह कथा सुनाते हैं। गुरू शिष्य वंशावली में भी इस घटना का उल्लेख है। वेतवा नदी के उस घाट का नाम वर्तमान समय में कंचना घाट कहलाता है। ओरछा की राजगद्दी पर राज्यभिषेक के समय महा–राजाओं को उक्त पुष्पों के दर्शन कराये जाते हैं। ओरछा राज्य घराने में अब भी यह स्वर्ण पुष्प सुरक्षित हैं। लोकेन्द्र वृजोत्सव पृष्ठ नं० १५ पर हैं।

ऐसे शूरवीर और धर्मवीर महाराजा मधुकरशाह जी कितने ऊंचे भक्त थे यह भी भक्त माल में वर्णन है। महाराज की भक्ति का वर्णन तथा उनके द्वारा अनेकों जो चमात्कार हुए उनका गुणगान बुन्देलखण्ड में सदा ही होता आया है।

एक बार की घटना (चमत्कार) इस प्रकार हुई कि श्री जुगल किशोर भगवान का (जो वर्तमान पन्ना में हैं) मन्दिर ओरछा में था उसका द्वार फिरा दिया था। ओरछा में यह प्राचीन मन्दिर अभी भी (खण्डहर) व्यासपुरा मुहल्ला श्री चतुर्भुज के मन्दिर के ठीक पीछे दक्षिण तरफ वेतवा नदी की ओर स्थिति है। इस मन्दिर की मूर्तियाँ वि० सं० १६९५ (सन् १६३८ ई०) में पन्ना में जुगलकिशोर भगवान ओरछा से चले गये थे।

उस मन्दिर में महाराजा मधुकरशाह प्रतिदिन कीर्तन करने जाते थे। और भगवान के सामने होकर भक्त जनों के समूह में पांव में घुंघरू बांध करके महाराजा साहब नृत्य करते थे। आप पद गान करते हुए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेसुध हो जाते थे। बाजे बजाने वाले संगीतज्ञ भी सब अनुगामी भक्त जन समूह के थे।

जब समाज में महाराजा साहब स्वयम् नृत्य गान करते थे, तो सब समय विलक्षण ही आनन्द बरसता था।

एक दिन महाराजा साहब को ऐसा राज्य-कार्य आ गया कि अवकाश न मिलने से समय पर मन्दिर में नहीं पहुंच सके थे। जब महाराजा साहब दर्शन करने मन्दिर गये थे उस समय भगवान की शयन आरती होकर मन्दिर बन्द हो गया था। उस समय रात्रि के १२ बजे का समय था। फिर भी महाराजा साहब अपना नित्य-नियम पूर्ण करने के लिए भगवान के मन्दिर के पीछे जाकर कीर्तन करते हुए नृत्य-गान करने लगे। उस दिन विलम्ब के कारण सब लोग भक्त जन समूह के वापिस चले गये थे। केवल थोड़े से भक्तों के बीच उस सन्नाटे के समय ऐसा कीर्तन जमा कि सब की आंखों से प्रेम की अश्रुधारा वह निकली और महाराजा साहब की उस दिन विलक्षण प्रीति–धारा वही। उस समय सहसा भगवान साक्षात् प्रगट होकर महाराजा साहब के साथ नृत्य करने लगे। उस समय भी आकाश से देवताओं ने स्वर्ण-पुष्प बरसाये थे। वह फूल सोने के थे। उसी समय मन्दिर का द्वार घूमकर पिछवाई की तरफ हो (पूर्व से पश्चिम तरफ) गया था। यह ऐतिहासिक घटना वि० सं० १६३९ में हुई थी। इस प्रकार महाराजा मधुकरशाह की भक्ति ने साक्षात्कार प्रगट कर दर्शन प्राप्त किए थे। आकाश से जो स्वर्ण-पुष्प देवताओं ने बरसाये थे वह अब भी सोने के फूल (महाराजा ओरछा) टीकमगढ़ में सुरक्षित हैं। कनक भवन महिमा पृष्ठ ९३ से ९५ तक यह लिखा है। भक्त कवि हरीराम व्यास पुस्तक पृष्ठ ११६ पर ऐसा ही लिखा है और लोकेन्द्र वृजोत्सव पुस्तक पृष्ठ नं० १५ पर लिखा है।

महाराजा मधुकरशाह कविता भी करते थे आपकी रचना के पद व्यास वाणी पृष्ठ नं० १०८ से २०५ तक लिखे हैं। भक्त कवि हरीराम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यास पुस्तक पृष्ठ नं० १८१ पर मधुकरशाह रचना के पद लिखें हैं। इसी पुस्तक में ऐतिहासिक समर्थन पृष्ठ नं० ९९ पर लिखा है।

हरीराम व्यास के गुरू श्री हितहरिवंश महाराज वृन्दावन में राधा बल्लभीय सम्प्रदायक थे। हरीराम व्यास जी के गुरू भाई हरिदास जी थे वह संगीताचार्य माने गये हैं। हरिदास महाराज के पास तानसेन जिसका नाम त्रिलोचनदास ब्राह्मण था वि० सं० १६१५ में संगीत विद्या पढ़ने ओरछा आया था फिर वि० सं० १६३० तक तानसेन ने वृन्दावन में हरिदास स्वामी से सगीत की विद्या का अध्ययन किया था। इसके बाद तानसेन वि० सं० १६३० में कविता करना सीख गया था। रामनिरंजन महाराजा ग्वालियर के द्वारा तानसेन आगरा में मुगल साम्राट अकबर के दरबार में रहने लगा था। तानसेन जाति ब्राह्मण थे परन्तु वि० सं० १६३५ में तानसेन ने अपनी शादी मुसलमान की लड़की के साथ करके मुसलमानी धर्म मानने लगे और उसी समय से त्रिलोचनदास ब्राह्मण का नाम बदल कर तानसेन नाम से विख्यात हो गया था परन्तु ब्राह्मण के बालक थे ग्वालियर में इनके माता-पिता रहते थे। जो सनाढ्य कुल के वंशज थे।

भक्ति के क्षेत्र में हरीराम व्यास जाति-पांति को नहीं मानते थे। उनके इस प्रकार के उपदेश केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं थे। एक बार महा प्रसाद की जूठन की मतहर (चांदेवारी) के हाथ से उन्होंने पकौड़ी खाई थी। तब से बृज मण्डल में एक चर्चा का विषय बन गया है व्यास वाणी पद नं० २९ व ३० में रचना में प्रकट किया है तथा उनकी साखी में भी इसका वर्णन है। भक्त कवि हरीराम व्यास पुस्तक पृष्ठ नं० १०९ से १११ तक ऐसा वर्णन है। व्यास जी ने समाज की परवाह न करके मन वाणी और कर्म में समानता का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया है।

व्यास जी के तीन पुत्र रामदास, विलासदास और किशोरदास बड़े विद्वान हुए थे। व्यास जी की पत्नी सुशील देवी थी और इनके भाई का नाम परशुराम व्यास था यह पण्डितई वृत्ति के योग्य पंडित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री हरीराम व्यास अनन्य रसिकाचार्य का स्वर्गवास वि० सं० १६६९ में १०२ साल की आयु में वृन्दावन में हुआ था। वहां पर व्यास जी के नाम पर व्यास घेरा वना है हरीराम व्यास की समाधि भी बहुत सुन्दर बनी है जो ओरछा के महाराजा वीरसिंह प्रथम ने वि० सं० १६७५ में निर्माण कराई व्यास जी के नाम से अनेक भबन वृन्दावन में बने हैं। हरीराम व्यास जी लिखित निम्न ग्रन्थ है।

(१) रागमाला (२) व्यास वाणी (३) व्यास सिद्धांत (४) व्यास रस पद (५) व्यास-स्फुट पद (६) रास पंचाध्यायी (७) व्यास साखी व्यास चौरासी।

हरीदासी सम्प्रदाय—मध्य सम्प्रदाय-राधावल्लभीय सम्प्रदाय आप ही की चलाई हुई। वृन्दावन में विख्यात हैं।

(४) महाराजा रामशाह

महाराजा रामशाह (वि० सं० १६४९ से वि० सं० १६६३ तक) (सन् १५९२ ई० से सन् १६०६ ई० तक महाराज मधुकरशाह के स्वर्ग-वास होने के बाद उनके वड़े पुत्र रामशाह को राज्य वि० सं० १६४९ में मिला था यह स्वतंत्रता पूर्वक राज्य करते के प्रयास में लगे रहे धार्मिक भक्त भावना भी वहुत अच्छी थी। रामशाह ने अपने सात भाइयों को तथा अन्य बुन्देला ठाकुरों, प्रभार कछवाहे गौर वंश वालों को अपने राज्य को २२ जागीरों में विभाजित करके सब स्वतंत्र हो गए जागीरें निम्न प्रकार थी।

पिछोर जागीर, कठौबा, बड़ौनी, भसनेह (झाँसी) कुचपहरिया गौर झामर, शिवपुरी (ग्वालियर) ऐरछ नुनामहेवा, पन्ना सागर दमोह-पलेरा, बानपुर, चन्देरी, जाखलौन, नरवर, शाहगढ, टोड़ीफतेहपुर, बिजना दुरवई, झाँसी कुल स्वतंत्र भाग हो गए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराजा रामशाह की महारानी कल्यानदेवी प्रभार छिपरी, रतन कुंवरि प्रमोर बाघाट, मायादेवी प्रमार उबोरा, शान्ती देवी प्रमार नौनेर से ११ पुत्र हुए थे।

संग्रामशाह, हरीदास, मुकुटमणि, विट्ठलदास, मोहनदास, त्रिभुवनदास सुजानराव, भगतराव, बलभद्र, मुकुन्दसिंह, कु. जू थे। जिसका विवरण चंदेरी बानपुर में आगे लिखा है।

वि० सं० १६४९ से वि० सं० १६६३ तक अर्थात् सन् १५९२ ई० से सन् १६०६ ई० तक १४ साल ओरछा में स्वतंत्र राज्य किया बाद में बार (चन्देरी बानपुर) के जागीरदार हो गये जिसकी आमदनी ३ लाख रुपया थी वि० सं० १६६९ में देहान्त हो गया था इन्हीं के वंशज मर्दनसिंह बुन्देला बानपुर के सन् १८५७ ई० गदर में स्वतंत्रा संग्राम के 'प्रधान वीर हुये थे। क्रान्तकारी मर्दनसिंह बुन्देला का देहान्त वि० सं० १९२६ में वृन्दावन में हुआ था। रामशाह महाराजा का जन्म वि० सं० १५५४ में हुआ था।

बुन्देलखण्ड का स्वर्ण-युग

(५) महाराज वीरसिंह देव (प्रथम) जन्म वि. सं. १५६०

वि०सं० १६६३ से वि०सं० १६८४ तक सन् १६०६ से सन् १६२७ ई० तक

भारत प्राण बुन्देलखण्ड अपनी वीरता पराक्रम एवं शौर्य के कारण विश्व विख्यात है, इतिहास इसका साक्षी है। यहां के वीर बुन्देल शासकों ने केवल घोड़ों की टाप, तोपों की गर्जन एवं चूड़ियों की झंकार ही नहीं सुनी अपितु प्रजा के सुख की वेदिका में अपने राजसी ऐस आराम को होमकर अपनी प्रजा भक्ति का परिचय दिया है। ऐसे शासकों में महाराज मधुकरशाह के द्वितीय पुत्र वीरसिंह जू देव (प्रथम) का नाम बुन्देलखण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। इन्होंने अपने बुद्धि कौशल और न्याय प्रियता से प्रजा का मन मोह लिया था। इसी काल में बुन्देलखण्ड की शिल्प कला साहित्य, व्यापार, चित्रकला आदि चर्मोत्कर्ष पर थीं। अतः इसे बुन्देलखण्ड (ओरछा राज्य) का स्वर्ण युग कहना अनुचित न होगा।

वीरसिंह प्रथम मधुकरशाह ज्येष्ठ पुत्र न थे। अतः ओरछा राज्य इन्हें उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त न हुआ। दतिया के समीप स्थित केवल बड़ौनी ही इन्हें जागीर स्वरूप प्राप्त हुई।

महाराज मधुकरशाह ओरछा नरेश की दो रानी थी जिनसे आठ पुत्र पैदा हुए जो निम्न प्रकार है :—

१ महाराजा रामशाह पिता की मृत्यु पश्चात सं० १६४९ वि० से सं० १६६३ वि० तक ओरछा के राजा रहे फिर सं० १६६३ वि० से बार (बानपुर चन्देरी) के जागीरदार रहे।

२ होरलदेव सं० १६३४ वि० के युद्ध में मारे गये थे जो पिछोर के जागीरदार थे।

३ राजा इन्द्रजीतसिंह इन्हें कच्छौवा की जागीर मिली थी। परन्तु रामशाह के समय ओरछा में कार्यवाहक शासक रहे। यहाँ पर अब तक इनके महल के ध्वंसावशेष वर्तमान हैं।

४ वीरसिंह देव को बड़ौनी की जागीर मिली। यह बड़े ही रणकुशल, पराक्रमी और शूर थे। इन्होंने ही अकबर जैसे प्रबल शत्रु पर अपना आतंक जमाया था बाद में सं० १६६३ वि० से सं० १६८४ वि० तक ओरछा के महारजा हुए थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५ हरिसिंह देव को भसनेह (झाँसी जिले में) जागीर मिली थी।

६ प्रतापराव को कुचपहरिया की जागीर मिली थी।

७ रतनसिंह को गौरझामर की जागीर मिली थी।

८ रणबीरसिंह देव को शिवपुरी (ग्वालियर की सिपरी) जागीर मिली थी इस प्रकार अब ओरछा रियासत के आठ भाग हो गये थे। यद्यपि यह सब ओरछा के अधीन कहाते थे पर यथार्थ में स्वतंत्र थे।

महाराजा वीरसिंह देव को १७ गांव बड़ौनी में मिले थे बड़ौनी के पुराने मनचहे लोगों से न पटी। अन्त में महाराजा ने इन्हें मार भगाया। पश्चात पबायां सेना भेजी और इसे अपने अधीन कर लिया। तदन्तर तोमरू (तोमरगढ़) भी इनके हाथ लग गया। अब इनकी धाक चारों ओर जमने लगी। लोग इनसे भय खाने लगे। नरवर (नलपुरा) और केलारस के निवासियों ने भी इनसे भय खाया। पश्चात इन्होंने मैना और जाटों को हराया। फिर बेरछा और करहरा ले हथनौरा पर आक्रमण किया और वहां के अधिकारी बाघजंग जांगड़ा को रणक्षेत्र में मार डाला। यह देख भांडेर का मुगल सरदार हसन खाँ भागा और भांडेर बिना प्रयास इनके हाथ लग गया। पीछे से इन्होंने ईचीखाँ से ऐरच भी छीन लिया। इस प्रकार थोड़े ही दिनों में इन्होंने सूबा ग्वालियर को हिला दिया यह देख अकबर ने ओरछा के राजा रामशाह और ग्वालियर के आसकरन के साथ सेना देकर वीरसिंह देव पर चढ़ाई कर दी। ये अपनी चतुरंगणी सेना ले चांदपुर आये यहां पर जगमन भी शाही सेना के साथ मिल गया। इसके सिवाय हसनखां पठान हरधौर पमार और राजाराम पमार भी साथ में थे। आसकरन ने मुगल सेना के पूर्व में राजाराम पमार और हसन खां को रखा। उतर की ओर आसकरन और जगमन रहे। इस प्रकार वीरसिंह देव के पास इतनी सेना न थी कि वह खुले मैदान युद्ध करते। इससे वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरम्भ में इन्द्रजीत और प्रतापराव को साथ ले दोनों ओर की सेनाओं पर छापे मार मार परेशान करनें लगे। अन्त में युद्ध ठन गया इसमें रामशाह के पुरोहित मयाराम और उसका भाई खेत रहे। इससे रामशाह और आसकरन वापस आ गये वि० सं० १६५१ में आसकरन के वापस आने पर अकबर ने बहराम खाँ के पुत्र अब्बुल फजल को दक्षिण से वापस बुलाया था और इसके साथ में पंडित जगन्नाथ और दुर्गादास को भेजा। रामशाह भी शाही सेना लेकर आया इसके सिवाय अकबर ने अब्दुल्ला खां को भी साथ भेजा। अबुल फजल ने इन सब सरदारों के साथ एक बड़ी फौज लेकर वीरसिंह देव पर चढ़ाई की। अबुल फजल ने पवायां में डेरा डाला। वहां से रामशाह ने पंडित गोविन्ददास को वीरसिंह देव के पास भेजा इसने महाराजा वीरसिंह देव को बड़ौनी छोड़ने की सलाह दी। परन्तु महाराज ने नगरवासियों को तो अलग कर दिया और स्वयम् युद्ध करने को तैयार हो गये इन सबों ने मिलकर बड़ौनी घेर ली पर वह निकल गये और शाही फौज पर छापा मारने लगे इनसे परेशान होकर खानखाना ने इन्हें बुलाया। यह अब्दुल्ला खां से मिले उसने इन्हें बादशाही मनसव दिलवाया और अपने साथ दक्षिण ले गया। उनके जाने पर बड़ौनी में शाही थाने बैठ गये। इस बात से वीरसिंह देव को बहुत दुख हुआ। इससें इन्होंने बरार के नजदीक पहुंचने पर अब्दुल्ला खां से बड़ौनी की जागीर वापस मांगी परन्तु अब्दुल्ला खां ने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए दक्षिण में जागीर देने का वचन दिया इस समय यह दक्षिण में सूवेदारी पर जा रहा था। महाराज वीरसिंह देव रामशाह के लड़के संग्रामशाह की सलाह से आखेट का बहाना कर वापस चले आये इनके आते ही शाही थानों के लोग बड़ौनी से भाग गये। इधर संग्रामशाह ने भी मौका पाकर अब्दुल्ला खां से बड़ौनी मांग ली। यहां वि० सं० १६५६ में अकबर के पुत्र शाह मुराद का दक्षिण में देहान्त हो गया। इस पर अकबर को बड़ा ही दुख हुआ इससे इसने दक्षिण जाने की तैयारी की यह आगरे से धौलपुर होता हुआ ग्वा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लियर आया यहाँ से इसने राजाराम कछवाहे को महाराजा वीरसिंह देव के पास बड़ौनी भेजा इन्होंने इसका अच्छा आतिथ किया और सम्मति भी ली। अकबर भी राजाराम के जाने के बाद मौड़ौ जाने के लिए नरवर (नलपुरा) चला आया। यहाँ पर इसे राजाराम रामशाह बुन्देला मिला और राजाराम कछवाहा भी बड़ौनी से वापिस आ गया। वि० सं० १६५७ में रामशाह के पुत्र संग्रामशाह को अब्दुल्ला खां ने बड़ौनी जागीर में दे दी थी। पर उस पर अधिकार करना तो दूर रहा यह लोग उस ओर देख भी न सके। इससे इन्होंने यह मौका हाथ से न जाने दिया और बड़ौनी पर चढ़ाई करने के लिये अकबर से सहायता मांगी। अकबर तो यह चाहता ही था इसने रामशाह के साथ राजसिंह को भी एक बड़ी सेना के साथ भेज दिया। यह सुन महाराज वीरसिंह देव की सहायता के लिये राव प्रताप तो स्वयम् आये और रतनशाह के लड़के इन्द्रजीत ने सेना भेजी। इस समय महाराज वीरसिंह देव की भी अच्छी तैयारी हो गई थी। इससे राजसिंह ने सन्धि करने की सलाह की पर महाराज ने सन्धि करना स्वीकार न किया। अन्त में भाई हरवंश आनन्दी पुरोहित देवा पायक के समझाने पर ईश्वर को बीच में दे सन्धि कर ली और बड़ौनी छोड़ दी। परन्तु राजसिंह ने अपना प्रण न निबाहा और इनके आते ही उस गाँव में आग लगा दी। यह बात वीरसिंह देव को बहुत बुरी लगी। उन्होंने अपने कुछ चुने हुए सामन्त बकसराय प्रधान, केशीराय, चम्पतराय, मुकुट गौड़, कृपाराम, बलवन्त यादव को लेकर रातों रात धावा कर दिया। इधर एक मैंना ने इनके आने की खबर राजसिंह को दे दी। राजसिंह ने अपने लड़के के साथ एक बड़ी सेना भेजी और दामोदर को भी उसके साथ कर दिया दोनों में घमासान युद्ध हुआ महाराज के चुने हुए सिपाहियों और सामन्तों ने डटकर युद्ध किया। यदि राजसिंह ग्वालियर न भाग जाता तो मारा जाता।

अकबर के सलीम मुराद और दानियाल तीन लड़के थे इसमें से मुराद की मृत्यु हो गई थी। और सलीम को वह चाहता भी न था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इससे दोनों में वैमनस्य हो गया। इससे सलीम वि० सं० १६६५ में आगरे से निकल भागा और इसने अवध और मानिकपुर अपने अधिकार में कर लिया इधर महाराजा वीरसिंह देव भी अकबर से युद्ध करते परेशान हो गये थे। इससे इन्होंने यादव गौड़ सेनापति की सलाह से भावी बादशाह से भेंट करने की सलाह से प्रयाग पहुंचे। जैसे शूरवीर थे उसी तरह धार्मिक भी थे इससे पहले इन्होंने गंगा स्नान किया फिर शहजादा सलीम से भेंट की। सलीम तो यह चाहता ही था। महाराजा का यथोचित सत्कार कर उसने इन्हें अपने पक्ष में कर लिया महाराजा ने भी भावी उन्नति का विचार करते हुए अबुल फजल के मारने का बचन दे दिया सलीम के राज विद्रोह करने पर अकबर ने इसे परास्त करने की इच्छा से अबुल फजल को वि० सं० १६५९ में दक्षिण से बुला भेजा महाराज वीरसिंह देव भी सैयद मुजफ्फर के साथ प्रयाग से बड़ौनी आ गये। यहां पर इन्हें अबुल फजल के आने और नरवर पहुंचने का हाल मालूम हुआ अबुल फजल ने सिन्ध नदी पार कर आंतरी के पराइछे नामक ग्राम में डेरा किया। दूसरे दिन प्रातः काल कूच करते ही महाराजा वीरसिंह देव ने इसे आ घेरा दोनों में घमासान युद्ध हुआ महाराज की बहुत सी सेना घायल हुई पर महाराज ने अबुल फजल का सिर काट लिया और उसे वह अपने साथ बड़ौनी ले आये वहाँ से चम्पतराय की संरक्षता में शाहजादा सलीम के पास प्रयाग भेज दिया। उसे देख वह फूला न समाया इसके बाद उसने महाराज वीरसिंह देव का राजतिलक करने के लिये चम्पतराय के साथ अपना ब्राह्मण भेजा और साथ में एक रतन जटित तलवार छत्र चंवर तथा डंकानिशान भी भेजे यह राजतिलक बड़ौनी में हुआ।

वि० सं० १६५९ में महाराजा वीरसिंह देव ने अबुल फजल को मार डाला जब इसकी खबर अकबर को मिली तब उसे इस बात का बहुत दुख हुआ उसने दो दिन तक भोजन नहीं किया उसको सात्वना देने और सहानुभूति दिखाने के लिए खानआजम राजाराम कछवाहा, शेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फरीद, राजा भोजराय, दुर्गादास दरबारी और ऊमराव गये। इन लोगों ने उसे बहुत धीरज बंधाया पर उसे धैर्य न हुआ। अन्त में उसने वीरसिंह देव को पकड़ने सेना भेजी। जिसके साथ राजासिंह, राजाराम, रामशाह भी साथ आये। ग्वालियर में इन्हें वेरछा के सुजानराय पवार, प्रतापराय और सुजानशाह भी अपनी सेना के साथ आ मिले। वहां से यह सब आंतरी आये। यह देख शाहजादा सलीम ने राजा वीरसिंह देव को युद्ध न करने की सलाह दी इससे यह बड़ौनी छोड़कर दतिया चले आये। यहां पर राजाराम, रामशाह और राजसिंह एक हो गए। इससे वीरसिंह देव दतिया छोड़कर ऐरछ चले आये। परन्तु शाही फौजों ने उनका पीछा न छोड़ा और ऐरछ आते ही उन्हें घेर लिया वहाँ वीरसिंह देव के लघु भ्राता हरसिंह देव से विकट संग्राम हुआ इस युद्ध में कई बड़े-बड़े योद्धा खेत रहे और जमान खां का पुत्र जमाल खां भी मारा गया। उसी समय महाराज दूनी नास के ग्राम मे चले गए। जब इस बात की खबर शाही फौज को लगी तब वह भी उनको पकड़ने के लिये दूनी ग्राम पहुंची। इस प्रकार शाही फौजों को परेशान करते हुए वह दतिया चले आये यहाँ पर सलीम शाहजादे से भेंट हुई महाराजा वीरसिंह देव को देख यह बहुत ही खुश हुआ। इसके पश्चात् तरड़ी वेग इन्द्रजीत को ऐरछ का किला दे कछौवा चला गया। अन्त में अकबर परेशान हो गया और उसने शाहजादे सलीम को आगरे बुला भेजा। यह महाराज वीरसिंह देव को दतिया में छोड़कर वह आगरे चला गया।

महाराजा वीरसिंह देव के उधर इधर भागते रहने पर उन सब स्थानों पर शाही झन्डा फहराने लगा परन्तु शाहजादा सलीम के जाते ही शाही सेना वापिस चली गई। फिर क्या था महाराज वीरसिंह देव ने इन्हें भेड़ बकरी की तरह काट डाला और उन सब स्थानों पर अपना अधिकार जमा लिया। सबसे पहले संग्रामशाह ने भांडेर पर अपना अधिकार जमाया पीछे हरिसिंह देव ने भसनेह को आधीन करना चाहा वहां पर खड़गराय से युद्ध हुआ और हरिसिंह देव वीरता पूर्वक लड़कर मारे गये। इसका वीरसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
देव को बड़ा दुख हुआ उसी समय संग्रामशाह और वीरसिंह देव से मेल हो गया इससे संग्रामशाह ने वीरसिंह देव को भाँडेर दे दी। उन्होने इसके बदले में गढ़ देने की प्रतिज्ञा की। इसके बाद वीरसिंह देव दून लौटा गये वहां पर खड़गराय से युद्ध हुआ वह सपरिवार मारा गया। फिर लहचूरा ग्राम उन्होंने संग्रामशाह को दे दिया। इसके बाद वीरसिंह देव ने खड़गराय का सिर शाहजादा सलीम के पास आगरे भेज दिया इससे शाहजादा तो खुश हुआ परन्तु अकबर बहुत नाराज हुआ। लेकिन उसने अपना क्रोध प्रकट न होने दिया। पीछे से उसने रामदास कछवाहे को बुलाकर शाह-जादा सलीम के पास भेजा परन्तु उसने वीरसिंह देव का साथ छोड़ना स्वीकार नहीं किया। इससे दोनों में फिर वैमनस्य बढ़ गया और शाहजादा सलीम आगरा छोड़कर प्रयाग चला गया। खांडेराव के मरने के बाद इनके छोटे भ्राता इन्द्रजीत ने बादशाह से फरियाद की। रामदास कछवाहे के समझाने पर बादशाह ने कुछ शर्तों पर इन्हें ओरछा देना स्वीकार किया। परन्तु उन्होंने ओरछा लेना स्वीकार नहीं किया।

वि० सं० १६६१ में सलीम की मां जोधाबाई का स्वर्गवास हो गया इस समय अकबर ने उसे बुलाया। शाहजादा सलीम को अपनी माता जोधाबाई के मरने का बहुत दुख हुआ। जब आगरे सलीम पहुंचा तो अकबर ने बहुत कष्ट दिया इससे वह आगरे से फिर निकल भागा। अकबर को खांडेराव के मारे जाने का दुख बना ही था उसने वीरसिंह देव को पकड़ने के लिए अब्दुल्ला खां के सेनापतित्व में सेना भेजी। परन्तु वीरसिंह देव सलीम से मिलने प्रयाग गये थे यहां से जाने के बाद उन्होंने ओरछा पर अधिकार कर लिया। इस समय संग्रामशाह ने इनका साथ दिया था। उधर अब्दुल्ला खां भी अपनी सेना के साथ खम्हरौली में आ गया फिर क्या था महाराज वीरसिंह देव भी इन्द्रजीत, संग्रामशाह, रावप्रताप, उग्रसेन केशवदास इत्यादि सामन्तों को साथ लिये हुये युद्ध के लिए निकले। दोनों सेनाओं का ओरछे से आधा कोस पर सामना हो गया और बात की बात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में घमासान युद्ध छिड़ गया। इस समय राजा राजसिंह और अब्दुल्ला खाँ को प्राण बचाना कठिन हो गया। मुगल सेना ने पीठ दिखाई और वीरसिंह देव ने विजय लक्ष्मी पाई। इन्होंने शाही सेना से झण्डे के ऊपर की निशानी माही मण्तव छीन लिए। यह देख राजसिंह भी ओरछा छोड़ कठौली चला गया इस युद्ध की हार से अकबर को बड़ा दुख हुआ। अतः उसने फिर सेना भेजने का प्रबन्ध किया। किन्तु जरावस्था के कारण वह कमजोर हो गया था। इस पर भी दानियाल की मृत्यु हो गई। मुराद पहिले ही मर चुका था। इन सब कारणों से वह बीमार हो गया उसी समय सलीम आगरा चला गया सलीम के इस समर्पण से उसे क्षमा कर दिया गया उसे अपना पहिला सम्मान प्राप्त हो गया उसके विरुद्ध चल रहा षड़यन्त्र असफल रहा। सम्राट की बीमारी बढ़ती गई और स्पष्ट हो गया कि उसका अन्त समय निकट है। जिस आवाज से न जाने कितने अभियानों का संचालन किया था अब थकित थी। वह अब बोल न सकता था किन्तु वह समझता था। कि उसके चारों ओर क्या हो रहा है सलीम अपने शय्यागत पिता की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने भूमि पर पड़कर नम्रता पूर्वक प्रणाम किया और अपने अपराधों की क्षमा मांगी बादशाह ने उसे राजसी वस्त्र धारण करने और अपने विस्तर के पास पड़ी हुई हुमायुं की तलवार अपनी कमर में लटका लेने का संकेत किया सलीम ने उसकी आज्ञा का पालन किया। उसकी इच्छानुसार ही सलीम कमरे के बाहर चला गया। थोड़ी देर बाद ही परम प्रतापी सम्राट अकबर इस संसार से चला गया शव संस्कार में सलीम ने एक कर्त्तव्य शील पुत्र के समान स्वयम् कन्धा लगाया।

वि० सं० १६६२ (२४ अक्टूबर सन् १६०५ ई०) को अकबर की मृत्यु के बाद सलीम जहांगीर के नाम से गद्दी पर बैठा।

सम्राट जहाँगीर ने गद्दी पर बैठते ही महाराजा वीरसिंह देव को बुला भेजा। वह बड़ी खुशी से आगरा चले और अपने साथ संग्रामशाह के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुत्र भारतशाह को भी लेते गये। ऐरछ में रामशाह से भी भेंट हो गई। यहां से इन्द्रजीत को भी इन्होंने साथ ले लिया। आगरा के पहुंचते ही सम्राट ने महाराज वीरसिंह देव को बड़े ही आदर से लिया और उत्साह पूर्वक भेंट की। पीछे से महाराज ने शाही दरबार में भारत शाह और इन्द्रजीत की सम्राट से भी भेंट करवाई। इसके पश्चात उसने महाराज को सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड का राज्य दे दिया। सात हजारी मनसब का सम्मान करते हुये परगने और बहुमूल्य परितोषिक देकर विदा किया। सम्राट ने जतारा भी दे दिया आगरे से विदा होकर महाराज ऐरछ आये यहाँ पर अन्य कुटुम्बियों के साथ रामशाह भी मिलने आये। पर बातों ही बातों में बिगाड़ हो गया। महाराज ने इन्हें बहुतेरा समझाया परन्तु वह पठारी वापस चले गये। और महाराज वीरसिंह देव भी पिपरहट आ गये। वहां पर अब्दुल्ला खां और दरिया खां मिलने आये। पीछे से राम-शाह ने पठारी को छोड़ दिया और वह वनगुवां में रहने लगे। इससे पठारी में वीरसिंह देव का अधिकार हो गया। इस प्रकार दोनों राजाओं के बीच में केवल आधा कोस का अन्तर रह गया। इसी समय महाराज वीरसिंह देव ने इन्द्रजीत के साथ अपने पुत्र जुझारसिंह को रामशाह के पास मिलने के लिये भेजा इससे फिर इन दोनों में मेल हो गया। पीछे से राजा रामा-शाह ने अपने नाती संग्रामशाह के पुत्र भारतशाह को बरेठी भेजा। इस व्यवहार से दोनों में सन्धि हो गई। इससे रामशाह के मन्त्रियों ने भारत-शाह को महाराज के पास ही रहने दिया। महाराज वीरसिंह देव और रामशाह से एकता हो गई थी। भारतशाह महाराज के पास था ही। अब इन्द्रजीत के आने पर रामशाह ओरछा चला आया। यहां से इसने अङ्गद प्रेमी और केशवदास मिश्र को चिरस्थायी सन्धि करने के निमित्त भेजा, किन्तु प्रेमा और अङ्गद ने सन्धि के बदले विग्रह करा दिया। इन दोनों ने राजा रामशाह और रानी कल्याण देवी के कान भर दिये जिससे इन्होंने भारतशाह को बरेठी से बुला लिया इसी समय से कुलनाश का अंकुर फूट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया और विग्रह शुरू हो गया वीरसिंह देव भारतशाह के चले आगे पर वि० सं० १६६३ में बरेठी से वीरगढ़ चले गये और उन्होंने बवीना पर अधिकार कर लिया। इधर भारतशाह के आ जाने पर रामशाह भी युद्ध की तैयारी करने लगा। यद्यपि केशवदास ने फिर भी समझाया पर इनको एक भी अच्छी नहीं लगी। महाराज वीरसिंह देव भीं अपनी सेना तैयार कर ओरछे पर आक्रमण का विचार करने लगे। इतने में जहांगीर ने कालपी के सूबेदार अब्दुल्ला खां को ओरछे पर आक्रमण करने भेज दिया। मुगल सेना के आते ही रामशाह ने इन्द्रजीत और राव भूपाल को युद्ध स्थल पर भेजा इन दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हो गया मुगल सेना भागने वाली थी कि महाराज वीरसिंह देव युद्ध स्थल पर पहुंच गये इनको देखते ही राव भूपाल शंकित हो उठे और इन्द्रजीत पहिले ही घायल हो मूर्छित हो गये।

इससे इनके साथी इन्हें रणभूमि से उठा ले गये। फिर क्या था मुगल सेना दुगने उत्साह से युद्ध करने लगी जिससे राव भूपाल के भी पैर उखड़ गए महाराजा वीरसिंह देव ने देखा कि कुलनाश हुआ ही चाहता है तब उन्होंने अपने सामन्त सुन्दर प्रधान को सन्धि करने के लिये रामशाह राजा के पास भेजा परन्तु राजा रामशाह वीरसिंह देव से नहीं मिले और अब्दुल्ला खां से मिलने रामशाह गए तो उसने रामशाह को गिरफ्तार कर लिया और दिल्ली कैद करके ले गया। इसका महाराज वीरसिंह देव को दुख हुआ अब इन्हें रामशाह को कैद से छुड़ाने की चिन्ता हुई इससे उन्होंने हरि को तो ओरछा के प्रबन्ध का भार दिया और राव भूपाल को बीहठ इन्द्रजीत को गड़ कुड़ार और प्रताप राव को बेंधा की जागीर देकर रामशाह को कैद से छुड़ाने के लिये आगरा चले गये। इनके जाते ही देवराय ने भारतशाह को साथ में लेकर पठारी पर अधिकार कर लिया और बेतवा किनारे के कई गाँव जला डाले। इनके जाते ही जहाँगीर ने वीरसिंह देव को मधुकरशाह का सारा राज्य दे दिया और रामशाह को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्देरी और बानपुर का राज्य दे दोनों में मेल करा दिया। महाराज को जब यहां की सब घटनाओं का हाल मालूम हुआ तब वह आगरे से चले आये और यहां आते ही शान्ति हो गई।

महाराज वीरसिंह देव के तीन विवाह हुये (१) शाहाबाद के दीवान श्यामसिंह घघेरे की कन्या अमृत कुंवरि से हुई इससे इन रानी के पाँच लड़के हुए जुझारसिंह, नरहरिदास, पहाड़सिंह, तुलसीदास, बैनीदास लड़कों ने जन्म लिया था इनमें से जुझारसिंह और पहाड़सिंह ओरछा के राजा हुए नरहरिदास को धामौनी, तुलसीदास को गड़ तथा बैनीदास को पहारी की जागीर दी गई। (२) दूसरा विवाह खैरवान के प्रमारसिंह की कन्या गुमान कुंवरि के साथ हुआ। इन रानी से चार पुत्र पैदा हुए और एक कन्या भी पैदा हुई। दिमान हरदौल को बड़ागांव, भगवन्तराव को दतिया चन्द्रभान को जैतपुर कोंच आदि परगने तथा किशुनसिंह को देवराहा मिला कन्या कुंजावति (कुंजकुंवरि) का विवाह बेरछा दतिया के राजा देवीसिंह राजा के साथ हुआ था इन्हीं की गद्दी पर भगवन्त राव राजा हुये थे (३) तीसरा विवाह शहर शाहबाद के पूरनसिंह घघेरी की कन्या पंचम कुंवरि के साथ हुआ था। इन रानी से तीन पुत्र पैदा हुए (१) बाघराज-टारौली के जागीरदार (२) माधवसिंह को खरगापुर जागीर दी गई (३) परमानन्द ओरछा ही उपस्थिति रहे।

उस समय महाराज के प्रधान योग्य सेनापति कृपारामसिंह गौर थे और पं० कान्हरदास ब्राह्मण मन्त्री थे।

वि० सं० १६७५ में श्री चतुर्भुज मन्दिर को पूर्ण करवाया था इस मन्दिर पर अमरेश द्वारा सवा मन सोने का कलश वि० सं० १६६३ (सन् १६०६ ई०) में चढ़वाया गया था उसी समय पन्ना के विशाल मन्दिर श्री जुगल किशोर (पन्ना) पर सवा मन सोने का कलश चढ़वाया था जो स्टेट पन्ना गजेटियर पृष्ठ १७४ पर ऐसा लिखा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस सवा मन सोने की चोरी अगस्त ७० से लगायत माह नवम्बर ७० तक क्रमश: होती रही थी। सन् १९७० में स्वर्ण कलश चोरी चला गया है। इसकी जांच हो रही है। अभी तक स्वर्ण कलश की चोरी का पता नहीं चला है।

दिनांक	१८/१९	अगस्त ७०	पहली	घटना चोरी की हुई	स्वर्ण कलश की
दिनांक	१२/१३	सितम्बर ७०	दूसरी	,,	,,
दिनांक	२२/२३	सितम्बर ७०	तीसरी	,,	,,
दिनांक	१३/१४	अक्टूबर ७०	चौथी	,,	,,
दिनांक	५/६	नवम्बर ७०	पांचवी	,,	,,

दिनाँक २७/२८ अक्टूबर सन् ७० को श्री चतुर्भुज मन्दिर ओरछा से तीन मूर्तियाँ अष्ठधातु की (श्री जगदम्बा अष्ठभुजा अष्ठधातु २२ कि० ६०० ग्राम, श्री राधाकृष्ण की जोड़ी मूर्तियां पीतल दो २० कि०) मंगलवार धनतेरस वि० सं० २०२७ को चोरी चली गई थीं जिसमें एक मूर्ति श्री कृष्ण भगवान की १५ कि० पीतल की थाना ओरछा द्वारा दिनांक २१-१२-७० को उक्त मन्दिर में वापिस आ गई थी।

दिनांक २५-८-७४ को थाना प्रेमनगर झांसी द्वारा एक मूर्ति अष्ठ-धातु श्री जगदम्बा अष्ठभुजा की २२ कि० ६०० ग्राम की पकड़ी गई तथा दिनांक ११-२-७५ को उक्त मूर्ति जगदम्बा अष्ठभुजा की थाना ओरछा में वापिस आकर दिनांक १९-३-७६ से मामला अदालत में चल रहा है।

दिनांक २७-२-७१ को श्री चतुर्भुज मन्दिर ओरछा के शिखर से लगभग ५५ मीटर की ऊँचाई से स्वर्ण कलश का शेष भाग खोखला शासकीय योजना से अपने स्थान से पूर्ण रूप से हटाया जाकर फिर ऊपर शिखर पर ही बंधवा दिया गया और दिनांक १८-६-७१ को उक्त स्वर्ण कलश का शेष भाग नीचे उतारा गया तथा मन्दिर में सुरक्षित हैं।

दिनांक २७-२-७१ को चोरी करने वालों के औजार कैंची सोना काटने वाली दो अरिया स्टील सोना काटने वाली श्री चतुर्भुज मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा के शिखर से नीचे सामान नीचे उतारा गया थाना ओरछा (झोला हरे रंग) में सामान जमा हो गया है।

दिनांक १६-३-७१ को नसैनी लोहा की बड़ी साइज की चोरी करने वालों की अदद तीन थाना ओरछा में सुरक्षित है।

आचार्य के रूप में केशव ने हिन्दी काव्य धारा की एक नई दिशा प्रदान की। यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि बुन्देलखण्ड का गौरव केशव ने ही बढ़ाया था।

वि.सं. १६६३ में जहांगीर स्वयं वीरसिंह के राज्य सिंहासन रोहण के अवसर पर ओरछा पधारा था। राजा ने इस उपलक्ष्य में बड़ा समारोह मनाया। फूलबाग उसकी स्मृति में सजाया गया। जहांगीर महल आज भी इस बात की याद दिलाता है। ओरछा के फूलबाग में एक विशाल प्रस्तरीय प्याला है जिसे वीरसिंह देव ने जहांगीर के स्वागत के उपलक्ष में मधुर मदिरा के लिये स्थापित किया था। राज्य की आमदनी दो करोड़ रुपया वार्षिक कर ली।

महाराज वीरसिंह जू देव महान धार्मिक व प्रजा पालक शासक थे इनकी न्यायप्रियता करुणा एवं सहानुभूति से बुन्देलखण्ड के इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। इनके राज्य में कुल ८१ परगने एवं एक लाख पच्चीस हजार गांव थे। तलवार के धनी होने के साथ-साथ महाराज एक कुशल शासक थे। राज्य संचालन का उन्हें पूरा-पूरा ज्ञान था। उन्होंने ऐसे अनेक लोकोपयोगी, सामाजिक एवं धार्मिक कार्य किये हैं जिनसे वे बुन्देलखण्ड के जनप्रिय शासक कहे जाते हैं। संक्षेप में उनके महान कार्य इस प्रकार हैं।

इक्यासी मन सोने की तुलादान

महाराज वीरसिंह जू देव के हृदय पटल पर भक्ति की तरंगें सदैव ही उठती रहती थीं महान् वीर योद्धा होने के अतिरिक्त वे एक भक्त हृदय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शासक थे। उन्होंने बुन्देलखण्ड के बाहर अन्य क्षेत्रों में भी मन्दिरों का निर्माण करवाया तथा अनेक धार्मिक कार्य किये हैं। उनकी अटूट ईश्वर भक्ति का जीता जागता उदाहरण है उनके कर कमलों द्वारा की गई इक्यासी मन सोने का तुलादान जिसने उन्हें सदा के लिये अमर कर दिया।

महाराज वीरसिंह जू देव तीर्थ यात्रा के लिए मथुरा गये थे। वहां पर वे ९ मन सोना दान करना चाहते थे। अपना यह लक्ष्य उन्होंने अपने ९ राजकुमारों को लिखा। उनके पत्र का आशय सभी राजकुमारों ने पृथक पृथक ९ मन सोना भेजने का लगाया। महाराज के सभी राजकुमारों ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए मथुरा में ८१ मन सोना भेज दिया। इस प्रकार ९ मन सोने के स्थान पर जब ८१ मन सोना इक्ट्ठा हो गया तब महाराज ने मथुरा के विश्राम घाट पर ८१ मन सोने का तुलादान किया। महाराज द्वारा तुलादान किये गये स्थान पर आज भी तुला स्थान पर उस तुला को देखकर कथा सुन सकते हैं।

इष्टपूर्ति यज्ञ एवम् ५२ इमारतों का निर्माण

महाराज वीरसिंह जू देव के शासन काल में अनायास दुर्भिक्ष पड़ गया। इस महान् दुर्भिक्ष का समाधान करने के लिये महाराज ने माघ सुदी ५ सं० १६७५ वि० के शुभ मुहर्त में इष्टपूर्ति यज्ञ करके ५२ इमारतों का शिलान्यास किया था।

"On Sunday thc 5th Magh Sudi V. S. 1675 December 1618 the foundation of 52 buildings are said to have been laid". Orchha State Gazettier P. 23.

इस मुहूर्त में बने हुए विशाल भवन आज भी अपने पुरातन वैभव का निनाद कर रहे हैं। कई तालाब अपने अतीत की कहानी कहते हुए बुन्देल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खण्ड को जलपान करा रहे हैं। उनके ५२ निर्माणों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :—

केशव देव का मन्दिर

१—यह विशाल मन्दिर, मथुरा में बनवाया था। जिसकी विशालता के सम्मुख सम्राट औरंगजेब इतना ओछा हो गया था कि अपनी धर्मान्धता के वशीभूत होकर सं० १७२६ वि० में उसने उसे तुड़वा दिया। इस मन्दिर के निर्माण में ३३ लाख रुपये लगे थे। उस मन्दिर की चौकी पर बनी हुई इमारत उस ऐतिहासिक निर्माण के स्थान मात्र का संकेत कर सकती है—

"इस मन्दिर के निर्माण में तेतीस लाख रुपया व्यय हुआ था। वीर सिंह देव ने बड़ा दान भी किया था। मथुरा के विश्राम घाट पर ८१ मन सोने की तुला का दान किया था।"

पन्ना स्टेट गजेटियर पृष्ठ नं० १७४ पर अंकित है।

२—दतिया का वीरसिंह देव महल नौ खण्डों का एक अत्यन्त विशाल भवन है। यह स्वास्तिक के आकार को आधार में लेकर विन्ध्याचल की एक पहाड़ी पर निर्मित हुआ है। दतिया में यह पुराना महल (Old Palace) के नाम से ही प्रसिद्ध है। 'मआसिलरुल उमरा' में वीरसिंह जू देव के परिचय में लिखा है कि 'दतिया का राजमहल इन्हीं का बनवाया है, जिसके चारों ओर ३४ फुट ऊंची दीवार दी गई है। इसके बनने में लगभग ९ वर्ष लगे थे। और ३५ लाख से अधिक रुपये व्यय हुए थे। (मआसिरुल उमरा फारसी का हिन्दी अनुवाद, १ पृष्ठ ३९९ दतिया स्टेट गजेटियर नं० ६७ पर अंकित)

इस विशाल भवन के किसी भी द्वार में किवाड़ नहीं लगे हैं तथा उसका एक भाग अपूर्ण है। इससे प्रकट होता है कि वीरसिंह देव की मृत्यु होते ही इस पर आगे निर्माण कार्य जारी न रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३-ओरछा का जहांगीर महल बहुत कुछ दतिया के पुराने महल से मिलता जुलता है। कहा जाता है कि यहां जहांगीर ने वीरसिंह का आतिथ्य स्वीकार किया था। अतः उन्हीं के नाम पर इस महल का नामकरण हुआ। आगरा में बुन्देला महल बनवाया था।

४-सन् १८५७ ई० के गदर में जिस दुर्ग से झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों पर गोले बरसाये थे वह किला वीरसिंह देव ने ही बनवाया था।

५-दतिया और भाँडेर के बीच निर्जन वन में चन्देवा की बावड़ी भी (५२) निर्माण में एक है। इसके चारों ओर विशाल दालाने सहस्त्रों व्यक्तियों को आश्रय दे सकती है। (६) उबरा के निकट (दतिया) सिन्ध नदी के किनारे श्री धूमेश्वर महादेव जी का विशाल मन्दिर बनवाया (७) मड़िया (टीकमगढ़) में बीर सागर (८) कुण्डार में सिंह सागर (९) दिनारे में देव सागर नामक तीन बड़े तालाव (१०) काशी में मणिकर्णिका घाट (११) विश्वेवर मन्दिर (१२) सिरौल में शिवालय (१३) ओरछा में चतुर्भुज मन्दिर। गढ़ी खरगापुर गढ़ी पलेरा

ब्रज में इन्होंने अनेक मन्दिर, घाट, कुण्ड आदि बनवाये जिनमें से अधिकांश अभी वर्तमान हैं। (१४) बृन्दावन में हरीराम व्यास की समाधि (१५) कालीदह घाट (१६) इमला घाट (१७) ऊंची हवेली (१८) महाप्रभु की वैठक (१९) बुन्देला वाग (२०) व्यास जी वगीची (यह यमुना की बाढ़ में बह गई) (२१) वैन कू (२२) वन खण्डेश्वर महादेव वृन्दावन के व्यास सेरा मुहल्ला में) (२३) चतुरदासी की बगीची (२४) वीरसिंह गली (वृन्द्रावन में राधा बल्लभ जी के मन्दिर के पास (२५) टकसर गली में एक मकान (२६) ब्रह्मकुण्ड (२७) सेठ दिवाली (२८) विश्राम घाट (२९) काशी शेषसायी भगवान का मन्दिर (३०) बरसाने में श्री लाड़ली जी का मन्दिर (३१) कोकिला वन में कुण्ड (३२) वन्सीवट में साकेत (३३) बरसाने का कुण्ड (३४) विमलादेवी का मन्दिर (३५) वृन्दावन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में श्री बिहारी जी का मन्दिर (३६) गोकुल में गोप कूप (३७) यमलार्जुन का मन्दिर (३८) नारद कुण्ड (कुशल सरोवर के पास) (३९) कल्लोल कुण्ड गोवर्धन (४०) गोपाल कुण्ड जतीपुरा (४१) गुलाल कुण्ड गाठौली (४२) चौरासी खम्भा का भवन (४३) गोविन्द कुण्ड, अनौर (४४) गोविन्द जी का मन्दिर अनौर (४५) मदन मोहन जी का मन्दिर महावन (४६) अक्रूर घाट पर देवालय (३७) दाऊ का मन्दिर हंसराज (४८) नर्मदातट पर मन्दिर और दुर्ग (४९) मोंठ में बावरी (५०) ओरछा का बगीचा फूलबाग (५१) आगरा में बुन्देला महल व बुन्देला बाग (५२) पिछोर खनियाधाना में किला बावरी आलाब।

बुन्देलखण्ड के संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ नं० १०० से १०१ तक ५२ गढ़ी का विवरण निम्न प्रकार से लिखा है—

१–गढ़ा २–मारुगढ़ ३–पचेलगढ़ ४–सिगोरगढ़ ५–आमोदगढ़ ६–कनोमागढ़ ७–बगमारगढ़ ८–टींपागढ़ ९–रामगढ़ १०–परतापगढ़ ११–अमरगढ़ १२–देवहारगढ़ १३–पाटनगढ़ १४–फतेहपुरगढ़ १५–निमुआगढ़ १६–भंवरगढ़ १७–बरगीगढ़ १८–घुनसौरगढ़ १९–चौराईगढ़ २० डोगरगढ़ २१–करबागढ़ २२–झझनगढ़ २३–लांकागढ़ २४–सीतागढ़ २५–दिवागढ़ २६–बंकागढ़ २७–पवई करहीगढ़ २८–शाहनगरगढ़ २९–घामौनीगढ़ ३०–हटागढ़ ३१ मड़िया दोगढ़ ३२–गढ़ाकोटा गढ़ ३३–शाहगढ़ ३४–गढ़पहरागढ़ ३५–दमोहगढ़ ३६–रेहलीगढ़ ३७–इटावागढ़ ३८–खिमलासागढ़ ३९–गनोरगढ़ ४०–झाड़ीगढ़ ४१–चौकीगढ़ ४२–राहतगढ़ ४३–मकरहीगढ़ ४४–कारोबानागढ़ ४५–कुरवाईगढ़ ४६–रायसैनगढ़ ४७–भवरसौगढ़ ४८–भोपालगढ़ ४९–उपदगढ़ ५०–पनागढ़ ५१–देवरीगढ़ ५२–गौरझामगढ़।

मंडला, जबलपुर, दमोह, बिलहरी, हुसंगाबाद, नरसिंहपुर, सिवनी छिन्दवाडा, नागपुर, साडार, बिलासपुर, भोपाल में स्थिति हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वि० सं० १५९८ से वि० सं० १६१० तथा वि० सं० १६७५ के माने गये हैं। यह नामावली ज० स० सो० बंगाल सन् १८३७ सफा ६४४ से ६४७ तक पुस्तक में लिखा है।

भौतिक ५२ भवनों की नींव डालने के साथ-साथ परोक्षरूप से अनगनित शिलान्यास किये। किला धामौनी, श्री लक्ष्मीजी का मन्दिर एवं श्री बनोवासी भगवान का मन्दिर ओरछा में बनवाये थे।

वीरसिंह जू का अद्भुत न्याय

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है महाराज वीरसिंह जू देव प्रजा के हितैषी और महान् न्याय प्रिय शासक थे। उन्हें सदैव प्रजा की सुख सुविधाओं का ध्यान रहता था। वे प्रजा की प्रत्येक बात को महत्व देते थे तथा उसी की इच्छानुसार कार्य करते थे। प्रजा के द्वारा अपने पुत्र की शिकायत किये जाने पर इन्होंने अपने पुत्र बाघराज को मृत्यु दण्ड दिया था। जिसकी घटना इस प्रकार है।

एक बार महाराज के राजकुमार बाघराज शिकार खेलने वन में गये। वन में उन्हें एक हिरण दिखाई दिया किन्तु कुछ समय पश्चात् ही राजकुमार की आंखों से वह हिरण ओझल हो गया। हिरण की तलाश में राजकुमार वन में आगे बढ़ते ही गये। कुछ दूर आगे जाने पर उन्हें एक साधु दिखाई दिया। राजकुमार ने साधु से हिरण का पता पूंछा तो साधु मौन रहा। साधु के मौन रहने का अर्थ यह लगाया कि मैं जिस मार्ग से जा रहा हूं हिरण इसी मार्ग से गया है क्योंकि राजकुमार ने साधु से यह पूंछा था कि 'महाराज जिस रास्ते मैं जा रहा हूं हिरण क्या इसी रास्ते से गया है ?' इस पर साधु की मौन स्वीकृति लेकर राजकुमार वन में आगे बढ़े। वे दिन भर हिरण को खोजते रहे, किन्तु हिरण न मिला। अन्त में सायंकाल क्रोध में चूर होकर राजकुमार वापिस लौटे उन्हें व्यर्थ परेशान करने का दोषी साधु को मानकर उस पर अपने भूखे शिकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुत्ते छोड़ दिये। शिकारी कुत्तों ने साधू को जीवित ही नोचकर उसका मांस खा लिया। फलस्वरूप साधू के प्राण पखेरू उड़ गये। शिकार खेलने के लिए बाघराज राजकुमार के साथ प्रजाजन, दरबारी व सैनिक आदि गये थे। सभी को राजकुमार का यह दुष्कर्म अखरा गया।

वन से वापिस लौटते ही प्रजाजनों ने महाराज से राजकुमार की शिकायत की और सारा वृतान्त सुनाया। राजकुमार के अपराध को सुनकर महाराज ने प्रजाजनों से कहा कि तुम धैर्य धारण करो, वीरसिंह के राज्य में कभी अन्याय नहीं हो सकता। मैं अपने पुत्र के साथ पक्षपात न करूंगा।"

दूसरे दिन महाराज ने राज दरबार किया। जिसमें अपने सभी दरबारी, मंत्री और प्रजाजनों को आमन्त्रित किया। दरबार भर जाने पर महाराज ने अपने अपराधी राजकुमार को बुलाया और उससे सही-सही बात पूंछी। उपस्थित दरबारियों से भी महाराज ने घटना की जानकारी ली और अन्त में भरे दरबार के मध्य अपने पुत्र का निर्णय घोषित करने का विचार करने लगे।

यह दुखद समाचार सुनकर महाराज का हृदय आहत हो उठा था। हिन्दुत्व ने अंगड़ाइ ली, क्षत्रित्व ने ललकारा। न्याय ने उन्हें आत्म चिंतन के लिए कहा एवं विवेक ने उन्हें सही मार्ग-दर्शन दिया। इसके फलस्वरूप महाराज ने बुन्देला शासकों की लाज रखने के लिए एवं प्रजा को सही न्याय देने के लिये अपने दरबारियों एवं प्रजाजनों के सामने अपने बाघराज राजकुमार को मृत्यु दण्ड देने का निर्णय सुनाया। यह अद्भुत न्याय सुनकर सभी आश्चर्य चकित होकर महाराज के न्याय की सराहना करने लगे। महाराज के आदेशानुसार राजकुमार बाघराज को मृत्युदण्ड दिया गया। इस प्रकार न्याय की वेदिका पर अपने लाड़ले बेटे एवं गोद के शृंगार को होम कर महाराज ने अपने स्वाभिमान की रक्षा कर बुन्देलों का नाम अमर कर दिया जो सदियों तक कायम रहेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री महात्मा अनूपगिरि और राजकुमार वाघराज का स्मारक नाभ के दो स्तम्भ हैं सावन भादों से आज तक पुकारे जाते हैं। यह घटना वि० सं० १६८० सन् १६२३ ई० की मानी गई है। सावन-भादों की उपाधि दी गई।

जब आप ओरछा जायें तो वहां के निवासी सुरंगों के बारे में जिन्हें भोंयरा कहा जाता है, कहानियां सुनाते हैं। फूलबाग में ऐसे एक भोंयरे का द्वार अच्छी हालत में विद्यमान है। उपयोग में न आने से यहाँ भोंयरे समयानुसार भुला दिये गये। इनकी हालत खस्ता हो गई और उनमें प्रवेश करना कठिन हो गया। भूले भटके घुस जाने पर दुर्घटनायें हो जाती हैं। अतः इन्हें बन्द करवा दिया गया। उस काल में जबकि किले की रक्षा को सुदृढ़ इकाई माना जाता था, भोंयरों का अपना महत्व था। तब किले ऐसे बनते थे कि शत्रु का आक्रमण होने पर किले के फाटक बन्द कर महीनों तक उनका सामना किया जा सके। किले का घेरा पड़ने पर किले में बन्द लोगों का बाहर से सम्पर्क टूट जाता था सुरङ्गों के द्वारा यह सम्पर्क गुप्त रीति से सम्भव था। किले के निर्माण के साथ-साथ इन सुरङ्गों का भी निर्माण कराया जाता। गढ़ टूटने की दशा में इन गुप्त मार्गों से राज घराने के लोग बच निकलते। गुप्त भेंट वार्ताओं के लिए इनका उपयोग किया जाता। इन मार्गों के बारे में खास लोगों को ही पता रहता था। किला जहांगीर राजमहल शीशमहल के नीचे बहुत विशाल सुरंग और भोंयरे अच्छी हालत में बने हैं। जाने के मार्ग गुप्त बने हैं। इन सुरंगों द्वारा नीचे ही नीचे जंगल तक जाने का रास्ता है। प्रत्येक इमारत के नीचे तहखानें बने हुए हैं। किले से फूलबाग, किले से प्रबीणराय के भवन तक रास्ते हैं।

ओरछा के इतिहास में उन्नति काल का श्री गणेश हुआ। बिन्दा और महेबा के जागीरदार महाराज के लिये उनकी शक्ति का स्तम्भ बने महाराज को उन पर गर्व था। वह भी उनके इशारे पर मृत्यु का भय खाने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिना कठिन से कठिन कार्य हेतु कमर कसे रहते। पूरी सेना का इतना भय न था कि जितना कि इनका किसकी मजाल जो उनके सामने आंख उठा सके। कहने के लिए इन्हें अधिकृत रूप से कोई पद तो न दिया गया पर अपने अपने क्षेत्र की हर कार्यवाही में इनका हाथ रहता। बिन्दर की रुचि रिसाले में थी। नियमित रूप से कुछ न होते हुये भी बहुत कुछ थे।

महाराज वीरसिंह जू देव ने अपने शासनकाल में शान्ति व्यवस्था की स्थापना की थी।

चम्पतराय को महेवा (नुना) की जागीर मिली थी। यह जागीर भी ओरछे के राज्य में थी। परन्तु चम्पतराय अपनी शूर वीरता के कारण बहुत विख्यात हो गये थे इन्हें वीरसिंह देव का मुगलों के अधीन रहना अच्छा नहीं लगता था। इससे वीरसिंह देव ने जहांगीर के मरते ही शाह जहां को इनकी सलाह से कर देना बन्द कर दिया और ओरछे को स्वतन्त्र कर लिया। यह बात शाहजहां को अच्छी न लगी इससे उनने बाकी खां नामक सरदार को एक बड़ी सेना साथ में देकर बुन्देलों को वश में करने के लिये भेजा। इस समय चम्पतराय, वीरसिंह देव तथा अन्य बुन्देले एक हो गये। इससे बाकी खां की इस बड़ी सेना को हार खानी पड़ी। बाकीखां हार मानकर वापस चला गया। और बुन्देलों की स्वतंत्रता कायम रही। इसी युद्ध के समय जबकि बाकीखाँ अपनी फौज लेकर हार कर वापस जा रहा था, चम्पतराय का बड़ा लड़का सारवाहन उसे मिला। वह शिकार खेलने गया था। बाकीखाँ ने उस अकेले लड़के को जिसके पास थोड़ी सी सेना थी घेर लिया और उसे युद्ध में मार डाला, सारवाहन था तो छोटा पर उसने समर भूमि में उसके छक्के छुड़ा दिए।

शाहजहां को जब बाकीखां की हार मालूम हुई तब उसे बहुत फिक्र हो गई। मुगल लोग भारत वर्ष में अपने बराबर किसी को बलवान नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समझते थे। और कोई ऐसा राज्य भारतवर्ष में न था जो मुगलों की सेना को हरा सके। परन्तु ओरछा महाराजा वीरसिंह देव चम्पतराय ने शाही सेना को पराजित कर दिया। इसका कारण चम्पतराय की स्वतंत्र प्रियता और आत्म विश्वास था चम्पतराय उस समय भी शाही सेनाओं का करते रहे जिस समय उनके पास बहुत सेना थी। बुन्देलों की विजय देख शाहजहां से बिलकुल न रहा गया और वह स्वयं अपने बड़े सेना नायकों को साथ लेकर सम्पूर्ण सेना के साथ आक्रमण करने ओरछा आया शाहजहां की सेना ने भरपूर प्रयत्न किये परन्तु ओरछे पर विजय नहीं हुई उस समय चम्पतराय की विलक्षण बुद्धि और शौर्य ने ही ओरछे की विजय कराई। बादशाह शाहजहां अपनी साठ हजार सेना सहित चम्पतराय से हार मान कर दिल्ली वापस चला गया और बुन्देलखण्ड बुन्देलों का स्वतंत्र राज्य हो गया। शाहजहां ने ओरछे पर राज्य बुन्देलखण्ड को अपने सम्राज्य में फिर से ले लेने का उपाय न छोड़ा वह चारों तरफ से सेना इकट्ठी करने के प्रयत्न में लग गया। आगरे से मुहब्बत खां, दक्षिण से खानजहान और प्रयाग से अब्दुल्ल खां आये। सारे मुगल साम्राज्य की सम्पूर्ण शक्ति फिर से ओरछा राज्य बुन्देलखण्ड पर आर्कषित हो गई। चम्पतराय ने शाही सेना का सामना एक खुले मैदान में करना ठीक न समझा, न उन्होंने संधि ही की। अपने शौर्य से स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के प्रण अड़े रहे। मुसलमान अपनी असख्य सेना लेकर बुन्देलखण्ड के बड़े-बड़े मैदानों में पड़े-पड़े बुन्देलों की बाट देखते रहे और बुन्देला अपनी थोड़ी सेना में से कुछ किले के भीतर और कुछ मुगलों के मार्ग की घाटियों में रहकर लड़ाई की बाट देखने लगे कुछ दिनों बिना युद्ध के ही बीत गये इस सेना को बहुत दिन तक मुगल लोग यहां पर नहीं रख सके। वह वापिस जाने की सोच ही रहे थे बुन्देलों के प्रधान सेनापति चम्पतराय ने शीघ्र आक्रमण कर दिया इस युद्ध में मुगलों के प्रसिद्ध सेना नायक शाहबाज खां, बाकी खाँ फतेह खां मारे गये। इस प्रकार फिर मुगलों की हार हो गई और बुन्देलों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की विजय हुई । बुन्देलों की एक बार विजय हुई । उसी समय बुन्देलों ने सिरौंज के राजा को अपने अधिकार में कर लिया भिलसा तथा उज्जैन लूट कर बहुत सा माल ले आये । शाहजहां ने यह सुनकर फिर ओरछा पर वि० सं० १६८४ में चढ़ाई करने का विचार किया अबकी बार मुहम्मद सुभानु, वली बहादुर खां, अब्दुल्ला खां और नीरौज खां सेना नायकों को यह कार्य सौंपा गया । लोगों ने सम्पूर्ण युद्ध की तैयारी करके ओरछा पर आक्रमण किया बुन्देलों ने फिर वीरता से सामना किया शाहजहां ने अब बुन्देलों से लड़ना ठीक न समझा और सन्धि की बातचीत शुरू कर दी । महाराज वीरसिंह देव का इसी समय वि० सं० १६८४ में देहान्त हो गया इससे शाहजहां ने वीरसिंह के लड़के जुझारसिंह को ओरछे का महाराजा स्वीकार किया और शाहजहां ने चन्देरी के राजा भारतशाह, ओरछे के राजा जुझारसिंह और उनके भाई पहाड़सिह, नरहरिदास धामौनी के राजा को चार हजारी मनसव दिये चम्पतराय की वीरता की सराहना करते हुये शाहजहां ने कोंच की जागीर प्रदान की और चम्पतराय की गिनती शाही दरबार के अमीरों में करना स्वीकार किया । इस प्रकार दिल्ली दरबार ने ओरछा को स्वतन्त्र राज्य माना और चम्पतराय के शौर्य की प्रशंसा की ।

चम्पतराय के साथ एक वीर योद्धा का नाम बिन्दा था यह हमेशा अपने स्वामी चम्पतराय की सेवा में रहता था जब चम्पतराय देहली दरबार में रहने लगे थे । चम्पतराय ने उस समय बिन्दा को अपनी तरफ से महेबा का शासक बना दिया था । महेबा में बिन्दा सुखी जीवन बिताने लगा था । अपना समय भगवत भजन में व्यतीत करता था । वि० सं० १६६२ में बिन्दा के एक पुत्र हुआ था उसका नाम बिन्दा का बेटा प्रचलित था । यह भी अपने पिता की तरह चम्पतराय को अपना स्वामी मानता था ।

वि० सं० १६८५ में बिन्दा ने चम्पतराय के साथ बड़ी वीरता दिखलाई थी जुझारसिंह के प्रथम विद्रोह में बिन्दा शामिल था वि० सं० १६९० में बिन्दा ने जुझारसिंह के द्वितीय विद्रोह में सहायता दी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(६) महाराज जुझारसिंह

महाराजा जुझारसिंह वि० सं० १६८४ से १६९१ वि० तक अर्थात् सन् १६२७ ई० से १६३४ ई० तक जन्म वि० सं० १६२८।

महाराजा वीरसिंह प्रथम की मृत्यु के बाद आपके जेष्ठ पुत्र जुझारसिंह वि० सं० १६८४ में राज्य के अधिकारी हुए।

जहांगीर की मृत्यु के बाद शाहजहां मुगल सम्राट हुआ। जुझारसिंह आगरा दरबार में उपस्थित रहा करते थे। इनके छोटे भाई हरदौल ओरछा में ही रहते थे, पिता की मृत्यु पर हरदौल ने राज–काज की देख भाल की। उनका मन साफ था। शासक वह जुझारसिंह को ही मानते थे, स्वय शासक बनने की न तो उन्होंने कामना की न प्रयत्न। राज्य को बड़े भाई की अमानत मान उसने राज्य भार सम्भाला। जुझारसिह की अनु–उपस्थिति के कारण ही उन्हें ऐसा करना पड़ा। वह राज्य के स्वाभिमानी सेवकों से भली भांति परिचित थे, अतः सबको यथावत् रहने दिया। बिन्दा का सम्मान जैसा का तैसा रहा।

जुझारसिंह के आगरा आवास की अवधि में एक अज्ञात खंगार ने जुझार की अच्छी सेवा की। जुझारसिंह को उसने प्रसन्न कर रखा था। वह चाहता था जुझारसिंह शीघ्र ओरछा पहुंच जायें।

शाहजहाँ को बुन्देलों की बढ़ी हुई शक्ति का पता था। वह अभी अभी सिंहासन पर बैठा था और अपनी जड़ें मजबूत करना चाहता था। आगरा के समीप वह बुन्देलों को और न बढ़ने देना चाहता था उनका शासक उसके दरबार में बना रहना नीतिपूर्ण था। राज्य के कार्य वाहक शासक से खतरा न होगा। ऐसा शाहजहाँ का विचार था। शासक जुझार सिंह कहलायें पर रहें आगरा में ही। शाहजहाँ ने निर्णय किया। जुझारसिंह प्रतीक्षा करते रहे कि सम्राट स्वयं उन्हें ओरछा जाने की अनुमति दें,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर उसके आसार न दिखाई दे रहे थे। वह और धैर्य से काम लेते पर खंगार को धैर्य न था। उसने जुझारसिंह को उकसाना आरम्भ किया। जुझारसिंह को खंगार की बात जंच गई। वह ओरछा आ गये। उनका इस प्रकार चला आना उनके लिए कितना घातक सिद्ध होगा उन्हें अनुमान न था।

ओरछा आकर खंगार ने सबसे पहला प्रयत्न यह किया कि वह लोग जिन्हें वह अपना सबसे बड़ा विरोधी मानता था दरबार से दूर हट जाय। अपने प्रयत्न में सफल भी हो जाता परन्तु हरदौल और अन्य सरदारों के कारण वह कुछ न कर सका। इन लोगों ने महाराज को समझाया कि विपत्ति में काम आने वाले उन स्वामिभक्त कुशल लोगों को न हटाया जाय। महाराज को झुकना पड़ा। खंगार ने महाराज को आगाह किया कि जब तक दरबारी पुराने ही बने रहेंगे हरदौल के आगे महाराज की स्थिति हीन बनी रहेगी। दोनों भाइयों में फूट का बीज बोने के अतिरिक्त खगार को कुछ हासिल न हुआ।

इसी समय महेबा (नुना) के जागीरदार चम्पतराय की सलाह से जुझारसिंह ने कर देना बन्द कर दिया। शाहजहां के पास बढ़ा चढ़ाकर सूचना पहुंचाई गई थी। सम्राट जुझारसिंह की अवज्ञा से नाराज तो था ही यह समाचार पर और क्रोधित हो उठा। जुझारसिंह ने स्पष्टीकरण देना चाहा पर उसका कथन तोड़ मरोड़ कर सम्राट को जो उसके विरुद्ध भड़क चुका था, और भड़काया गया। आगरा जाने का दरवाजा बन्द हो गया। सन् १६२८ ई० में जुझारसिंह को विद्रोही घोषित कर दिया गया।

वि० सं० १६८५ में जुझारसिंह के प्रथम विद्रोह के नाम से जाना सं० १६८५ वि० में शाहजहाँ ने महावतखाँ के अधीन सेना ओरछे पर चढ़ाई करने भेजी साथ में नरवर का राजा रामदास, दतिया का राजा भगवन्तराय, चन्देरी का भारतशाह, कालपी का सूबेदार अब्दुल्ला खां और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐरच के जागीरदार पहाड़सिंह अपनी सेना सहित ओरछे पर चढ़ाई करने आ गये थे। इसके अतिरिक्त खानेजहां भी अपनी सेना सहित आ गया। इस सेना को देखते ही जुझारसिंह ने सन्धि कर ली। बहुत सा इलाका भी छीन लिया। इसके उपलक्ष में पहाड़सिंह को शाही डंका शाहजहाँ की तरफ से दिया गया।

वि० सं० १६८६ में खानजहाँ ने बगावत की तब उसे धौलपुर के सूबेदार अब्दुल्ला हसन ने उसे युद्ध में पराजय किया तब वह चम्बल पार करके ओरछे राज्य की सीमा में प्रवेश कर गया उस समय जुझारसिंह दक्षिणी में गये थे व वापिस ओरछा आ गये ऐरच से पहाड़सिंह, धमौनी से नरहरिदास, जैतपुर से चन्द्रभान, दतिया से भगवन्तराय को शाहजहाँ ने खानजहाँ को पकड़ने सेना भेजी। राजौरी नामक स्थान पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में नरहरिदास तथा बहादुरखाँ मर गये और खानजहाँ लड़ाई में हारकर दक्षिण को चला गया।

वि० सं० खानहजाँ दक्षिण हैदराबाद से भागकर नर्वदा उत्तर धरमपुरी (मालवा) में ठहरा। वहाँ के सूबेदार अब्दुल्ला खाँ और मुजफ्फरखाँ ने उसे मार भगाया। भाडेर के पास नीमी गांव में युद्ध में भाग खड़ा हुआ और कालिंजर के पास बरा नामक ग्राम में वह मारा गया इस पर चम्पतराय को ही पंच हजारी मनसब शाहजहाँ ने प्रदान किया।

उस समय बिन्दा और उसका बेटा भी चम्पतराय के साथ में युद्ध करने गया था। बिन्दा का देहली दरबार में अच्छा सम्मान था। वीर सामन्तों में इसकी गणना थी। बिन्दा सदैव चम्पतराय का शुभ चिन्तक और सच्चा स्वामी भक्त था।

जुझारसिंह ने अभी इतना आत्म सम्मान न खोया था कि अपमान सहता दी जाय। वह आने वाली विपत्ति का सामना करने को तैयारी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जुट गया। युद्ध के मामले में जुझारसिंह ने उस नीति से काम न लिया जो वीरसिंह (प्रथम) ने अपनाई थी। उसके अनेक कारण थे। उस समय बुन्देला शक्ति संगठित न थी जबकि अब बुन्देलखण्ड का विशाल राज्य बन चुका था। इस समय शाहजहां गद्दी पर बैठा ही था और उससे अधिकार प्राप्त होने की आशा न थी। वह अपने प्रतिद्वन्दियों से निपट चुका था। जुझारसिंह का ऐसा कोई मित्र न था जैसा कि वीरसिंह (प्रथम) का जहांगीर। यदि जुझारसिंह ओरछा छोड़ भी जाता और शाहजहां को कब्जा कर लेने देता तो शीघ्र ही मुक्ति की आशा न थी। यह भी निश्चित न था कि शाही फौज जुझारसिंह का पीछा छोड़ देगी। अकबर का ध्येय था वीरसिंह को दण्ड देना शाहजहां की मशा थी बुन्देलों की वड़ी शक्ति को नष्ट करना। युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। सं० १६८५ वि० (१६२८ ई०) में बुन्देलों के दमन हेतु शाही फौज तीन ओर से आगे बढ़ी। महावतखां खान-खाना अन्य बड़े-बड़े सहकारी सेनापतियों के साथ उत्तर की ओर बढ़ा। खानजहाँ कई सरदारों के साथ मालवा से चन्देरी होते हुए बढ़ा। उसकी सहायता के लिए कई हिन्दू सरदार नियुक्त किये गये थे। एक ओर बड़ी सेना कन्नौज के जागीरदार फीरोज जंग के अधीन पूर्व से बुन्देलखण्ड में घुसी। पूरी शाही फौज में सब मिलाकर सत्ताइस हजार सवार छः हजार पैदल और पन्द्रह सो बन्दूकची थे। जुझारसिंह ने भी अपनी सेना सुदृढ़ कर ली थी। और युद्ध सामग्री इकट्ठी कर ली थी। पर उसमें इतनी बड़ी सेना का सामना करने की शक्ति न थी। शत्रु की अधिक शक्ति के समक्ष भी वह प्राण पण से रक्षा हेतु कटिबद्ध था।

मुगलों के पूर्वज मध्य एशिया से आये थे। वहां के निवासी खाना बदोशी जिन्दगी बसर करते हैं। इसलिए शाही सेना पहाड़ में रहना पसन्द करती थी। पड़ाव एक जंगम नगर समान होता था। जिसमें सब प्रकार की सुविधायें प्राप्त रहती। अफसरों की बीबियां तथा उनकी प्रेमिकायें भी पड़ाव के साथ ही साथ रहती। बिन्दा आदि की योजना यह थी कि ऐसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पड़ाव में छुट-पुट हमले कर अव्यवस्था फैलाई जाय। शाही सेना एक तो ओरछा तक पहुंचे ही नहीं। यदि पहुंचे भी तो क्षीण होकर ताकि महाराज की विजय की सम्भावना बढ़ जाय। बिन्दा और उसके साथी अपने ध्येय में शायद सफल हो जाते। परन्तु पूर्वाभास होने के कारण शत्रु सतर्क था। उन्होंने प्रत्येक दिशा से आती फौज को दो-दो दलों में विभक्त कर दिया। मुख्य दल बड़ा और दूसरा छोटा रक्खा गया। छोटी टुकड़ी आगे रखी गई और बड़ा दल पीछे। उसका आशय यह था कि छिपे हुए बुन्देले यदि आक्रमण करें तो छोटी टुकड़ी में उलझे रहेंगे और बड़ा दल मार्ग बदलकर ओरछा की ओर बढ़ जायेगा। हुआ भी यही। बिन्दा आदि ने मार्ग में रुकावट डाली। पर वे अग्रिम दल को शत्रु की पूरी फौज समझने की भूल करते रहे।

जब बिन्दा आदि सोच रहे थे कि वह सफलता पूर्वक शाही फौज का मार्ग अवरुद्ध किये थे, शत्रु सेना ओरछा पहुंच चुकी थी। युद्ध हुआ और बुन्देली सेना के दो तीन हजार आदमी मारे गए। किले पर शाही सेना का अधिकार हो गया। महाराज जुझारसिंह को आत्म समर्पण करना पड़ा।

जुझारसिंह शाहजहाँ के सामने हाजिर हुआ। उसे १००० मुहरें नजर में देनी पड़ी और १५ लाख रुपये जुर्माने में। इसके अतिरिक्त ४० हाथी भी देने पड़े। उसके पास इतनी जागीर रहने दी गई ४००० जात और ४००० सवार के पद के लिए उपयुक्त थी शेष राज्य खानजहाँ लोदी, अब्दुल्ला, सैयद मुजफ्फर खाँ और राजा पहाड़सिंह बुन्देला के बीच बांट दिया गया। जुझारसिंह को दक्षिण की चढ़ाई में सम्राट की सहायता के लिए २००० सवार और २०० पैदल सैनिक तैयार रखने की आज्ञा भी दी गई। शर्तें अत्यन्त अपमानजनक थीं। पर विवश हो स्वीकार करनी पड़ी।

बुन्देले हार अवश्य गये थे पर उनका मनोबल न टूटा था। विद्रोह करने के फलस्वरूप जुझारसिंह को बड़ी क्षति उठानी पड़ी थी। उनका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य सीमित कर दिया। उस पराजय का अपमान उसे खटकता रहा। वह अपने खोये राज्य को पुनः पा लेना चाहता था। बादशाह की शक्ति के समक्ष यह असम्भव-सा था। राजा हिम्मत न हारा। जुझारसिंह ने चौरा-गढ़ पर चढ़ाई कर वहां का विशाल कोष हस्तगत किया था।

वि० सं० १६८९ में जुझारसिंह के पुत्र विक्रमाजीत ने दौलताबाद लेने के समय बड़ी शूरता दिखलाई थी। इससे शाहजहां ने प्रसन्न होकर इसे और पहाड़सिंह तथा पहाड़ी के वैनीदास और चतुर्भुज को अच्छा परितो-षिक दिया विक्रमाजीत को दो हजारी मनसब और युवराज को पदवी शाहजहां ने प्रदान की।

वि० सं० १६९० में जुझारसिंह ने गौंडवाना के राजा प्रेमशाह और उसके मन्त्री उदय बाजपेई को मार डाला और उसका किला चौरागढ़ अपने राज्य में मिला लिया। इसपर प्रेमशाह के लड़के हृदयशाह का पक्ष लेकर शाहजहां ने वि० सं० १६९१ में ओरछा पर चढ़ाई की। राजा जुझारसिंह वहां से धामौनी गया। परन्तु शाही सेना ने उसका पीछा किया जिससे चौरागढ़ होता हुआ वह चांदा की ओर चला गया। यहां पर भी शाही सेना ने इसका पीछा न छोड़ा। अन्त में वह अपने कुटम्बियों को दक्षिण की ओर भेजकर जंगल में जा छिपा। उस जंगल में गौड़ों ने जुझारसिंह तथा उसके लड़के विक्रमाजीत को पकड़कर बड़ी निर्दयता से वि० सं० १६९१ में मार डाला और खानजहाँ ने दोनों के सिर काट कर शाहजहां के पास भेज दिये। इसके बाद जुझारसिंह का छोटा लड़का दुर्गमान और विक्रमाजीत का लड़का दुर्जनशाल मुसलमान बनाए गए और इनके नाम इस्लाम कुलीखां तथा अली कुलीखां रखे गये छोटा लड़का भी जो गोलकुन्डे में उदयभान और श्याम दौआ के पास था मुसलमान बनाया गया और इस्लाम कुलीखां के साथ पढ़ने भेज दिया गया। उदयभान और श्याम दऊवा मुसलमान होने से इन्कार करने पर मारे गए इस समय सेनापतित्व औरंगजेब को दिया गया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
था और उसकी मदद के लिए अब्दुल्ला खां बहादुर फीरोज जंग और खान दौरान के सिवाय चन्देरी के राजा देवीसिंह रीवां के बघेल राजा अमरसिंह एरच के पहाड़सिंह और जैतपुर के चन्द्रभान आये थे।

(७) महाराजा देवीसिंह

सन् १६३४ ई० से सन् १६३६ तक

वि० सं० १६९२ सन् १६३५ ई० में बल्देवगढ़ का किला और तालाब बनवाया है तालाब के मध्य मड़िया में ऐसा शिला लेख लगा है।

महाराजा देवीसिंह वि० स० १६९१ से वि० सं० १६९३ तक वि० सं० १६६१ में राजा देवीसिंह ने ओरछा की चढ़ाई के समय शाही सेना का साथ दिया था इससे शाहजहां ने जुझारसिंह के मारे जाने के बाद देवीसिंह को ओरछा का राजा बनाया था। पर वह शान्ति स्थापित न कर सका इससे वि० सं० १६९३ में वह ओरछा की गद्दी से विमुख करके चन्देरी वापिस कर दिया।

(८) महाराजा पृथ्वीराज

महाराज पृथ्वीराज (सन् १६३६ ई० से सन् १६३७ ई० तक) (वि० सं० १६९३ से वि० सं० १६९४तक)। ओरछा गजेटियर में नाम पृथ्वीसिंह प्रथम लिखा है।

महाराजा जुझारसिंह का छोटा लड़का पृथ्वीराज को शाहजहां ने ओरछा की राजगद्दी पर बैठाया किन्तु वह छोटा बालक था इससे ऐसे कठिन समय में जबकि चम्पतराय के समान योद्धा, जिसके आक्रमणों को मुगल सेना भी न रोक सकती थी, मुँह बाये ओरछे को निगलना चाहता था ऐसे छोटे बालक प्रवन्ध होना कठिन था और भी अराजकता छा गई। इससे वि० सं० १६९४ में कैदकर ग्वालियर भेज दिया गया। इसके कैद होते ही चम्पतराय ओरछा की गद्दी पर आसीन हुये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(९) महाराजा चम्पतराय

महाराजा चम्पतराय (सन् १६३७ ई० से सन् १६४१ तक) वि० सं० १६९४ से वि० सं० १६९८ तक चम्पतराय ओरछा के महाराजा होते ही सारी सेना पर छापे मारना प्रारम्भ कर दिये। अन्त में शाहजहां ने हार मानकर चम्पतराय को दबाने के लिए शाहबाज खां के सेनापतित्व में एक बड़ी सेना भेजी और उसकी सहायता के लिये फत्तो खां और बाकीखां भी आये, किन्तु ऐसी बड़ी सेना भी चम्पतराय के समाने न ठहर सकी। और हार मानकर वापिस चली गई। इसके जाते ही चम्पतराय सिरौंज-भेलसा धार उज्जैन को लूटते हुए धामौनी आये। इस समय वहाँ पर सरदार खां रहता था उसे अपने प्राण बचाना कठिन हो गया। अन्त में उन्होंने धामौनी को लूट लिया और ग्वालियर पर छापा मारा। इस तरह से उन्होंने नर्मदा से लेकर चम्बल के हाते तक के देश लूट लिये। इनके आक्रमणों की खबर शाहजहां को मिली तब उसने खानजहां के नेतृत्व में एक बड़ी सेना फिर चम्पतराय को दबाने के लिये भेजी। इसकी मदद के लिए सैयद मुहम्मद बहादुर खां और अब्दुल्ला खां भी आये। पर चम्पतराय का कुछ न कर सके। हार मारकर वापिस चले गये। इस तरह लगातार चार वर्ष तक परेशान होने के पश्चात् वि० सं० १६९८ में शाहजहां ने ओरछा का राज्यकार्य पहाड़सिंह को सौंप दिया।

वि० सं० १६९५ (सन् १६३८ ई०) में महाराजा चम्पतराय ने अपने राज्य शासन काल में श्री जुगलकिशोर भगवान की मूर्तियां ओरछा से ले जाकर पन्ना राज्य में विराजमान कराई विशाल मन्दिर पन्ना में अब तक विद्यमान है।

(१०) महाराजा पहाड़सिंह जन्म वि. सं. १६४५

महाराजा पहाड़सिंह (सन् १६४१ ई० से सन् १६६३ ई० तक) वि० सं० १६९८ से वि० सं० १७२० तक) शाहजहां ने वि० सं० १६९८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में पहाड़सिंह को ओरछे की गद्दी दे दी थी। पश्चात् उसने इसे पांच हजारी मनसब दिये और दो हजार सवार रखने की आज्ञा दे दी। पहाड़सिंह से मिलने के लिये चम्पतराय महेबा से आए और इस्लामाबाद (जतारा) में पहाड़सिंह ने उनका बड़ा स्वागत किया। पहाड़सिंह का एक बड़ा विश्वासी मन्त्री नसीमद्दौला नामक मुसलमान था बुन्देलों का यवनों के विरुद्ध आन्दोलन इसे पसन्द नहीं था। और चन्देरी वाले पहिले ही से ओरछा से असन्तुष्ट थे। इतना ही नहीं किन्तु इन्होंने मुसलमानों और गौड़ लोगों को ओरछा के विरुद्ध सहायता भी दी थी। परन्तु ओरछा के राजा और चम्पतराय का मेल ही इस समय बुन्देलखण्ड की रक्षा कर रहा था। ओरछा के मन्त्री नसीममुद्दौला ने इसे भी नष्ट कर देना चाहा चम्पतराय पहाड़सिंह का बहुत मान करते थे और उनके नेतृत्व में रहना स्वीकार करते थे परन्तु चम्पतराय की बहादुरी किसी से छिपी न थी। राज्य भर में जितना मान चम्पतराय का था उतना और किसी का न था। इससे पहाड़सिंह को ईर्ष्या उत्पन्न हुई और बजीर नसीमुद्दौला भी समय समय पर उनके कान भरा करता था एक दिन उसने चम्पतराय के मारने की सलाह दी। पहाड़सिंह उसके कहने में आ गया और निमन्त्रण के बहाने चम्पतराय को बुलाकर उसने भोजन में विष देने का विचार किया चम्पतराय को निमन्त्रण भेजा गया वह ओरछा आये। इस समय पहाड़सिंह ने बड़ा स्वागत किया परन्तु भोजन के समय किसी कारण से इनके भाई भीम को सन्देह हो गया। इससे उसने अपने पराक्रमी और वीर भ्राता चम्पतराय की रक्षा के लिए जो थाल चम्पतराय को दिया गया था उस थाल को भीम ने स्वयं अपने सामने ले लिया और अपने सामने का थाल चम्पतराय को भोजन करने को दे दिया था। इस विष-मिश्रित भोजन करने के कुछ देर बाद भीम के प्राण पखेरू तो उड़ गये परन्तु पहाड़सिंह का अभीष्ट सिद्ध न हो पाया। जिस जगह चम्पतराय आदि को भोजन करवाया गया था उस जगह ऐसा प्रबन्ध किया गया था कि यदि भीम चम्पतराय से साफ साफ कहते तो दोनों की जान जाती इससे भीम वहां कुछ न बोले और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्होंने चम्पतराय की बला अपने ऊपर ले बन्धु प्रेम की वेदी पर अपना बलिदान कर दिया। पहाड़सिंह के इस कुकृत्य से ओरछा राज्य और चम्पतराय में अनबन हो गई। अब पहाड़सिंह चम्पतराय को हानि पहुंचाने के लिए तरह-तरह के जघन्य उपाय करने लगे। यह घटना वि० सं १६९९ व वि० सं० १७०० के बीच में घटित हुई थी।

भीम की मृत्यु के पश्चतु राजा पहाड़सिंह और चम्पतराय में अनबन हो गई थी। इससे पहाड़सिंह हर समय चम्पतराय को हानि पहुंचाने के षड़यन्त्रों में लगा रहता था। अन्त में उन्होंने शाहजहां से संधि करना ही उचित समझा। शाहजहां भी तंग आ गया था इससे उसने भी इनके बुलाने में विलम्ब न किया। ज्यों ही महाराज चम्पतराय शाही दरबार में पहुंचे, शाहजहाँ ने इनका बड़ा सत्कार किया ओर पाँच हजारी मनसब दे सन्धि कर ली। उस समय शाहजहां कन्दहार में शान्ति स्थापित करने में लगा हुआ था। पर कुई बार सेना भेजने पर शान्ति स्थापित न कर सका था। इस समय वह अपने ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह को जो पराक्रम और शूरता में पूर्ण था। इससे वि० स० १७१० में उसने अपने पुत्र दाराशिकोह के साथ महाराज चम्पतराय को भी कन्दहार की चढ़ाई पर भेज दिया। वहाँ पहुंचते ही महाराज ने बड़ी शूरता दिखलाई और प्राणों की बाजी लगाकर विजय प्राप्त की। वहाँ से वापस आते ही शाहजहाँ ने इन्हें कोंच की जागीर दी और बारह हजारी मनसब दे इनकी वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसे सुन दाराशिकोह मन ही मन कुढ़ा और उन्हें हानि पहुंचाने की चेष्टा करने लगा। ऐसा कहते हैं कि इस षड़यन्त्र में पहाड़-सिंह भी मिल गया और दोनों की सलाह से कोंच की जागीर निकाल देने का मनसूबा बांधा। इस समय राज्य प्रबन्ध का बहुत सा काम दाराशिकोह ही किया करता था इससे इसे मनमानी करने का मौका हाथ लगा। महाराज चम्पतराय कोंच की जागीर से बादशाह को सिर्फ एक लाख रुपया देते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह सब हाल जब बिन्दा को मालूम हुआ तो उसने चम्पतराय को स्वतंत्रता संग्राम करने की सलाह दी और मुगलों की अधीनता में रहने का विरोध किया। परन्तु चम्पतराय ने बिन्दा को समझाया कि मैं अवश्य ही अब क्रान्तिकारी दल को इकट्ठा करने की बात सोच रहा हूं।

वि० सं० १६९७ में कन्दहार के अलीमर्दान ने ईरान के बादशाह से परेशान होकर अपना इलाका शाहजहां बादशाह को दे दिया और उससे मदद लेकर ईरान पर चढ़ाई की पर कुछ लाभ न हुआ। पहाड़सिंह को शाहजहां ने ओरछा गद्दी और पांच हजारी मनसब दिया था और इसने उसकी फरमाबरदारी कबूल कर ली थी। पर जब राजा जगतसिंह कोटा और मुराद के सेनापतित्व में भेजी हुई सेनायें भी कन्दहार निष्फल फिरी और वहां शान्ति स्थापित न हो सकी। तब शाहजहां ने औरंगजेब के सेनापतित्व में वि० सं० १७०२ में फिर भी सेना भेजी और इसकी सहायता के लिए ओरछा के राजा पहाड़सिंह को भी साथ में भेज दिया। इसके बाद में पहाड़सिंह को वि० सं० १७०५ में फिर भी कन्दहार भेजा गया।

वि० सं० १७०८ में जब चौरागढ़ का प्रबन्ध सरदार खां से नहीं हो सका जो धामौनी में रखा गया अयोग्यता के कारण पहाड़सिंह को चौरागढ़ की जागीर बादशाह ने दे दी साथ ही उसका एक हजारी मनसब और बढ़ाया गया। इससे पहाड़सिंह ने हृदयशाह पर चढ़ाई की वह भयभीत होकर रीवां के बघेल राजा अनूपसिंह के पास में चला गया। गौड़वाने में गायें भी जोती जाती थीं इस प्रथा को बन्द करने की पहड़ासिंह की इच्छा थी। इससे यह दौलतवाद तक बढ़ते गये। यहां पर उन्होंने पहाड़ासिंह गांव बसाया जिसकी आदमनी ओरछा राज्य में होती थी। वहां से वापिस आने पर पहाड़सिंह ने रीवा पर चढ़ाई की, राजा अनूपसिंह और हृदयशाह दोनों जगल की ओर भाग गये। पहाड़सिंह ने रीवा को मनमाना लूटा। इतने में औरंगजेब के साथ जाने के लिये शाहजहां ने पहाड़सिंह को बुला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भेजा। वह लूट में से एक हाथी तीन हथनियां लेकर शाहजहां से मिला वि० सं० १७०९ में फिर भी कन्दहार की लड़ाई में भेजा गया।

पहाड़सिंह गौ भक्त और धर्म पालक थे। गौड़वाने में प्रेमशाह राज्य करता था जिसके राज्य में गौ माता हल में जोती जाती थीं। एक भाट ने ओरछा आकर राजा पहाड़सिंह को गौमाता की तरफ से प्रार्थना पत्र दिया था।

कवि के निवेदन करते ही पहाड़सिंह की भृकुटी टेढ़ी हो गई। ओष्ठ और भुजायें फड़कने लगीं। तुरन्त उनका दाहिना हाथ तलवार की मूठ पर गया, और वह साहस पूर्ण एवं भावप्रवण वाणी से प्रतिज्ञा करके बोले मैं अन्न जल अब जब ग्रहण करूंगा जब गौडवाने को विजय कर वहां की गायों को मुक्त करा दूंगा। उन्होंने सेनापति को आदेश दिया कि चढ़ाई के लिये सेना शीघ्र तैयार करें।

मन्त्री बड़े विचारशील व्यक्ति थे। उन्हें गोंड़वाने के वीरों और वहां के सुदृढ़ दुर्ग का पूर्ण अनुभव था। उन्होंने विचार कर राजा पहाड़सिंह से निवेदन किया कि—"महाराज की आज्ञा सभी को शिरोधार्य है, किन्तु जो आपने अन्न–जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा की है, उसमें मेरा यह अनुरोध है कि यहां एक गोबर का गोंडवाना निर्माण किया जाय और महाराज उस पर विजय प्राप्त कर फिर सेना का विधिवत गठन करके गौड़वाने पर धावा बोलें। इस प्रकार महाराज और सैनिकों को सब प्रकार की सुविधायें प्राप्त हो सकेंगी।"

मन्त्री का परामर्श मानकर पहाड़सिंह ने नगर के बाहर चाहर दीवारी नामक स्थान पर गोबर का एक गोंड़वाना प्रस्थापित करने का आदेश दिया जिसका तुरन्त पालन किया गया। लेकिन जब गोबर निर्मित गोंड़वाने पर पहाड़सिंह ने धावा बोला, तभी ओरछा सेना के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक गोंड़वाने वीर ने तलवार खींचकर रण में अपनी मातृ–भूमि की रक्षा के लिए कूदने का दुस्साह किया । उस वीर ने दो घण्टे तक डटकर युद्ध किया । जिससे बुन्देली सैनिकों के छक्के छूट गए । यह देखकर पहाड़सिंह को बड़ा आश्चर्य हुआ । अन्त में वीर पहाड़सिंह द्वारा धराशायी हो वीरगति को प्राप्त हुआ ।

पहाड़सिंह पुनः मन्त्री को बुलाकर गोंड़वाने को विजय करने पर विचार करने लगे । मन्त्री ने महाराज को गोंड़वाने दुर्ग और व्यूह रचना के अनेक सुझाव दिये । इस योजना के अनुसार चढ़ाई की गई और पहाड़सिंह ने अपने विपुल रण–कौशल द्वारा गोंड़वाना नरेश को परास्त कर विजयश्री प्राप्त की । गोंड़वाने से श्री हनुमान जी की विशाल प्रतिमा ओरछा लाई गई जिसकी स्थापना सं० १७०१ वि० (सन् १६४४ ई० में ओरछा से लगभग ४ कि० मी० पश्चिम में वहीं की गई जहां गोबर का गोंड़वाना बनवाया था ।

चम्पतराय बड़े वीर योद्धा और गऊ भक्त भी थे । जब गोंड़वाना पर ओरछा के महाराजा पहाड़सिंह ने वि० सं० १७०१ (सन् १६३३ ई०) को विजय प्राप्त की थी उस विजय का कारण चम्पतराय की तरफ से विन्दा नामक सामन्त व बिन्दा के बेटे की शूरवीरता थी । बिन्दा और उसके बेटे ने इस युद्ध में बहुत ही वीरता से युद्ध किया था । जब बिन्दा गड़वाना की लड़ाई से ओरछा वापिस आया तो उसकी वीरता की प्रशंसा ओरछा दरबार में की गई और बिन्दा के बेटे को ओरछा राज्य की सेना का सबसे बड़ा सेना-नायक बनाया गया । महेबा (नुना) में बिन्दा के नाम से कुछ भवन बनवाये गये । इसी वर्ष बिन्दा का वि० सं० १७०१ सन् १६४४ ई०) में देहान्त हो गया । बिन्दा का बेटा चम्पतराय की सेना में वपिस चला गया और वि० सं० १७६० में बिन्दा के बेटे की मृत्यु छत्रसाल के शासन काल में) हो गई थी यह दोनों बड़े स्वामी भक्त थे । इनके स्मारक नुना महेबा में बने हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहाड़सिंह ने चम्पतराय के मारने का बहुत उपाय किया परन्तु वह सफल नहीं हुए। ऐसे समय में बुन्देलखण्ड (ओरछा) को भाइयों की लड़ाई से बहुत हानि पहुंची। पहाड़सिंह ने चम्पतराय को हानि पहुंचाने का एक उपाय और भी किया। शाहजहाँ ने जब बुन्देलों से सन्धि की तब कोंच की जागीर चम्पतराय को दी थी। चम्पतराय की महेबा (नुना) की जागीर बहुत छोटी थी कोंच की जागीर मिल जाने से उनका खर्च सम्बन्धी काम अच्छा चलने लगा था पहाड़सिंह ने यह चम्पतराय की जागीर लेने का उपाय किया उस समय शाहजहां के दरबार में दारा की बहुत चलती थी दारा शाहजहां का बड़ा लड़का था और उसने राज्य का सब कार्यभार उसी के सुपुर्द कर दिया था। ओरछे के राजा पहाड़सिंह ने बहुत नर्मता पूर्वक दारा से यह विनती की कि चम्पतराय की जागीर मुझे दे दी जावे। मैं तीन लाख रुपया जागीर से मुगल दरबार को दूंगा। और चम्पतराय से अच्छा प्रबन्ध करूंगा। उस समय चम्पतराय केवल एक लाख रुपए उस जागीर से बादशाह को दिया करते थे। पहाड़सिंह ने तीन लाख रुपया देने का वचन देकर जागीर मांगी। दारा ने लालच में आकर पहाड़सिंह को वह जागीर दे दी। इस बात पर चम्पतराय को बहुत बुरा लगा और उन्होंने मुगल दरबार में ही दारा के काम की निन्दा की। और मुगलों की आधीनता में न रहने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार से चम्पतराय से जागीर तो ले ली गई परन्तु जिस वीरता के लिये चम्पतराय को यह जागीर मिली (कन्दहार विजय करने सं० १७१० वि० के उपलक्ष में) वह गुण चम्पतराय से कोई न ले सका। उन्हें भी दारा से बदला लेने का अवसर अच्छा मिला गया। औरङ्गजेब दारा से विरोध रखता था। दरबार में दारा ही सब राजकाज करता था और यह बात औरङ्गजेब को बहुत बुरी लगती थी। औरङ्गजेब चाहता था कि शाहजहाँ के पश्चात मुझे बादशाहत मिले परन्तु शाहजहाँ अपने बड़े लड़के दारा को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था और उसके कई सरदार भी दारा की मदद करते थे। इस कारण औरङ्गजेब ने दारा के प्रभाव को घटाना शुरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
किया उस समय औरङ्गजेब दक्षिण का सूवेदार था उसने दारा के प्रतिकूल चम्पतराय से सहायता मांगी । चम्पतराय दारा से बदला लेना चाहता ही था इसलिये उन्होंने औरङ्गजेब की सहायता करना स्वीकार कर लिया ।

वि० सं० १७१४ में शाहजहां के लड़कों में यह खबर फैल गई कि बादशाह बीमार हो गया है । यही कारण था कि उनके लड़कों ने इस आशा से उनका पिता शीघ्र ही मर जायगा राज्य के लिये लड़ना आरम्भ कर दिया । चम्पतराय का उद्देश्य औरङ्गजेब की सहायता करने में केवल इतना ही था कि वह दारा से बदला ले सके । और बुन्देलखण्ड (ओरछा) को मुगलों से स्वतन्त्र कर सके । दारा के पास बादशाह की बहुत सी सेना थी इसने अपने लड़के सुलेमान शिकोह को भेजकर बंगाल से आने वाले शुजा को सबसे पहिले हराया फिर दारा ने औरङ्गजेब की सेना का सामना करने के लिये धौलपुर के पास चम्बल नदी का घाट रोक लिया । मुराद शाहजहां का सबसे छोटा लड़का था । वह उस समय गुजरात में था औरङ्गजेब बड़ा ही स्वार्थी दगाबाज और चालबाज था । इसने मुराद से फकीर बनने का ढोंग किया और यह कह दिया कि मैं तुम्हीं को बादशाहत दूंगा । मुराद उसकी चिकनी चुपड़ी बातों में आ गया । औरङ्गजेब तो यह चाहता ही था मुराद अपनी सेना सहित ओरङ्गजेब से मिल गया औरंगजेब ने सम्पूर्ण फौज लेकर उज्जैन पर चढ़ाई कर दी वहां पर मुकुन्द-सिंह हाड़ा सूबेदार था उसने बहादुरी से सामना किया परन्तु मारा गया ।

औरंगजेब उज्जैन होकर नरवर आया । यहाँ उसने चम्पतराय को बुलाने के लिये अब्दुल्ला खां को भेजा । वह अपनी प्रतिज्ञानुसार औरंगजेब को सहायता देकर अपना मनोरथ पूरा करने के लिए आ गए । दारा ने चम्बल का मुख्य घाट तो रोक लिया था इससे उन्होंने दूसरे घाट से नदी पार की । और सेना को लेकर दारा की सेना का सामना आगरा के पास समोगढ़ में वि० सं० १७१५ में किया उस समय दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दारा के सेनापति बूंदीगढ़ के छत्रसाल हाड़ा थे वह चम्पतराय से युद्ध में हार गए। युद्ध के पश्चात् औरंगजेब ने मुराद को शराब पिलाकर उसे कैद कर लिया। उसे ग्वालियर के किले में बन्दी कर दिया तथा वह स्वयं बादशाह हो गया दारा और शाहजहां को भी औरंगजेब ने कैद कर लिया।

औरंगजेब वि० सं० १७१५ में सम्राट हुआ उसकी विजय का प्रधान कारण चम्पतराय की सहायता ही थी। इसलिये औरंगजेब ने बुन्देला वीर चम्पतराय को ओरछा से यमुना तक का देश जागीर में दिया और चम्पतराय को दिल्ली दरबार का उमराव समझा। व १२००० हजार सवारों का मनसबदार भी विख्यात किए गए।

लोक साहित्य में कल्पित रानी सारन्धा

महाराजा चम्पतराय जन्म वि० सं० १३२४ देहान्त वि० सं० १७२१ वि० आयु ९७ वर्ष।

महारानी लालकुंवरि (कल्पित नाम–सारन्धा)

जन्म—वि० सं० १६८२ देहान्त, जागीर टेकड़ी जन्म भूमि थी। वि० सं० १७२१ आयु ३८ साल।

[बुन्देलखण्ड केसरी महाराजा छत्रसाल की माता का नाम सारन्धा नहीं अपितु लालकुंवरि था। इनके पिता फतेहसिंह प्रमार वेरछा वालों की गढ़ी ललितपुर के निकट ग्राम दैलवारा में स्थित थी। इसी ग्राम में महाराज चम्पतराय के परम विश्वसनीय सामन्त एवं मित्र वखतवली भट्ट के पुत्र भानु भट्ट एवं वली पटेल का निवास स्थान था।

इस कथा की नायिका सारन्धा बुन्देलखण्ड के एक साधारण जमींदार की पुत्री थी। टेकड़ों में सारन्धा का जन्म सं० १६८३ वि० में हुआ था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी सुन्दरता और साहस के लिए दूर-दूर तक उसकी प्रसिद्धि थी। उन दिनों बुन्देलखण्ड में मुगलों और पठानों के आक्रमण बार-बार होते रहते थे इसलिये स्त्रियां की शस्त्र संचालन जानती थीं। रानी सारन्धा बचपन से ही निर्भीक, स्वाभिमानी, देश जाति और धर्म पर अपने प्राण न्यौछावर करने वाली थी।

ओरछा नरेश चम्पतराय ने सं० १६९८ वि० में उसके सौन्दर्य और शौर्य के बारे में सुन रखा था। उन्होंने सारन्धा के बड़े भाई ठाकुर अनिरुद्ध सिंह के पास विवाह का सन्देश टेकड़ी भेजा। ठाकुर फूले नहीं समाये। फिर भी उन्होंने कहलाया कि महाराज के चार रानियां पहिले से हैं। यदि मेरी बहिन को पटरानी बनायें और इसका पुत्र ही राज्याधिकारी हो तो सम्बन्ध हमें स्वीकार है।

ऐसा ही हुआ। उससे चार पुत्र हुए—(१) अगद (२) रतनशाह (३) छत्रसाल और (४) गोपाल। चम्पतराय शाहजहाँ के दरबार में बड़े मनसबदार थे। ओरछा के अलावा कालपी भी उनको जागीर में थी। जब औरंगजेब तख्त पर बैठा तो उसने उनका दर्जा बढ़ाकर बारह हजारी मनसबदार कर दिया। उस समय हिन्दू राजाओं में सिवाय जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के इतना बड़ा सम्मान और किसी का नही था।

चम्पतराय व रानी सारन्धा पुत्रों के साथ बीच बीच में दिल्ली रहते थे। उनके पास एक इराकी घोड़ा था, जिसकी जोड़ का सल्तनत में दूसरा नहीं था। किसी समय यह घोड़ा शाहजहां के सेनापति अली बहादुर का था, जिसे चम्पतराय युद्ध में जीतकर लाये थे। अब अलीबहादुर औरंगजेब का आला सेनापति हो गया था। अत: घोड़े को वापिस लेने का मौका ढूढ़ रहा था।

एक दिन छत्रसाल घोड़े पर चढ़ कर सैर को जा रहे थे, अलीबहादुर खाँ के सिपाहियों ने घोड़ा छीन लिया। छत्रसाल उस समय केवल १४ वर्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के थे। घर आकर रानी को पूरी घटना सुनाई। उस समय चम्पतराय किसी युद्ध पर गये थे। दिल्ली में रानी अकेली थी। वह अपने पच्चीस विश्वस्त सिपाहियों को लेकर बादशाह के दरबार में पहुंची और अली-बहादुर खां को ललकारा।

बादशाह औरंगजेब अपने मुस्लिम सेनापति का भरे दरबार में अपमान होता देखकर क्रोध से कांपने लगा, परन्तु वह बहुत कूटनीतिज्ञ था। राजा चम्पतराय की वीरता और साहस को जानता था। उसने रानी की ओर दृष्टिपात करके कहा–'रानी साहिबा की बदौलत आपकी बहादुरी से बहुत खुश हूं परन्तु अपने एक घोड़े के लिये सल्तनत के आला सेनापति को नाराज करना आपके और राजा साहब के हक में अच्छा नहीं होगा।

रानी ने कहा कि बादशाह सलामत, सवाल घोड़े का नहीं है बल्कि आन का है। हम बुन्देले अपनी इज्जत और मान के लिए सब कुछ छोड़ने को तैयार हैं। औरंगजेब ने कहा, रानी, अगर राजा यहां होते तो हमारे हजूर में शायद ऐसे अल्फाज कहने की गुम्ताखी नहीं करते। खैर। आप लोग अपने डरे पर जाइये। घोड़ा आपको मिल जायेगा, परन्तु उसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। रानी सारन्धा ने उसी समय घोड़ा वापिस लेकर और घोड़ा पर सवार होकर शाही दरबार का अपमान करके अपने महल में आ गई थी। दारा की लड़ाई के समय चम्पतराय ने वि०सं० १७१५ में एक बहुत अच्छा घोड़ा को पकड़ लिया था। यह घोड़ा बहादुर खां का था। उसे औरंगजेब ने चम्पतराय से मांगा परन्तु चम्पतराय ने घोड़ा देने से इन्कार कर दिया क्योंकि यह उनको यह घोड़ा युद्ध के समय [विजय में] मिला था।

चम्पतराय को इस समय स्वतंत्रता संग्राम करने का अच्छा मौका मिला था उस समय शुजा का युद्ध जारी था। चम्पतराय ने यही मौका औरंगजेब से स्वतन्त्र होकर अपना राज्य स्थापित करने का देखा योजना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुरू कर दी और सम्राट से विरोध करने का उपाय करने लगे। विद्रोह करने का मुख्य कारण घोड़ा से शुरू हो गया था। चम्पतराय मुगल सत्ता को समाप्त करना चाहते थे।

कुछ समय बाद औरंगजेब और चम्पतराय में फिर अनबन हो गई। इस अनबन के कई कारण थे। इसी प्रकार सम्राट का भ्राता शुजा फिर बड़ी सेना लेकर इलाहाबाद लड़ने आया तब सम्राट ने चम्पतराय को आज्ञा दी कि आप इलाहाबाद शुजा से लड़ने जावें। परन्तु चम्पतराय ने सम्राट की आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया इन सब बातों से सम्राट और चम्पतराय में विरोध हो गया। चम्पतराय स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की इच्छा में लगे थे।

औरंगजेब सदा से ही चम्पतराय को परेशान करने का उपाय किया करता था परन्तु उसे एक हिन्दू वीर बुन्देला का सम्मान विवश हो करना पड़ता था और वह भी अपने स्वार्थ के लिए सब करता था। परन्तु वह हमेशा किसी बहाने से चम्पतराय की जागीर वापिस लेने के प्रयत्न में था चम्पतराय को औरंगजेब की यह कपट भावना अच्छी तरह मालूम हो गई थी इसी वजह से चम्पतराय ने बादशाह को दी हुई सनदें और अस्त्र-शस्त्र वापिस कर दिये और स्पष्ट तरह से बादशाह की आधीनता में रहने से इन्कार कर दिया।

परतंत्रता को त्याग स्वतन्त्रता का डंका बजाते हुए चम्पतराय ओरछा आये चम्पतराय की वीरता सुयश सारे देश में फैल चुका था। ओरछा वापिस आते ही तमाम सेना सरलता से मिल गई इस सेना के सहारे और अपनी अतुल वीरता के बल से राजा चम्पतराय ने एक के पश्चात् दूसरा किला जीतना शुरू कर दिया औरंगजेब चम्पतराय की वीरता चतुरता को जानता ही था कि चम्पतराय से कोई मुसलमान सेनापति विजयी नहीं हो सकता है। इससे दतिया से राजा शुभकरण को, जो कि सूबे बुन्देलखण्ड का दिल्ली की बादशाहत की ओर से सूबेदार भी नियत किया गया था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेनापतित्व के लिये चुना गया शुभकरण बुन्देलखण्ड के प्रत्येक भाग से परिचित था और वह बुन्देलखण्ड में पहिले भी लूटमार भी किया करता था बादशाह औरंगजेब ने एक बड़ी भारी सेना देकर शुभकरण को चम्पतराय का विनाश करने को भेजा।

औरंगगेव के पास से आने के बाद चम्पतराय ने भांडेर को लूटा, फिर ऐरच का किला ले लिया और यहीं पर अपने रहने का स्थान बनाया फिर इसी स्थान से बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्र करना शुरू कर दिया उसी समय मुगलों का नौकर बनकर शुभकरण, अपने बुन्देलखण्डी महान वीर के स्वतन्त्र होने के प्रयत्न निष्फल करने के लिये, बहुत सी मुगल सेना लेकर आ पहुंचा शुभकरण की सेना को कई बार चम्पतराय ने युद्ध में पराजय किया। चम्पतराय के नेतृत्व में सेना को अधिक सुख मिलता था। औरंगजेब ने जब देखा कि शुभकरण हारकर भाग आया है तब वह स्वयम् अपनी बड़ी सेना लेकर ओरछा पर चढ़ आया और चम्पतराय को घेर लेने का प्रयत्न किया चम्पतराय वीरता से सामना करते रहे। बुन्देलखण्ड में औरंगजेब की सेना बिना बुन्देलो की सहायता के कुछ भी न कर सकती थी। इससे औरंगजेब ने अपनी सेना में बहुत से बुन्देला भर्ती किए इनकी और शुभकरण की सहायता से चम्पतराय के ठहरने के सब मार्ग औरंगजेब को मालूम होते गये औरंगजेब को चम्पतराय से युद्ध करते समय इन्हीं की सहायता ने बहुत ही काम दिया औरंगजेब की बड़ी सेना होने पर भी चम्पतराय और उनकी सेना ने वीरता और धीरता से युद्ध किया परन्तु धीरे-धीरे चम्पतराय की सेना कम होती गई। उसी समय में चम्पतराय और पहाड़सिंह के पुराने विरोध ने विघ्न डाला।

एक विस्मृत ऐतिहासिक घटना सन् १६६४ ई० अर्थात् वि० सं० १७२१ की वेदपुर (जतारा) टीकमगढ़ युद्ध

जैसा कि पूर्व में वर्णन किया जा चुका है कि राजा पहाड़सिंह चम्पतराय का प्रकट रूप में तो सम्मान करते थे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्हें नष्ट करने का षड़यन्त्र रचा करते थे। इसका कारण था कि पहाड़सिंह का अत्यन्त विश्वासी मन्त्री नसीमुद्दौला चम्पतराय की मुगल विरोधी नीति से असन्तुष्ट होकर पहाड़सिंह को उनके विरुद्ध कर दिया।

सन् १६५३ ई० में पहाड़सिंह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र सुजान–सिंह (प्रथम) ओरछा का राजा बना। किन्तु ओरछा का वास्तविक प्रशासन पहाड़सिंह की पत्नी हीरादेवी (हीरादे) के हाथ में था। हीरा देवी चम्पतराय को समाप्त करने हेतु युक्ति सोचती रही।

५०-६० वर्षों तक संघर्षरत रहने एवं जरावस्था रुग्णावस्था के प्रकोप के फलस्वरूप चम्पतराय का शरीर जर्जर हो रहा था। इधर बुन्देला शासकों एवं मुगल साम्राज्य की संयुक्त शक्ति चम्पतराय को नष्ट करने में प्राणपण में लगी हुई थी। हीरादेवी ने इस स्थिति का लाभ उठाकर सन् १६६४ ई० (सम्वत् १७२१) में अपने छोटे पुत्र इन्द्रमणि एवं दलेल दौआ के सेनापतित्व में १६००० सेना चम्पतराय को नष्ट करने हेतु भेजी। जतारा से यह सेना दो भागों में बट गई। एक ने बैदपुर पर आक्रमण किया और दूसरी महेबा की ओर बढ़ी।

बैदपुर में चम्पतरात के भाई सुजानराय जागीरदार थे। हीरादेवी की फौजों के आकस्मिक आक्रमण का सामना करना एक साधारण जागीरदार के लिए असम्भव था किन्तु सुजानराय को युद्ध के लिये विवश होना पड़ा।

सुजानराय ने अपने पुत्रों तथा तीन सरदारों मनौला हरीज घोसी एवं पंडित पांडे के साथ बन्दूकों के प्रहार से शत्रु के छक्के छुड़ा दिये। किन्तु उनका गोला बारुद थोड़ी देर में समाप्त हो गया और उन्हें धनुष वाणों का सहारा लेना पड़ा। तीनों वीरों के साथ मिलकर सृजानराय ने शत्रुओं के दांत खट्टे कर दिये। सुजानराय सहित तीनों वीरों की मृत्यु हो गई। रानियों ने जौहर किया। शत्रुओं ने महलों को लूटकर नष्ट कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डाला। वैंदपुर ग्राम लाशों से पट गया। वैंदपुर की वह वीरमही आज भी अपने रक्षक नर-रत्नों की यश गाथा गुनगुनाते हुए उनके अवशेषों को अपने हृदय में संजोये हुए रखे है।

इस युद्ध में चम्पतराय के पुत्रों ने भी बहुत वीरता से सहायता दी। चम्पतराय की फौज कम हो जाने के कारण वह सिहोरा के जमीदार इन्द्रमणी के पास गये। इन्द्रमणी चम्पतराय के पुराने मित्र थे परन्तु घर पर नहीं मिले फिर भी साहिबसिंह धंधेरे ने चम्पतराय का स्वागत किया इसके बाद चम्पतराय ने अपने पुत्र छत्रसाल को थानसिंह के पास भेज दिया। वह छत्रसाल के बहनोई थे, परन्तु ऐसे अवसर पर छत्रसाल का स्वागत करना तो दूर रहा बहिन ने बात तक नहीं पूछी। थानसिंह घर में नहीं थे वह रात्रि को आये।

सिहोरा में भी रहना चम्पतराय ने उचित न समझा वह बीमारी की हालत में अपनी रानी लालकुंवर (सारन्धा) को साथ ले मोहन गांव जाने को निकल पड़े सिहोरा के साहिबसिंह धधेरे ने अपने दो सौ सिपाही चम्पतराय की सुरक्षार्थ साथ में भेज दिये थे सिपाहियों ने फिर से सिहोरा वापिस चलने की सलाह दी।

वि० सं० १७२२ में जब राजा चम्पतराय बीमारी की हालत में सिहोरा के जंगल में चले जा रहे थे तब रानी हीरादेवी पहाड़सिंह की पत्नी ने दलेल दऊवा के साथ सोलह हजार सवार और इन्द्रमणी को पीछा करने भेजा गया था चम्पतराय नाला फांदते समय घोड़ा से गिरकर घायल भी हो गये थे शाही सेना अपना घेरा डाले हुये चम्पतराय पर आक्रमण कर रही थी लेकिन रानी सारन्धा ने बहुत वीरता पूर्वक युद्ध किया था। मुगलों की सेना सहित दलेल दऊवा हारकर चार कोस पीछे भाग गये थे।

रानी सारन्धा ने अपने पति चम्पतराय की आज्ञा लेकर घोड़े पर सवार होकर बहादुरखाँ और दलेल दऊवा और रानी हीरादेवी के पुत्र इन्द्रमणि (पहाड़सिंह के पुत्र) युद्ध भूमि में आकर घमासान युद्ध हुआ इस लड़ाई में रानी सारन्धा ने इन्द्रमणी को हराकर भगाया और दलेल दऊवा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
की सोलह हजार सेना सहित मार डाला तथा शाही सेना के दस हजार योद्धा लड़ाई में रानी सारन्धा के हाथ से मार डाले गए। इस युद्ध में रानी सारन्धा की विजय हुई। परन्तु बहादुरखां ने मोरनगांव के पास फिर आक्रमण कर दिया। उस समय रानी सारन्धा के पास केवल दो सौ सिपाही थे।

रानी भी बड़ी हिम्मत और बहादुरी से लड़ी, परन्तु बड़ी फौज के सामने उस अकेली की भला क्या हस्ती थी ? गम्भीर रूप से घायल हो गई। जल्दी से वार बचाती हुई राजा की पालकी के पास जाकर कहने लगी, 'महाराज, अन्तिम विदाई लेने आई हूं भूल चूक क्षमा करेंगे। आपके चरणों की सेवा करने के लिए वहां प्रतीक्षा करूंगी।'

राजा ने कहा कि रानी बीस वर्षों से सुख-दुख की साथी थी, आज मुझे इन दुश्मनों के हाथ में बीमार हालत में छोड़कर जाते हुये तुम्हें कुछ भी चिन्ता नहीं होती ? क्या मुझे उम्र भर मुगलों की कैद में छोड़ जाओगी ? मेरा मन कहता है तुम्हारे वीर पुत्र जिन्दा हैं वे दुश्मनों से अवश्य बदला लेंगे। अतः यह तलवार पहले मेरी छाती में चुभा दो और फिर अपनी में।'

रानी ने रोते हुये कहा कि 'महाराज क्या आप मुझे पति हन्ता होना बनाना चाहते हैं ?' पर अन्त में रानी ने वास्तविक स्थिति को अनुभव कर वैसा ही किया। मुगल सिपाही जब वहाँ पहुंचे तो दो तड़पती हुई लाशों को देखा। रानी का सिर पति की छाती पर टिका हुआ था। इस प्रकार सं० १७२१ वि० में ८७ वर्ष की उम्र में चम्पतराय का देहान्त हो गया।

(११) सुजानसिंह (प्रथम) सन् १६६३ ई० से १६७२ ई० तक

विo संo १७२० से विo संo १७२९ तक

जन्म वि० सं० १६५१

सं० १७२० वि० में पहाड़सिंह की मृत्यु के पश्चात पहाड़सिंह के पुत्र सुजानसिंह (प्रथम) राजा हुये। इनकी रानी कंचन कुंअर ने अपने नाम पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा में कंचन घाट बनवाया। अड़जार का तालाब, मऊ के पास रानी-पुर कंचनपुरा ग्राम बसाए।

अलमगीर औरंगजेब यद्यपि क्रूर था परन्तु उसकी पुत्रियां सदय थीं शाहजादी बदरुन निशां (सुजानसिंह प्रथम) के भाई ओरछा युवराज इन्द्रमणि से प्रेम करती थी। उसी करुणा भावावेश में उसने अपने पिता के सिपाहसालार रण दूलहखाँ द्वारा ओरछा के चतुर्भुज मन्दिर को टूटने से रक्षा की थी। घटना इस प्रकार है :—

वि० सं० १७२८ की ऐतिहासिक घटना

औरंगजेब के सिपाहसालार रण दूलहखाँ की आज्ञा हुई थी कि चतुर्भुजी का मन्दिर तोड़कर उसके स्थान पर एक मस्जिद बना दी जाय। नगर में इस समाचार से बड़ी बेचैनी फैली हुई थी। लोग दुःख और क्रोध में भरे थे, परन्तु शाही सेना के निर्दय अत्याचार का प्रतिवाद करने की शक्ति उनमें न थी। वे अपना शोक मन ही मन दबाये लहू का घूंट पी रहे थे।

ओरछा में बादशाह औरंगजेब के सेनापति रण दूलहखाँ आकर ठहरे हुये थे। इस समय ओरछा शाही अमलदारी में था।

ओरछे के विशाल चतुर्भुज मन्दिर के भीतरी प्रांगण में कुछ वीर पुरुष बैठे गुप्त मंत्रणा कर रहे थे। फाटक के भारी-भारी किवाड़ बन्द थे और द्वार पर पहरे लगे थे। किसी भी व्यक्ति को भीतर आने की आज्ञा न थी।

सूर्योदय से ही झुंड के झुंड नागरिक चतुर्भुज के अन्तिम दर्शन के लिये एकत्रित होने लगे थे। सारे नगर में दुख का रोना शोक की ध्वनि और आत्म निन्दा के वाक्य सुनाई दे रहे थे। उस दिन नगरवासियों ने अन्न जल त्याग दिया था। लोगों में छिपे छिपे यह चर्चा भी चल रही थी कि 'प्राणनाथ प्रभु' आ गये हैं। इस खबर से लोगों के हृदयों में आशा का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संचार हो रहा था। परन्तु मन्दिर के पट प्रातःकाल से ही बन्द थे और उस दिन चतुर्भुज भगवान को भोग नहीं लगा था। यद्यपि लोगों को यह गुमान न था कि प्राणनाथ प्रभु भीतर बैठे परामर्श कर रहे हैं, फिर भी झुंड के झुंड लोग मन्दिर के चारों ओर खड़े थे।

भीतर जो लोग एकत्रित थे उनमें से एक ने कहा, देखिये, अब मामला यहां तक पहुंच गया है कि हमें कुछ न कुछ कर ही डालना चाहिये।' जो लोग वहां बैठे थे उनके चेहरे क्रोध से तमतमा रहे थे। उन पर दृष्टि डालकर प्रथम व्यक्ति ने कहा, 'सरदारों! क्या बुन्देलखण्ड हम बुन्देलों का नहीं है? यह मन्दिर क्या स्वर्गीय राजाओं की विजय कामनाओं का केन्द्र नहीं रहा? क्या आप भूल गये कि उन वीरों ने विजय पर विजय करके किस प्रकार इसकी देहली पर मस्तक टेके थे? भाग्यवान तो वीर-गतियों को प्राप्त हुये और हम उनके दरबारी और सरदार हैं, सो क्या इसलिये कि चुपचाप उनकी दी हुई जागीर को खाते रहें? क्या हमने विचारा है कि हमारी पीढ़ियों से चली आती हुई अजेय शक्ति कहाँ चली गई है और हम उसे खोकर किस उद्देश्य से जी रहे है और जागीर भोग रहे हैं? श्रोतागण सिर नीचा किये चुप बैठे थे। उसने फिर कहा "आपको मालूम है कि आपके, हमारे ओरछा के और समस्त बुन्देलखण्ड के सिर पर लात मारकर जो अधिपति बनकर आए हैं वे कौन है? मुझे कहते घृणा होती है। वे न उच्च कुलीन हैं और न कोई सज्जन या वीर पुरुष हैं। वे एक पतित और दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति हैं, परन्तु उनकी विशेषता यही है कि उनकी पुत्री को शाही खिदमत बजा लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बस यही उनकी योग्यता है। यह सारंगी बजाने का काम करते थे। समझें आप! सारंगी बजाने का। आप क्या कहते हैं, क्या आप लोग उस अधर्म पुरुष की प्रजा बनकर रहेंगे?

'सरदारों!' उसने अपने लोहे के दस्ताने पहने हुये एक हाथ को दूसरे पर रखते हुये कहा, इस कमीने आदमी के अधीन, जो न प्रतिष्ठित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है और न योग्य, किन्तु बादशाह की कृपा से वह हमें अपनी स्वेच्छाचारित से जेर करना चाहता है, क्या हमें सब सहते रहना उचित है ? इस गन्दे घास फूस को क्या हम उखाड़ कर न फेंक दें और अपना मार्ग साफ न करें ? सज्जनो ! मैं आप सबसे पूंछता हूं, आपका क्या उत्तर है ?

एक ही स्वर सब चिल्ला उठे, 'अवश्य भले ही हमें प्राणों की बाजी लगानी पड़े।' प्रत्येक पुरुष क्रोध और आवेश में बोल रहा था और गुम्बज में उनकी ध्वनि प्रतिध्वनित हो रही थी। एक मात्र प्राणनाथ प्रभु शान्त बैठे थे। अब वे बोले ! उन्हें बोलने का उपक्रम करते देख सभी चुप हो गये। प्राणनाथ ने हँसकर कहा 'यह सब तो ठीक, पर म्याऊँ का ठौर कौन पकड़ेगा ? कहो, किसमें इतना साहस है ?'

सर्वत्र सन्नाटा हो गया। इस मण्डली में एक कौने में एक अल्पवयस्क बालक बैठा था। यह अपरिचित एवं विदेशी था। इसे प्राणनाथ प्रभु की सिफारिश पर इस गुप्त सभा में शामिल किया गया था। उसने धीरे से खड़े होकर मुस्कराकर कहा, यदि प्रभु का आदेश हो, तो मह सेवा यह तुच्छ सेवक करेगा।" प्राण नाथ प्रभु हँस दिये। सभा ने विस्मित होकर देखा यह अद्‌भुत बालक कौन है ?

एक व्यक्ति ने झरोखे में झांककर देखा और चिल्लाकर कहा, "देखो, वह आ रहा है।" सब लोगों ने झरोखे में से देखा सवारों का एक दल हथियारों से सुसज्जित आ रहा है। रण में दूलहखाँ बहुमूल्य और भड़कीले वस्त्र पहने एक अरबी घोड़े पर सवार सबसे आगे चला आ रहा है। एक प्यादा उस रकाब के साथ हुक्का लिए और दूसरा पीकदान लिए आगे बढ़ रहा हैं। उसके पीछे पाँच सौ सवार हथियारों से लैस आ रहे हैं। इस गर्वीले दल को देख यह छोटी सी मण्डली दांत पीसने लगा। बाहर कोलाहल होने लगा। मन्दिर में सिंहद्वार पर भारी-भारी चोटें पड़ने लगीं। सभी लोग द्वार पर आकर एकत्र हो गये। प्राण नाथ प्रभु ने कहा।' देखो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सभी लोग संयम से रहना, शीघ्रता न करना मैं और यह सुन्दर युवक सब कुछ ठीक कर लेंगे । अभी तुम लोग भीतर ही रहो ।"

यह कहकर प्राणनाथ प्रभु सिंहद्वार पर आकर बोले, तुम कौन हो ?

"मैं सिपहसालार रण दूलहखां हूं द्वार खोल दो ।"

"मैं भीतर जाऊँगा ।"

"किसलिए ?"

"मैं बुतशिकन हूं । मैं मन्दिर को ढहा दूंगा, मूर्ति को तोड़ दूंगा ।"

"यह काम तुम किसकी आज्ञा से करते हो ?"

"अपनी आज्ञा से ।"

"और यदि द्वार न खोले जायें ?"

'तो जबरदस्ती दरवाजा तोड़ दिया जायेगा ।"

"बल-प्रयोग का प्रयोजन नहीं, द्वार खोलता हूं ।"

इसके बाद प्राण नाथ प्रभु ने फाटक की भारी सांकल पर हाथ डाला एक भयानक चीत्कार करके द्वार खुल गया । प्राण नाथ प्रभु अपना भगवा परिधान पहने बाहर निकल आए । तत्क्षण एक प्रचण्ड जयघोष हुआ । सहस्त्रों नर नारी चिल्ला उठे "प्राणनाथ प्रभु की जय ।"

रण दूलहखां उस सतेज मूर्ति को आगे बढ़ते देख पीछे हट गया । प्रचण्ड जयघोष ने उसे घबरा दिया । परन्तु तुरन्त उसने साहस कर कहा, "बागी, तू कौन है, क्यों इतनी भीड़ लगा रखी है ?" प्राणनाथ प्रभु एक शब्द भी न बोले । वे चुपचाप खड़े रहे । रणदूलह खाँ ने क्रोध में पागल होकर कहा, 'अरे गुस्ताख पूंछता हूं और तू जबाब नही देता । ठहर में अभी तेरा सिर भुट्टे सा उड़ाता हूं ।" यह कहकर और तलवार खीचकर वह आगे बढ़ा ।

प्राण नाथ ने वज्र गर्जन करके कहा, "वहीं खड़ा रह ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरे ही क्षण मन्दिर में से अनेक वीर निकल कर प्राण नाथ प्रभु के पीछे आ खड़े हुए। उन्होंने तलवारें सूत लीं।

रण दूलहा खां ने फिर साहस संग्रह किया। उसने कहा, समझ गया तू प्राणनाथ गुसांई है, जो तमाम मुल्क में बगावत फैलाता फिरता है। प्राणनाथ प्रभू बोले नहीं, वज्र दृष्टि से उसे देखते रहे। रण दूलहा खां ने फिदाई खां फौजदार को हुक्म दिया, क्या देखते हो, इस बागी की गर्दन एक ही हाथ में उड़ा दो।" परन्तु फिदाई खां की हिम्मत न हुई उसने अपने एक हवलदार से कहा, "हैदर खां तलवार के एक ही हाथ में इस गुसांई का सिर धड़ से अलग कर।" रण दूलहाखां ने जो काम फिदाई खां को सौंपा था, फिदाईखां ने वह हैदरखां को सौंप दिया। यह देख प्राणनाथ प्रभु मुस्करा दिये। उन्हें मुस्कराता देख हैदरखां ने एक सिपाही से कहा, "मुहम्मद खां साहेब हुक्म बजा लाओ और एक ही हाथ में उसका सिर भुट्टे की भांति उड़ा दो।" मुहम्मद खां ने तपाक से कहा, "वल्लाह हुजूर की मौजूदगी में एक काफिर को कत्ल करूं ? मुझसे हरगिज यह गुस्ताखी न होगी। जनाब के एक ही हाथ में इस बदनसीब का सिर कला मुण्डी खा जायेगा।" रण दूलहाखां यह देखकर कुढ़ गया। पर यह समझ गया कि गुसाईं पर हाथ डालना साधारण आदमी का काम नहीं है। उसने होंठों को दांतों से दबाकर तलवार सूंत ली और आगे बढ़ा।

हजारों की संख्या में खड़े नर–नारी विचलित और उत्तेजित हो उठे प्राणनाथ प्रभु ने फिर गर्जन से कहा, "खबरदार: सब लोग शान्त खड़े रहें।" रण दूलहा खां थर-थर कांपने लगा। पर उसने आगे बढ़कर कहा, "गुसाईं मरने को तैयार हो जा।"

"मूर्ख, मैं अभी नहीं मरूंगा।

रण दूलहाखाँ ने तलवार उठाई। प्राणनाथ प्रभु वज्र की भांति खड़े थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब वह युवक तेजी से मन्दिर के कक्ष से निकला और प्राणनाथ प्रभु के सामने खड़े होकर महीन किन्तु तीव्र स्वर में बोला, "खामोश रणदूलह खां तलवार जमीन पर रख दो और इस बुजुर्ग से दस्तबस्ता माफी मांगो।'

"तू कौन है, तेरी हिम्मत पर अफरीन है ! हट जा बच्चे, वरना यह तलवार तेरे खून से ही सुर्ख होगी, क्या तू सिपाहसालार रण दूलहखां के गुस्से को नहीं जानता ?"

युवक जोर से खिल खिलाकर हँस पड़ा। इसके बाद उसने अपने सिर की पगड़ी उतार फेंक दी। एड़ी तक लटकने वाली सघन काली घूंघर वाली केश राशि बिखर गई। उसने दर्प से कहा, "पीछे हट जा, शहजादी बदरुन निशां तुझे हुक्म देती है कि अपनी तलवार जमीन पर रखकर झट इस बुजुर्ग से माफी मांग।"

रण दूलहाखां का चेहरा पीला पड़ गया। वह थर-थर काँपने लगा। उसने तलवार शाहजादी के चरणों पर रख दी और कहा, "हुजूर गुलाम की गुस्ताखी माफ फरमाई जाये, हुजूर को मैं पहचान न सका।"

"इस तरह तुम डाकू और बदमाशों की तरह शहंशाह की रिआया पर जुल्म करते हो ?" शाहजादी ने कहा।

"हुजूर·······"

"पहले उस बुजुर्ग से माफी मांग।"

रण दूलहखां घुटनों के बल प्राणनाथ प्रभु के चरणों पर गिर गया। प्राण नाथ हँस पड़े और हाथ उठाकर उसे अभय किया।

फिर प्रचण्ड जयघोष हुआ, "प्राणनाथ प्रभु की जय।"

प्राणनाथ प्रभु ने कहा, "रण दूलहाखाँ, तुम यदि बादशाह के सच्चे सेवक हो तो तुम्हें कोई ऐसा काम न करना चाहिये जिससे प्रजा के मन में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शहंशाह के प्रति क्रोध या घृणा उत्पन्न हो। कोई राजा बल से देर तक प्रजा पर हुकूमत नहीं कर सकता, जब तक कि वह उसका दिल न जीत ले।"

रण दूलहखाँ जल्दी-जल्दी शाहजादी प्राणनाथ प्रभु को बार-बार प्रणाम कर अपनी फौज सहित चला गया।

जब औरङ्गजेब की सेना का प्रमुख अधिनायक रणदूलह खां माह वैशाख शुक्ल १४ दिन भोमवार सं० १७२८ वि० में ओरछा से वापस चला आया। ओरछा की घटना का समाचार बादशाह को सुनाया तो बादशाह औरंगजेब ने सेनापति रणदूलहखाँ के सहित ग्वालियर के सूबेदार फिदाईखां को सहायतार्थ भेज कर वि० सं० १७२९ में पुनः ओरछा के मन्दिरों कों तोड़ने मूर्तियों के फोड़ने की आज्ञा देकर भेजा गया उस समय ओरछा के राजा सुजानसिंह मुसलमानों के अधीन थे इस घटना का अब दूसरा अवसर आ गया था बादशाह का हुक्म मानना ओरछा के राजा को धर्म के प्रति-कूल था परन्तु हुक्म का न मानने से उनके राज्य का भी निकल जाना निश्चित था। उस समय चम्पतराय के वीर पुत्र छत्रसाल का समाचार ओरछा राजा सुजानसिंह को मिला कि छत्रसाल अपनी सेना लिये मोरपहाड़ी (जतारा) के जंगल में ठहरे हैं। दिन प्रति दिन मोरपहाड़ी में छत्रसाल के सैनिकों का जमाव अधिक होता जाता था। राजा सुजानसिंह के मंत्रियों ने छत्रसाल से सहायता लेने की सलाह दी। राजा भी भली भांति जानते थे कि छत्रसाल धर्म की रक्षा अवश्य करेंगे। राजा सुजानसिंह ने छत्रसाल को सहायता के लिये ओरछा में बुलाया तो वह सेना सहित धर्म की रक्षार्थ शीघ्र ओरछा आए। साथ में अंगदराय और बलदिवान भी ओरछा आ गये राजा सुजानसिंह ने छत्रसाल का यथोचित सम्मान किया। सुजानसिंह और छत्रसाल की बड़ी देर तक सलाह होती रही। अन्त में छत्रसाल और राजा सुजानसिंह दोनों ओरछा के श्री रामराजा मन्दिर में आये छत्रसाल ने धर्म रक्षार्थ मन्दिर में होकर प्रतिज्ञा की। बुन्देलखण्ड को स्वतन्त्र बनाया जावे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छत्रसाल ने यह कार्य करने का संकल्प किया थोड़ीं देर बाद शाही सेनायें बड़ वेग से ओरछा आ गई और घमासान युद्ध हुआ रणदूलहखाँ और फिदाईखाँ लड़ाई में हार कर भाग गये । छत्रसाल की विजय हुई उसी वर्ष वि० सं० १७२९ में सुजानसिंह राजा का देहान्त हो गया था ।

(१२) महाराजा इन्द्रमणि

(इन्द्रमणि सन् १६७२ से सन् १६७५ ई० तक) जन्म वि० सं० १६५८

वि० सम्वत् १७२९ अर्थात् सन् १६७२ ई० में सुजानसिंह के निःसन्तान निधन से उनके भाई इन्द्रमणि ओरछा की गद्दी पर आसीन हुए । जिन्होंने सं० १७२६ वि० से सं १७३२ वि० (सन् १६७२ से सन् १६७५ ई० तक) राज्य किया । महाराजा इन्द्रमणि की रानी सुलतान कुंवरि प्रमार धनगोरा की थी आपके समय में प्रेतयज्ञ कराया गया था । सम्राट औरंगजेब की शाहजादी प्रेमिका थी । आपके पुत्र जसवन्तसिंह भगवन्तसिंह हुए थे । सं० १७३२ वि० में इन्द्रमणि का निधन हो गया ।

(१३) महाराजा जसवन्तसिंह

जसवन्तसिंह सन् १६७५ से सन् १६८४ ई० तक (वि० सं० १७३२ से वि० सं० १७४१ तक) जन्म वि० सं० १६७२

इन्द्रमणि के निधन के पश्चात् सं० १७३२ वि० में अर्थात् सन् १६७५ ई० में इन्द्रमणि के पुत्र जसवन्तसिंह ओरछा के शासक बने । जसवन्तसिंह ने सं० १७३२ वि० से सं० १७४१ वि० (सन् १६७५ से १६८४ ई० तक ९ वर्ष ओरछा का शासन किया । यह साधु सेवक प्रजा पालक राजा थे । इन्होंने अपने नाम पर जसवन्तपुरा बसाया ।

(१४) महाराजा भगवन्तसिंह

सन् १६८४ से सन् १६८९ ई० तक वि० सं० १७४१ से वि० सं० १७४६ तक राजा रहे । आपकी रानी दीप कुंवरि प्रभार जिगनय की थी आप सन्तान हीन होने के कारण लघुभ्राता भगवन्तसिंह को राज्य मिला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। भगवन्तसिंह के नाम पर भगवन्तपुरा बसाया था। इनकी राजमाता अमर कुमारी ने पिछोर ग्राम में श्री रसिक बिहारी और श्री रनछोर जी के दो मन्दिरों का निर्माण कराया था। पिछोर से १० मील की दूरी पर बानपुर में किला तालाब और बावरी का निर्माण कराया। अमर कुमारी ने अपनी पुत्री हिमाचल कुमारी को ४५ गांव खनियाधाना में दान स्वरूप प्रदान किये थे। शिलालेख से प्रमाण मिलता है। सं० १७४६ वि० में महाराज भगवन्तसिंह का निधन हो गया।

(१५) महाराजा उद्दैतसिंह

उद्दैतसिंह (सन् १६८९ से सन् १७३६ ई० तक) वि० सं० १७४६ से वि० स० १७९३ तक) जन्म वि० स० १७२१

सं० १७४६ वि० में भगवन्तसिंह की मृत्यु के पश्चात् राजमाता अमर कुमारी ने श्री दिमान हरदौल के नाती को जो उस समय वड़ौनी वड़ागांव एरच के जागीरदार उद्दैतसिंह को गोद लेकर ओरछा के सिंहासन पर आरूढ़ कर दिया था।

आपकी रानी रूपकुंवरि प्रमार वेरछा तथा लाड़कुंवरि प्रमार करा-हिया की थी आपने बरुआसागर का किला तालाब बनवाया था जो वि० सं० १७६६ से वि० सं० १७९१ के माने जाते हैं। जिसे उद्दैत नगर कहते हैं। बाद में नाम बरुआसागर पड़ा था।

महाराज उद्दैतसिंह बड़े बलशाली और वीर थे। कितने ही युद्धों में अपने वीरत्व का परिचय दिया था और मुगल सम्राट तक से खिलयत प्राप्त की थी। तत्कालीन मुगल सम्राट बहादुरशाह से प्राप्त हुई एक तलवार जिस पर बहादुरशाह का नाम भी अङ्कित है आज भी ओरछा राज्य के शास्त्रालय में सुरक्षित है। यह तलवार इन्हें मुगल सम्राट बहादुर शाह ने इनके वीरत्व से प्रभावित होकर दी थी। इन्होंने एक बार अकेले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही एक शेर को मार डाला था। इस प्रकार और भी अनेक घटनायें इनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध हैं। सं० १७६६ वि० में पहाड़सिंहपुरा जिसे औरंगाबाद कहते हैं अधिकार का फरमान आपको मिला। सं० १७९१ वि० १३ महल मिलने की सनद भी मिली थी।

Bahadur Shah had Succeeded Aurangabad in 1707 Udot Singh One day when in attendance On the emperer, killed a tiger single handed. in commen Oration of which Bahadur Shah presented him with a sword engraved with the name Bahadur Shah which is still reserved.

Udot Singh was On 1st Rajjab 1121 A. H. (A. D. 1702) pranted a forman Confirming him in possession of the village of Paharsingh Pura near Aurangabad.

In 1734 by a grant (dated 10th shawal 1147 A. H. (udot singh was given 13 Mahal.)

Orchha State Gazettier.

महाराज उद्दतसिह को हिन्दी साहित्य से बहुत प्रेम था। इनके दरबार में एक सौ कवि सम्मान पूर्वक रहा करते थे। महाकवि हरिसेवक मिश्र ने इनके आश्रय में कामरूप नामक महाकाव्य की रचना की थी। दिग्गज धनराज गोप कवि इनके दरबार के रत्न थे। इनके पुत्र देवीसिंह और रणधीरसिंह इनके समय में ही मृत्यु को प्राप्त हुए थे। सं० १७९३ वि०अर्थात् सन् १७३६ ई०में ४७ वर्ष शासन करने के बाद महोबा में इस संसार से महाराज उद्दतसिंह विदा हुये। मकबरा महोबा में मौजूद है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१६) महाराजा पृथ्वीसिंह

पृथ्वीसिंह (सन् १७३६ से सन् १७५२ ई० तक वि० सं० १७९३ से वि० सं० १८०९ तक) जन्म वि० सं० १७१५

सं० १७९३ वि० उद्दैतसिंह के नाती पृथ्वीसिंह ओरछा के सिंहासन पर आसीन हुये। इन्होंने सं० १७९३ वि० से सं० १८०९ वि० तक अर्थात् (सन् १७३६ ई० से सन् १७५२ ई०) शासन किया। इन्होंने अपने नाम पर पृथ्वीपुर नामक ग्राम बसाया था। वि० सं० १७९६ में किला पृथ्वीपुर में बनवाया आपकी रानी अमृत कुंवरि प्रमार उदगुवां की थी। इनके एक मात्र पुत्र अमरसिंह शेर के शिकार में मृत्यु को प्राप्त हुये थे। सं० १८०९ वि० में इनकी मत्यु हो गई।

(१७) महाराजा सामन्तसिंह

सामन्तसिंह सन् १७५२ से १७६५ ई० तक (वि० सं० १८०९ से वि० सं० १८२२ तक) जन्म वि० सं० १७५१

सं० १८०६ वि० में पृथ्वीसिंह की मृत्यु के पश्चात् इनके नाती सामन्तसिंह राजा हुये। इन्होंने सामन्त नगर बसाया। यह बड़ागाँव वालों की शाखा में थे। ओरछा गजेटियर में इनके सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है।

Sawant Singh died in 1766 and was follod Uccesively by Hate Singh. Man Singh and Bharti Chand All these Succeed On adaption Hate Singh being a Grand son of Udot Singh Man Singh Grate son of Udot Singh and Bharti Chand a Member of the Baragaon branch of the house.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराजा सामन्तसिंह सन् १७६५ ई० वि० सं० १८२२ में गोलोक वासी हुए इनकी रानी हिमाचल कुंवरि से चार पुत्र हुए थे जो हेतसिंह मानसिंह, भारतीचन्द्र और विक्रमाजीत (विजय बहादुर दूल्हाजू) ओरछा के राजा हुए।

(१८) महाराजा हेतसिंह

आप सामन्तसिंह की मृत्यु के वाद वि० १८२२ अर्थात् सन् १७६५ ई० में ओरछा के महाराजा हुए यह सन्तान हीन थे वि० सं० १८२५ अर्थात् सन् १७६८ ई० में देहान्त हो गया। सामन्तसिंह के जेष्ठ पुत्र थे। आपकी रानी गुमान कुंवरि प्रमार बेरछा की थी।

(१९) महाराजा मानसिंह

यह सन् १७६८ ई० वि० सं० १८२५ से ओरछा के राजा हुए जो सन्तान हीन थे सन् १७७५ ई० वि० सं० १८३२ में देहान्त हो गया। हेतसिंह के भाई थे। आपकी रानी पदम कुंवरि प्रमार बाघाट की थी।

(२०) महाराजा भारतीचन्द्र

सन् १७७५ ई० से सन् १७७६ ई० तक वि० सं० १८३२ से वि० सं० १८३३ तक ओरछा के राजा हुए थे। मानसिंह के भाई थे।

यह राजा लिधौरा में रहने लगे। भारतीचन्द्र भी निसन्तान थे अस्तु राज्य अपने भाई विक्रमाजीत विजय बहादुरसिह (दूल्हा जू) को सोंप कर स्वर्गवासी हुए थे। विजय बहादुर (विक्रमाजीत) गद्दी पर बैठे कि टहरौली के पजनसिह ने विप्लव कर दिया। विक्रमाजीत की स्थिति सुदृढ़ न थी। महाराजा शक्तिसिंह ने मौके का लाभ उठा कर चचेरे भाई खेतसिंह को पजनसिंह के दमन की सहायतार्थ भेजा। पजनसिंह के दमन पश्चात शक्तिसिंह इस इलाके १६–१७ वे गांवों पर अपना हक प्रदर्शित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करने लगे थे जिनमें बाघाट प्रमुख था। आपकी रानी कमल कुंवरि प्रमार धनगोरा की थी।

(२१) महाराजा विक्रमाजीतसिंह कुंवर दूल्हा जू

विक्रमाजीत (सन् १७७६ से सन् १८१७ ई० तक) वि० सं० १८३३ से वि० सं० १८७४ तक जन्म वि० सं० १७५३

सं० १८३३ वि० महाराजा विक्रमाजीत ओरछा के राजा हुये। इन्होंने सं० १८३३ से १८७४ वि० (सन् १७७६ से १८१७ ई०) तक राज्य किया। सं० १८४० में यह ओरछा से अपनी राजधानी स्थानान्तरित करके टीमकगढ़ ले गये। राजघराने के सभी व्यक्ति टीकमगढ़ में निवास करते हैं लेकिन ओरछा नरेश कहलाते है। सं० १८३५ वि० से सं० १८४४ वि० (सन् १७७८ से सन् १७८७ ई०) तक ९ वर्ष में टीकमगढ़ का किला बनाया था। सं० १८४० से सं० १८४४ वि० तक लिधौरा राजधानी रहने का लेख है लेकिन सं० १८४० वि० से टीकमगढ़ ही राजधानी समझी जाती है। वि० सं० १७३५ में लिधौरा का किला बनवाया था। सन् १६७८ ई० वि० सं० १७३५ में बल्देवगढ़ किला ठीक कराया। सैनिक छावनी तोप गोला बारूद गन्धक सोंझ अनाज का गोदाम बनवाया बल्देवगढ़ में ग्वाल सागर, जुगल सागर, धर्म सागर, सौतेला-सौतेली तालाब, मुचया तालाब, मगन तालाब, बनवाये जिसमें ग्वाल सागर, जुगल सागर, मुचया तालाब शेष है। टीकमगढ़ टेहरी ब्रांच बल्देवगढ़ में बलदाऊ का मन्दिर बनवाया था। वि० सं० १८४० में मोहनगढ़ का किला बनवाया था।

यह कविता प्रेमी थे। अपना नाम (लघु) कविता में लिखा हैं। इन्होंने बड़ी कुशलता से अपने राज्य के खोये हुये भाग को फिर से जीतकर अपना राज्य बढ़ाया था आपने ही सं० १८६९ में ब्रिटिश सरकार से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन्धि की थी। [23rd December 1811 Treaty & alliance with the British] श्री चन्द्र कुंवरि प्रमार करहियावाली रानी थी। इनकी रानी श्री लड़ई सरकार ने टीकमगढ़ में सं० १८६४ वि० में श्री राधा माधव मन्दिर बनवाया था। इन्होंने सं० १८७० वि० में ओरछा से ४ मील दूर सेबारी नामक पुल जामने नदी पर बनवाया था वि० सं० १८७४ वि० में इनका देहान्त हो गया।

(२२) महाराजा धर्मपालसिंह

धर्मपालसिंह सन् १८१७ ई० से सन् १८३४ तक वि० सं० १८७४ से वि० सं० १८९१ तक जन्म वि० सं० १८१०

सं० १८७४ वि० में विक्रमाजीत के पुत्र धर्मपालसिंह राजा हुए। इनकी राजकुंवरि प्रमार उबौरा रानी लड़ई सरकार ने सं० १८७८ वि० में टीकमगढ़ के नजरबाग मन्दिर का निर्माण कराया। इन्होंने सं० १८९१ वि० (सन् १८१७ ई० से सन् १८३४) तक १७ वर्ष राजा रहे। यह निःसन्तान मरे।

(२३) महाराजा तेजसिंह

तेजसिंह सन् १८३४ से सन् १८४१ ई० तक वि० सं० १८९१ से वि० सं० १८९८ तक। जन्म वि० सं० १८३२

धर्मपालसिंह निसन्तान मरे अतः विक्रमाजीत के भ्राता एवं धर्मपालसिंह के चाचा तेजसिंह सं० १८९१ वि० में राजा हुए। इन्होंने सं० १८९१ वि० से १८९८ वि० (सन् १८३४ से सन् १८४१ ई०) तक ७ वर्ष राज्य किया। आपकी रानी अनूप कुंवरि प्रमार बाघाट की थी।

इसी समय ओरछा–दतिया सीमावर्ती ग्राम बाघाट के जागीरदार गन्धर्वसिंह ने तरीचर के पास के ग्राम पुलिया खेरा को जला डाला था!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा की सेना ने इस कुकृत्य का विरोध कर गन्धर्वसिंह का दमन किया। जागीरदार ने दतिया शरण लेकर उक्त गांवों पर दतिया का अधिकार बतलाया। एक फौज दतिया से आई। इस दन्द में २०० लगभग व्यक्ति मारे गये थे परन्तु जब यह स्पष्ट हुआ कि यह ग्राम वास्तव में ओरछा राज्य का है तो दतिया की सेना वापिस चली गई।

(२४) महाराजा सुजानसिंह (द्वितीय) सन् १८४१ ई० से सन् १८५४ ई० तक वि० सं० १८९८ से वि० सं० १९११ तक जन्म वि० सं० १८५२

राजा तेजसिंह की मृत्यु के बाद उनका लड़का सुजानसिंह द्वितीय ने वि० १८९८ में राज्य शासन प्राप्त किया था। किन्तु धर्मपालसिंह की पत्नी लड़ई रानी ने आपत्ति की और गोद लेने का दावा किया। इससे रियासत के दो भाग हो गये जिसे नया और पुराना राज्य कहते है। लड़ई रानी का हिस्सा पुराना राज्य कहलाता था। इस झगड़े के सबब से राजा सुजानसिंह झाँसी चले गये और झाँसी में दो साल तक रहे। बाद में ओरजा आये पन्तु इनके साथी पृथ्वीपुर में लड़ाई में मारे गए जिससे वह फिर झांसी चले गये। सरकार ने राजा तेजसिंह की मृत्यु के पश्चात इनकी गद्दी नसीनी स्वीकार कर ली थी। इससे यही ओरछा की गद्दी पर अधिकारी हुए। लड़ई रानी का दावा खारिज कर दिया गया किन्तु वे छोटे थे। इससे लड़ई रानी ही प्रबन्ध कर्ता मानी गई। इनके कोई सन्तान नहीं थी। आपकी रानी सरोजकुंवरि उद्गुवां की थी। इससे इनकी मृत्यु के बाद देवीसिंह ने दावा किया परन्तु सरकार ने उनका दावा खारिज करके लड़ई रानी को हम्मीरसिंह को वि० सं० १९११ में गोद लेने की आज्ञा दे दी इनके पिता दिगौड़ा रहते थे जो मदनसिंह दिमान हरदौल के वंशज दसवीं पीढ़ी में थे। हरदौल, विजयसिंह, परतापसिंह, भगवन्तसिंह, रतनसिंह, खुमानसिंह, शत्रुजीतसिंह, रामसिंह, मदनसिंह हम्मीरसिंह हुये। वि० सं०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९१४ (सन् १८५७ ई०) के राज्य विद्रोह के समय रानी ने अंग्रेजों के पक्ष का समर्थन किया जब अंग्रेज लोग ग्वालियर से भागकर बानपुर से टीकमगढ़ आये तब राजा ने अंग्रेजों का अच्छा सत्कार किया और झाँसी छोड़ने के समय नत्थे खां बीजर ने स्वतः जाकर अंग्रेजों की सहायता की थी। वि० सं० १९१९ में हम्मीरसिंह को गोद लेने की सनद मिली थी। रानी लड़ई सरकार वि० सं १९१४ में मर गई थी।

बुन्देलखण्ड के राजाओं के साथ अंग्रेजों की संधियां हुई थीं। इन सब लोगों को अपने अधिकार में रखने के लिए इन लोगों ने छाबनियों में फौज रखी और उनके प्रबन्ध कीं देख रेख के लिये पालिटिकल एजेन्ट रखे। सं० १८९२ (सन् १८३५ ई०) में पश्चिमोत्तर प्रदेश के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के सुपुर्द उन राज्यों की देखरेख का भार था। चार साल के बाद सागर और दमोह के जिले पश्चिमोतर प्रदेश से अलग कर दिये गये। इन जिलों का अधिकार कमिश्नर को दिया गया। वह कमिश्नर झांसी के पोलिटिकल एजेन्ट के अधीन था।

पीछे झांसी का पोलिटिकल एजेन्ट नौगांव चला गया और बुन्देलखण्ड ग्वालियर के रेजीडेन्ट के अधीन हो गया। कुछ वर्षों के बाद वि० सं० १९११ में मध्य भारत के सब राज्य सेन्ट्रल इण्डिया कहलाने लगे और इनकी देख रेख इसी एजेन्सी के एजेन्ट के सुपुर्द कर दी गई। तदुपरान्त वि० सम्वत् १९४५ में खनियाधाना राज्य ग्वालियर रेजिडेन्ट के अधिकार में कर दिया गया।

बुन्देलखण्ड के अन्य राज्यों को सनदें मिली और अंग्रेज सरकार को इन राज्यों के आंतरिक प्रबन्ध में भी हस्तक्षेप करने का बहुत कुछ अधिकार था। शासकों ने अंग्रेजों से सनदें लेकर अंग्रेजों की आधीनता स्वीकार की इन सनद वाले राज्यों के भी दो विभाग थे पहिले विभाग में वह सब राज्य आते हैं जिन्हें फौजदारी और दीवानी के पूरे अधिकार हैं परन्तु कत्ल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(खून) के मामलों में पोलिटिकल एजेन्ट की अनुमति लेनी पड़ती थी। इस विभाग में पन्ना, चरखारी, अजयगढ़, बिजावर, बावनी और छतरपुर राज्त थे। दूसरे विभाग के राज्यों की फौजदारी मामलों में भी पूरे अधिकार नहीं थे इन राज्यों के बड़े बड़े मुकदमे पोलिटिकल एजेन्ट करता था। इस विभाग में सरीला, धुरवई, बिजना, टोड़ी-फतेहपुर, पहाड़ी (बांका) थे। जिगनी, लुगासी, बिहर बेरी, अलीपुरा, गौरहार, गरौली और नयगुवां रिबई थी। परन्तु इन सब में ओरछा राज्य सबसे प्रमुख माना जाता था।

राजा सुजानसिंह के शासनकाल में बुन्देला विद्रोह वि० सं० १८९९ सन १८४२ ई० में हुआ था इसमें सागर जिले में चन्दापुर के बुन्देला जवाहरसिंह और मालथौन के समीप नराट घाटी में मधुकरशाह और गनेशजू ने बुन्देला विद्रोह किया था वहुत से पुलिस वालों को मार डाला था और बहुत से आदमियों के साथ खिमलासा, खुरई, नरयावली, धामौनी विनौका लूट लिये थे। नरसिंहपुर के जमीदार देलनशाह गौड़ने भी उपद्रव आरम्भ किया था। उसने देवरी और उसके आस पास का इलाका लूट लिया था यह धूम साल भर तक मची रही अन्त में मधुकरशाह और गनेश जू मानपुर में पकड़े गये और मधुकरशाह को फांसी की सजा दी गई सागर जेल के पीछे अभी चबूतरा बना है सब लोग पूजा करने जाते हैं। गनेश जू को काला पानी की सजा दी गई थी। वि० सं० १९११ में महाराजा सुजानसिंह स्वर्गवासी हो गये थे।

(२५) महाराजा हम्मीरसिंह जन्म वि० सं० १८९१

महाराज हम्मीरसिंह (सन् १८५४ ई० से सन् १८७४ ई० तक) वि० सं० १९११ से वि० सं० १९३१ तक,

महाराजा सुजानसिंह की मृत्यु के बाद इनके कोई सन्तान नहीं थी इससे लड़ई सरकार ने वि० सं० १९११ में हम्मीरसिंह को गोद लिया था यह द्विोड़ा के मदनसिंह के पुत्र थे हरदौल के वंशज थे आपकी पहली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रानी रतन कुंवरि प्रमार उबोरा तथा दूसरी रानी कमल कुंवरि प्रमार छिपरी वाली थी। आपने ओरछा का राज्य २० साल किया। हम्मीरसिंह के सन्तान नहीं थी इससे आपके निज भ्राता प्रतापसिंह को गोद लिया गया था।

कमल कुंवरि छिपरी वाली लड़ई सरकार ने प्रतापसिंह को दिगौड़ा से गोद लिया था वि० सं० १९३१ में (सन् १८७४ ई० में हम्मीरसिंह का देहान्त हो गया और रानी छिपरी वाली वि०सं० १९३३ में मर गई थी।

महाराजा हम्मीरसिंह के शासनकाल में प्रजा बहुत सुखी थी गरीबों को शासन से सहायता दी जाती थी धर्म सम्बन्धी अनेकों कार्य होते रहते थे। भक्तों और सन्तों का आदर सम्मान था। अनाथ बच्चों व विधवा औरतों को सरकारी भोजन मिलता था श्री लक्ष्मी जी मन्दिर में चित्रकारी मरम्मत आपके समय में हुई थी।

(२६) H. H. श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर प्रतापसिंह जू देव बहादुर के० सी० एस० आई०

(सन् १८७४ ई० से सन् १९३० तक)

महाराजा प्रतापसिंह वि० सं० १९३१ से वि० सं० १९८७ तक

आपका जन्म वि० सं० १९११ में हुआ २० साल की उम्र में राजा हुए वि० सं० १९३१ अर्थात् सन् १८७४ ई० में ओरछा महाराजा प्रतापसिंह हुए जो दिगौड़ा के मदनसिंह जागीरदार साहब के पुत्र थे गोदी में ओरछा की गद्दी पर आसीन हुए। महारानी वृषभानकुंवरि से दो पुत्र तथा तीन कन्यायें हुई। सबसे बड़े पुत्र का नाम राजा बहादुर भगवन्तसिंह थे भगवन्तसिंह के चार पुत्र हुए (१) महाराजा वीरसिंह (२) श्री राव–राजा करनसिंह (३) श्री राव राजा जयेन्द्रसिंह (४) श्री राव राजा महेन्द्रसिंह थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराजा प्रतापसिंह के द्वितीय पुत्र महाराजा बिजावर सामन्तसिंह जू देव थे जो वि० सं० १९५५ में ओरछा से विजावर की गद्दी पर गोद लिये गये थे सामन्तसिंह के दो रानी थीं (१) महारानी रतनकुंवरि जिन्होंने चित्रकूट में विशाल मन्दिर रत्नेश्वर भगवान का बनवाया (२) महारानी कंचनकुंवरि ने अयोध्या में कंचन भवन मन्दिर बनवाया था।

महाराजा प्रतापसिंह सन् १८७६ ई० से स्वयं प्रबन्धक बने सन् १८७७ ई० में हाईस्कूल कन्या पाठशाला, किला का कुछ भाग बनवाया जुगलीहाल, प्रतापगढ़ (जिलाधीश आफिस) तालकोठी, प्रताप सागर, बड़ा तालाब, लड़वारी का तालाब, कुन्डेश्वर का बाग, महेन्द्र बाग, जानकी बाग बग्गी खाना, तोपखाना, गाड़ीखाना, गऊशाला, रमन्ना चरोवर बनवाया। टारौली परगना का कर तीन हजार रुपया माफ कराया। महाराजा प्रतापसिंह की शादी (१) खिरिया नाका (२) सेंगुवां (३) वरोई हुई थी। महाराजा सामन्तसिंह बिजावर की शादी सौरई, करइया में हुई थी।

पलेरा पर चढ़ाई

श्री राव साहब चामुन्डराव पलेरा स्वतन्त्रता संग्राम वि०सं० १९५० अर्थात् १७दिसम्बर सन् १८९३ ई० में हुआ था। जिसमें श्री सवाई महेन्द्र महाराजा ओरछा ने पलेरा विजय किया था। राव साहब चामुन्डराव १७ दिसम्बर सन् १८९३ ई० में नौगांव में बीमार होकर देहान्त हो गया और छोटे राव साहब छत्रसाल पलेरा से कैद होकर टीकमगढ़ में नजरबन्द किये गये थे। पलेरा की जागीर खालसा कर दी गई थी।

जनकपुर धाम (नेपाल जयनगर जिला मधुवनी बिहार में वि० सं० १९५० सन् १८९३ ई०) में सर्वश्रेष्ठ मन्दिर श्री किशोरी जू का महल निर्माण कराने में नौ लाख रुपया व्यय हुए थे इस मन्दिर को नौ लखा मन्दिर (महल) कहते हैं। श्री जानकी मन्दिर जनकपुर का श्री सवाई महेन्द्र महाराजा प्रतापसिंह ओरछा नरेश का बनवाया है। मन्दिर बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हाँ सुदृढ़ मनोहर और विशाल बना हुआ है। ७०० सात सौ बीघा जमीन श्री किशोरी ने मन्दिर की सेवा में लगाई गई थी।

महाराजा प्रतापसिंह की महारानी वृषसानकुंअरि ने वि०सं० १९४८ से वि० सं० १९६५ तक अयोध्या में कनक भवन का निर्माण कराया था मन्दिर की सुरक्षार्थ जिला जौनपुर में ग्राम बारह कनक भवन के नाम से अर्पण किये थे।

कनक भवन अयोध्या का मन्दिर इस समय भी ओरछा राज्य वंश की निजी सम्पत्ति है जिसका प्रबन्ध महाराजा औरछा वर्तमान करते हैं।

बुन्देलखण्ड के देशी राज्यों में ओरछा का प्रथम स्थान है। ओरछा राज्य को अपने आन्तरिक प्रबन्ध का पूरा अधिकार था। यह राज्य सनद वाले राज्यों में से नहीं था। ओरछा राज्य से अंग्रेजी राज्य से सन्धियां हुई थीं। ओरछा राजा हम्मीरसिंह वि०सं० १९३१ में निसन्तान मरे थे। इन्हें वि० सं० १९२२ में महाराजा की पदवी मिली थी। इनके मरने पर इन्हीं के छोटे भ्राता प्रतापसिंह गद्दी पर आसीन हुये थे उस समय इनकी आयु २० साल की थी। पर राज्य नियमों से अनविज्ञ होने के कारण सरकार ने मेजर ए० मेन को राज्य का प्रबन्धकर्ता नियुक्त किया था। महाराज की पूर्व रियासत ने वि० सं० १९१४ के राज विद्रोह के समय अंग्रेजों की अच्छी सहायता की थी। उसी के उपलक्ष में टारौली जागीर का तीन हजार रुपया वार्षिक कर जो पहिले झाँसी के राजा को दिया जाता था और अब अंग्रेजी सरकार लेने लगी थी माफ कर दिया गया था। इसके सिवा मोहनपुर का दो सौ रुपया वार्षिक लगान भी छोड़ दिया गया था महाराजा को वि० सं० १९४३ में सर हिज हाईनेस राजा बुन्देलखण्ड और सवाई महेन्द्र की पदवियां दी गई थीं और वि० सं० १९५५ में जी० सी० आई० ई० की पदवी मिली थी। इसके पश्चात् वि० सं० १९६३ में जी०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सी० एम० आई० की पदवी से विभूषित किए गए थे। इन्हें १९ तोपों की सलामी मिलती थी।

ओरछा का काश्तकारी लगान का कानून बहुत अच्छा था। यह कानून पुरानी प्रथा के ही अनुसार था इस कानून के अनुसार किसानों को लगान देने में कष्ट नहीं होता था। क्योंकि जब उपज हो जाती थी तब लगान सरकार को दिया जाता था। अंग्रेजी राज्य में लगान पहिले ही से नियत किया जाता था और काश्तकारों को वह देना ही पड़ता था। यदि उपज न हुई तो लगान देने में कठिनाई होती थी। ओरछा में किसानों के लिए बीज और रुपया भी कर्ज में दिये जाते थे। जब उपज होती थी तब वसूल किए जाते थे। लगान आदि की वसूली मालगुजार करता था। वह नांव का प्रधान समझा जाता था। परन्तु किसानों के अधिकारों की रक्षा सरकार से होती थी। यहां पर राजा सब भूमि का मालिक नही समझा जाता था क्योंकि मालगुजारों के पास जो जमीन है उसके वास्तविक मालिक वही माने जाते थे। बुन्देलखण्ड के राज्यों में ओरछा की राज्य प्रथा बहुत सराहनीय रही थी। वि० सं० १९८७ सन् १९३० ई० स्वर्गवासी हुये थे।

श्री सवाई महेन्द्र महाराजा वीरसिंह के पुत्र सवाई महेन्द्र महाराजा देवेन्द्रसिंह जू देव बहादुर हुए आपके पुत्र महाराजा मधुकरशाह सिंह जू देव बहादुर हुए।

सवाई श्री राव राजा करनसिंह के पुत्र सवाई रावराजा नरेन्द्रसिंह जू देव तथा सवाई राव बहादुर ज्ञानेन्द्र जू देव हुए जो दिगौड़ा ग'द गये थे।

सवाई श्री राव राजा जयेन्द्र के पुत्र सवाई राव राजा प्रधुम्नसिंह जू देव हुए श्री सवाई राव राजा महेन्द्रसिंह के पुत्र दिनेशसिंह हुये।

[२७] H. H. श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर वीरसिंह जू देव बहादुर के० सी० एस० आई०

वि० सं० १९८७ से वि० स० २०१३ तक अर्थात् सन् १९३० ई० से सन् १९४८ तक राजा रहे सन् १९५६ में स्वर्गवासी हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराजा प्रतापसिंह की मृत्यु सं० १९८७ वि० के बाद आपके नाती (प्रपौत्र) महाराजा वीरसिंह गद्दी पर वि०सं० १९८७ में महाराजा ओरछा हुए। जन्म सन् १८९९ ई० वि०सं० १९५६ में हुआ था।

खरगापुर की चढ़ाई

वि० सं० १९११ अर्थात् १२ फरवरी सन १८३४ ई० खरगापुर के जागीरदार दिमान किशोरसिंह ने स्वतंत्रता संग्राम किया। इसका दमन करने लड़ाई शुरू होने के समय समझौता हो गया दिमान अर्जुनसिंह, दिमान रघुराजसिंह ने लड़ाई करने का कार्यक्रम बन्द कराया था।

ओरछा राज्य में परदेशी विरोधी सैनिक क्रान्ति सन १९३५ ई० वि० सं० १९९२ में आन्दोलन हुआ था वह स्वतंत्रता और स्वामीपन की क्रांति थी पलटन नाम की लड़ाकू सेना में ८०० जवान थे जिसमें ८ सूवेदार ८ हवालदार ८ लैसनायक ८ जमादार थे प्रत्येक पलाटून में १०० जवान रहते थे पलटन के अतिरिक्त गिराई जलेब-तोपखाना, रिसाला पीलखाना भी शामिल था जिसे मिलैटरी कहते थे १४ अप्रैल १९३५ ई० को स्वतंत्रता संग्राम पलटन वालों ने किया था बाद में समझौता हो गया था।

ओरछा राज्य का भूमि प्रबन्ध

महाराजा वीरसिंह देव ने कृषकों के हितार्थ, भूमि की किस्म के आधार पर लगान निश्चित किया था। उन्होंने प्रत्येक ग्राम की जमा बंदी तैयार कराई थी जिसमें ग्राम सीमा के प्रत्येक नम्बर, की किस्म भूमि, दर और कुल भूमि तथा कुल रकम की भूमि दर्शाई गई थी। वास्तव में यह दस्तावेज भूमि का ब्यौरा पुराण है: जिसमें संदेह मनमानी और अनिश्चय सदा के लिए समाप्त कर दिया गया था जमाबंदी के अनुसार राज्य की भूमि १२३ किस्म की पाई गई था, जिसे सामान्यतः निम्न ५ भागों में विभक्त कर लगान कायम किया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—काबर भूमि ३ रुपये ८ आना से साढ़े चार रुपया प्रति एकड़ ।

२—पड़ुआ भूमि तीन रुपया दो आना से तीन रुपया बारह आने तक ।

३—राँकड़ भूमि बारह आना से चौदह आना प्रति एकड़ ।

४—छापर भूमि आठ आना से १२ आना ।

५—पठार पहाड़, तालाब और डूबा की भूमि बिना लगानी रखी गई थी । किसान से लगान फसलों के अनुसार दो किस्तों में वसूल करने का प्रावधान रखा गया था ।

सर्वे के पश्चात भूमि व्यवस्थापन अनोखे ढंग से किया गया था । राज्य की समूची भूमि को स्वामित्व, श्रेणियों, उपयोगिता और पद स्थापना के आधार पर ११ वर्गों (जिमन) में विभक्त की गई थी—

जिमन १—सीर की भूमि जिसे जागीरदारान स्वयं जोतते थे ।

जिमन २—किसान द्वारा जोती जाने वाली भूमि अर्थात खुद कास्त भूमि ।

जिमन ३—(अ) मन्दिरों-देवालयों के नाम भूमि ।
(ब) जागीरदार या व्यक्ति की मुफ्त में दी गई भूमि ।

जिमन ४—पैतृक भूमि का पट्टेदार जो भूमि को बेच या रेहन रख सकता था ।

जिमन ५—बछयावती भूमि-वह भूमि जिसे कृषक ने त्याग दिया हो ।

जिमन ६—गैर हकदारी भूमि-ऐसी भूमि जिसे कृषक बिना पट्टा लिये समय-समय पर जोतता हो ।

जिमन ७—चौकीदार, कोटवार को राज्य द्वारा काम के बदले दी गई भूमि ।

जिमन ८—गौचर भूमि जो राज्य से ग्राम के मवेशियों को चारागाह हेतु रखी गई थी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिमन ९—(अ) सरकारी पड़ती वंजर भूमि ।

(ब) सरकारी वह भूमि जो खाद गढ्डों, कुमर गढ़ा, रास्ता मार्ग, शमसान आदि की भूमि जो लोगों के सामाजिक सामूहिक निस्तार की रखी गई थी ।

जिमन १०—(अ) पानी डूबी भूमि ।

(ब) गांव या नगर की बस्ती आवादी भूमि ।

जिमन ११—पहाड़, पठार की बिना लगानी भूमि ।

ओरछा राज्य से कृषकों को सुविधायें

कृषि विकास को प्रोत्साहित करने के लिये राज्य से किसानों को निम्न सुविधायें दी जाती थी ।

१—जो कृषक के नया कुआँ निर्माण कर अथवा वंधिया डालकर नौ (नव-तोड़) तोड़ भूमि में खेती करता था उससे ३ से ७ वर्ष तक लगान नहीं लिया जाता था ।

२—छोटे-छोटे चेन्देली तालाबों से सिंचाई करने की आवपासी नहीं देनी पड़ती थी ।

३—सामान्य नौतोड़ भूमि पर खेती करने वाले को प्रथम वर्ष की लगान की छूट रहती थी ।

४—कृषक को हल, बखर, रहट, मकान, वागड़ की लकड़ी और खेतों की बागड़ के जरेंटा मुफ्त में दिये जाते थे ।

५—कृषक के मवेशियों पर चरू नहीं ली जाती थी ।

६—चार आना प्रति पेड़ की दर से ऊगड़ की भूमि के महुआ, आम किसानों को फसल लेने हेतु दिये जाते थे ।

७—गांव वाले कृषकों को, खाद गड़ा, कुआ के मौन-नहर की भूमि गाँव से लगी भूमि मवेशियों के खड़े होने को उवेर, कुम्हारों को कुमरगड़ा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बांध, बखिला की भूमि, श्मसान भूमि रास्ता मार्ग चरागाह आदि मुफ्त दिये जाते थे।

८—कृषकों को मकान बनाने, बगर (मवेशी बाड़ा) बनाने, सब्जी लगाने, घास, चारा रखने हेतु बाड़ा भी मुफ्त दिया जाता था।

९—किसान सभी प्रकार के करों से मुक्त था। लगान चैत-कार्तिक दो किस्तों में लिया जाता था।

१७ दिसम्बर सन् १९४७ ई० को टीकमगढ़ में किले के मैदान में ओरछा महाराजा वीरसिंह देव ने सेवा संघ की मेजर पार्टी मानते हुए ओरछा राज्य की पूर्ण सत्ता जनप्रिय मन्त्रियों के हाथ में सौंप देने की घोषणा की गई थी इस ऐतिहासिक घोषणा का अपार जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया था देश के बहुत से नेताओं ने इस सफलता के लिए शुभ सन्देश भेजे और ओरछा के महाराजा की प्रशंसा की गई। ओरछा राज्य गजट दिनाँक १८–१२–४७ पृष्ट १ व २ पर लिखा है।

मन्त्री मण्डल राज्य ओरछा दिनांक १७–१२–४७ ई० से दिनांक २१–४–४८ ई० तक विन्ध्य प्रदेश शासन दिनांक २१–४–४८ ई० से दिनांक १७–११–५६ ई० तक मध्य प्रदेश शासन काल दिनांक १७–११–५६ ई० से वर्तमान समय है।

आपके शासन काल में सन् १९३६ ई० में वेतवा नदी का पुल बना था महाराजा वीरसिंह देव की महारानी नन्द कुंवरि बड़वान नरेश की कन्या थीं। महाराज देवेन्द्रसिंह का जन्म सन् १९२१ में हुआ था। महाराजा वीरसिंह देव की द्वितीय महारानी गौडल नरेश की कन्या कमला देवी राज माता थीं जो सन् १९७३ में स्वर्गवासी हुईं। महाराजा वीरसिंह देव का स्वर्गवास सन् १९५६ ई० में हो गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२८) H. H. श्रीसवाई महेन्द्र महाराजा सर देवेन्द्रसिंह जू देव बहादुर के० सी० एस० आई०

महाराजा वीरसिंह की मृत्यु सन् १९५६ के बाद आपके पुत्र ओरछा के महाराजा देवेन्द्रसिंह हुए आपका जन्म सन् १९२१ ई० में हुआ था आपकी शादी दिनांक २४–४–३६ ई० को विजय नगर नरेश की कन्या उर्मिला देवी के साथ हुई थी। आपसे दिनांक १०–१–४५ को महाराजा मधुकरशाहसिंह का जन्म हुआ था। श्री महारानी साहिबा उर्मिला देवी का देहान्त १३–५–७३ ई० को हो गया था श्री राजाबहादुर मधुकरशाह-सिंह की शादी दिनांक ६–७–७३ ई० को श्री महाराजा नाभा जी दिल्ली की कन्या स्नेहलता के साथ सम्पन्न हुई थी। ओरछा राज्य वंश के सपरिवार सहित टीकमगढ़ में निवास करते हैं टीकमगढ़ जिला म० प्र० में है।

दिनांक ९-५-७९ ई० को स्वर्गवासी देवेन्द्रसिंह महाराजा हुए।

(२९) H. H. श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर मधुकरशाह जू देव बहादुर के० सी० एस० आई०

दिनांक ९–५–७९ ई० को श्री सवाई महेन्द्र महाराजा देवेन्द्रसिंह जू देव का स्वर्गवास हो गया। वर्तमान समय में राजगद्दी पर आसीन H. H. श्री सवाई महेन्द्र महाराजा सर मधुकरशाह जू देव बहादुर ओरछा नरेश विख्यात है। बड़े धर्मात्मा दयालु है।

महाराजा छत्रसाल

(जन्म वि० सं० १७०६ देहान्त वि० सं० १७८८)

महाराज चम्पतराय का जन्म वि०सं० १६२४ और देहान्त वि० सं० १७२१ में हुआ था। आपका सम्पूर्ण जीवन काल लड़ाई में ही बीता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह मुगलों की अधीनता स्वीकार करने में कभी तैयार नहीं हुए परन्तु सदा ही स्वतंत्रता के लिए युद्ध करते रहे थे मुगलों से युद्ध के समय इनके अतुल रण कौशल का परिचय सारे भारत को मिल गया था। आपके पुत्र छत्रसाल का जन्म वि० सं० १७०६ में हुआ था। जिस समय वीर बालक छत्रसाल का जन्म हुआ उस समय मुगल लोगों से चम्पतराय की लड़ाई चल रही थी। छत्रसाल का जन्म मोरपहाड़िया (जतारा) के जंगल में हुआ था जहां पर मुग़ल लोग चम्पतराय को घेर लेने का प्रयत्न कर रहे थे। जन्म से ही छत्रसाल को महलों की सेज सोने को नहीं मिली किन्तु प्रकृति देवी की गोद ही इन्हें जन्म से खेलने को मिली।

एक समय जब छत्रसाल की अवस्था सात माह की थी राजा चम्पतराय उनकी रानी लालकुंवरि (सारन्धा) और कुछ सैनिक जंगल में अपना भोजन बनाकर खा रहे थे। अचानक मुगल सेना ने इन सबको घेर लिया और इनका भागकर निकल जाना भी कठिन हो गया। सब सैनिक भागे और चम्पतराय भी रानी लालकुंवरि (सारन्धा) के साथ भाग गये पर सात महीना के छत्रसाल को उठा लेने का किसी को ध्यान न रहा। चम्पतराय और उनके सैनिकों के भाग जाने के पश्चात् मुगल सेना उस स्थान पर आ पहुंची और चम्पतराय को वहां पर न देख करके चली गई। छत्रसाल उसी स्थान पर पड़े रहे और सौभाग्य से बच गये। इसके पश्चात् जब चम्पतराय ने देखा बालक छत्रसाल उनके साथ नहीं है तो उन्होंने ढूढ़ने को अपने सिपाही भेजे और एक सिपाही छत्रसाल को उठा लाया। छत्रसाल को पाकर चम्पतराय को असीम आनन्द हुआ परन्तु उन्होंने छत्रसाल को ऐसी दशा में अपने पास न रखने का निश्चय किया। इस घटना के दूसरे दिन ही रानी लालकुंवरि (सारन्धा) अपने पुत्र छत्रसाल को लेकर अपने नैहर चली गई वहां पर छत्रसाल और उनकी माता चार वर्ष तक टेकड़ी ग्राम में रही थीं।

जब चम्पतराय और रानी लालकुंवरि (सारन्धा) की मृत्यु वि० सं० १७२१ में हुई उस समय छत्रसाल सहरा नामक ग्राम में थे समाचार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुनकर शोक होना स्वाभाविक ही है। परन्तु वह उत्साही और धैर्यवान युवक थे इन्होंने अपने रहने का स्थान और सेना संग्रह करने का प्रबन्ध तुरन्त ही सोच लिया अपनी जागीर महेबा चले गए परन्तु शीघ्र ही ऐसा प्रसग आया कि जिसमें छत्रसाल को अपनी बाहुबल और रण चातुर्य की आवश्यकता पड़ी।

वि० सं० १७१९ में छत्रसाल ने दतिया के राजा शुभकरण के यहां नौकरी करली और अजमेर के राजा जयसिंह की सेना में वि० सं० १७२० में भर्ती हो गये वि० सं० १७२४ में वीर श्रेष्ठ हिन्दूकुल कमल दिवाकर श्री शिवाजी से बीजापुर में भेंट हुई एक तलवार शिवाजी ने छत्रसाल को प्रदान की ओरछा के राजा सुजानसिंह का प्रोत्साहन पाकर आपकी प्रतिभा चमत्कृत हो गई। मोर पहाड़िया के जंगल में सेना इकट्ठी करने लगे। और धामौनी–ऐरछ–सिहोरा को विजय किया छत्रसाल के पिता के साथी और उनके पुराने मित्रों ने बड़ी सहायता दी जिन लोगों ने विशेष सहायता दी उनमें प्रधान यह है गोविन्दराय जैतपुर वाले-कुंवर नारायनदास-सुन्दरमन प्रमार–रामभनदौआ–मेघराज पड़िहार–धुरमांगद–बख्शी कायस्थ किशोरी लाल–अच्छे रावत–मानशाह–हरवंश–भानुभाट-बम्बल कहार और फत्तो वैश्य थे। छत्रसाल के भ्राता अंगदराय ने भी विशेष सहायता दी वि० सं० १७२४ में छत्रसाल का विवाह परी की प्रमारों की बेटी देवकुंवरि के साथ हो गया। औरंगाबाद-धर्मगज-चन्देरी धसान की पूर्वी भाग पर विजय प्राप्त कर स्वतंत्र राज्य बनाया। वि० सं० १७२५ से खटोला वि० सं० १७२६ में वनघौरा सिरोज, महियर ग्वालियर, पवाया, कटिया, बांसी खादहनूरेक मऊ कौंच, जिगनी, जालौन, उरई, कालपी, कदौरा, जलालपुर, हमीरपुर, मुहदा, बांदा, राजनगर, मनियादेव, कुलिया, झिन्ना, पदमापुरी अजमगढ़, कालिंजर राजगढ़, नागौद पहाड़ी, डोरा पातरकछार, चित्रकूट, शाहपुर, राजापुर मऊछावनी, वरगढ़ विजय कर स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। बुन्देला नाला को अपनी सरहद बनाया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वि० सं० १७२९ में गढ़ा कोटा का किला विजय किया और उसी समय औरंगजेब का सेनापति रणदूलहखां और ग्वालियर का सूबेदार फिदाई खां अपनी विशाल सेना सहित ओरछा के मन्दिरों को तोड़ने और मूर्तियां फोड़ने के लिए आक्रमण ओरछा पर किया। ओरछा के राजा सुजानसिंह ने छत्रसाल को सहायतार्थ बुलाया उस समय घमासान युद्ध हुआ और रणदूलह खाँ, फिदाई खां हार मानकर वापिस चले गये।

छत्रसाल के भाई रतनशाह बिजौरी में रहते थे। उसकी सहायता से औड़ेरा नामक ग्राम में आये यहां पर छत्रसाल के सब साथियों ने मिलकर अपना मुखिया बनाया। युद्ध में और लूट में जो माल मिले उसमें छत्रसाल का हिस्सा ५५/१०० बल दिबान का हिस्सा ४५/१०० नियत हो गया सब बुन्देलों ने यहां आकर स्वाधीनता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा की।

अपनी प्रतिज्ञाओं के नियम इस प्रकार निश्चित किये।

१—क्षत्रियों का धर्म पालना २—देश और जाति की रक्षा करना ३—धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाले और प्रजा को कष्ट देने वाले यवनों का नाश करना ४—उन राजाओं और सूबेदारों को दण्ड देना जो विजयातीत यवनों से मेल करके हिन्दुओं पर अत्याचर करे।

इस प्रकार छत्रसाल निश्चय करके युद्ध की तैयारी कर दिग्विजय आरम्भ कर दी। धंधेरखण्ड पर चढ़ाई कर दी कुंवर सेन धंधेरा युद्ध में हार गया उसने छत्रसाल की स्वाधीनता स्वीकार करली अपने भाई हिरदेशाह की लड़की दानकुंवरि का विवाह छत्रसाल के साथ वि० सं० १७२९ में हो गया।

वि० सं० १७३० में मुहम्मद हासिम खाँ सिरौज के थानेदार को तीन सौ सिपाही सहित मार कर भगा दिया और सिरौंज तथा तिवरी ग्राम को लूट लिया। लूट का धन सिपाहियों को जो छत्रसाल की सेना में थे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बांट दिया इससे सेना में भारी उत्साह हुआ और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए पवित्र कार्य में सहायता देने के लिए दूर दूर के बुन्देला ठाकुर छत्र-साल की सेना में भर्ती होने लगे। बुन्देलखण्ड में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत में छत्रसाल की वीरता प्रसिद्ध हो गई।

धामौनी के जागीरदार छत्रसाल से युद्ध में वि० सं० १७३० में हार गया। छत्रसाल की स्वाधीनता स्वीकार करके चौथा हिस्सा आमदनी का सहर्ष देने लगा। मैहर पर आक्रमण कर माधवसिंह को हराया और तीन हजार रुपया वार्षिक कर छत्रसाल को मिलने लगा। बासा के जमीदार केशवराम दुरंगी को युद्ध में मार डाला और उसके पुत्र विक्रमाजीत को अपनी सेना का सेनापति बनाया।

वि० सं० १७३३ में ग्वालियर के सूबेदार मुनौवर खां व उसके सेना पति बहादुर खाँ को युद्ध में हराया और ग्वालियर को लूटा सवा करोड़ रुपया बहुत से रत्नों को लेकर वापिस आये उस समय सिरौंज के थानेदार मुहम्मद हासिम अंगदराय चौधरी ने कटिया नामक जंगल में आकर छत्र-साल से युद्ध किया हार कर भाग गये विजय की पताका उड़ाते हुए छत्र-साल हनूटेक आये मोहर के धंधेर हरिसिंह की कन्या उद्दैतकुंवरि के साथ विवाह हुआ। हनूटेक से वह मऊ आये और महेबा नामक दूसरा गाँव बसाया।

वि० सं० १७३४ में गढ़ाकोटा किला को विजय करके सागर के पास रण दूलहखाँ ने फिर बड़ी भारी सेना से हमला छत्रसाल पर कर दिया युद्ध में रण दूलह खाँ के दस सरदार और सात सौ सिपाही मर गये दस तोपें छत्रसाल को मिली रण दूलह खां हार कर ललितपुर होते हुए नरवर आया छत्रसाल उसका पीछा करते गये। मार्ग में मुसलमानों के गांव लूटे। नरवर पर बहुत सा शाही खजाना लूट लिया। रणदूलह खाँ की हार और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शाही खजाना लूटने का हाल औरंगजेब को ज्ञात हुआ वह बहुत घबराया। और तुर्क सेना को अधिक संख्या में छत्रसाल से युद्ध करने भेजा। बसिया ग्राम में छत्रसाल ने तुर्की सेना के बारूदखाने में आग लगा दी। तुर्की सेना हार कर भाग गई छत्रसाल की विजय हुई। वह जिगनी ग्राम में आये वहाँ के जागीरदार हिन्दूसिंह परिहार की कन्या भगवान कुंवरि की शादी छत्रसाल के साथ हो गई।

वि० सं० १७३७ में बसिया के युद्ध की हार का समाचार औरंगजेब को मिला वह बहुत ही व्याकुल हो गया कि छत्रसाल आकर दिल्ली भी न लूट ले। उसके सरदारों में एक तहबरखां नाम का सरदार बहुत प्रवीण था उसने छत्रसाल से खुले मैदान में युद्ध करना ठीक नहीं समझा। उसी समय अपनी बरात मऊ से सैंड़वा बाजने में अपना ब्याह कराने जा रहे थे। भावरें पड़ चुकी थीं कि अचानक तहबरखां ने छत्रसाल पर हमला कर दिया परन्तु छत्रसाल की विजय हुई और तहबरखां हार मानकर दिल्ली वापस चला गया। फिर कालिंजर के किले पर आक्रमण कर दिया वहां के किलेदार का नाम करम इलाही था। छत्रसाल ने अपनी सेना लेकर चारों तरफ से किले को घेर लिया अठारह दिन तक लड़ाई होती रही मुसलमानों की सेना हारकर भाग गई छत्रसाल की विजय हुई कालिंजर के किले पर कब्जा हो गया फिर पन्ना होते हुये मऊ आये।

छत्रसाल ने वि० सं० १७४२ में सागर को लूटा फिर दमोह लूटा फिर बरहटा के राजा को विजय किया। फिर ऐरच की तरफ धावा किया ऐरच और जलालपुर को लूटा बेतवा के समीप जलाल खां नामक मुसलमान सरदार ने छत्रसाल से युद्ध किया वह कैद कर लिया गया उसकी सेना भागकर सैयद लतीफ सरदार की सेना में शामिल हो गई। वि. स. १७४३ में सैयद लतीफ ग्वालियर के समीप ही था कि छत्रसाल ने उस पर धावा मारा और लतीफ अपनी जान बचाकर दक्षिण की तरफ भाग गया। उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेना के १०० अरबी घोड़े ७० ऊँट और १३ तोपें छत्रसाल की विजय में प्राप्त हुई। बांदा पर विजय प्राप्त कर राजगढ़ के समीप फिर तहबरखां की सेना मिली छत्रसाल ने इस सेना को हराया। मौहदा, मुस्करा इत्यादि को छत्रसाल ने लूटा। महोबा, राठ, पनवाड़ी आदि गांव लूटे। अजनगर पर विजय प्राप्त हुई। वि० सं० १७४४ में फिर छत्रसाल कालपी की ओर चले। वहां के सरदार दुर्जनसिंह परिहार ने छत्रसाल की शरण ली कालपी का थाना और खजाने पर अपना अधिकार कर लिया। इसके पश्चात ग्वालियर पर आक्रमण किया वहां के सूबेदार तहबरखां युद्ध में हार गया और बीस हजार रुपया देकर आधीनता स्वीकार कर ली आमदनी का चौथा भाग देने लगा। फिर भिलसे के किले पर विजय प्राप्त की। तब औरंगजेब ने फिर से एक बहुत विशाल सेना सहित अनवरखां नामक प्रबल वीर योद्धा को छत्रसाल से लड़ने भेजा भिलसा के मैदान में घमासान युद्ध हुआ इस युद्ध में छत्रसाल ने मुगल सेना का बिलकुल नाश कर दिया और सेनापति अनवरखाँ को छत्रसाल ने कैद कर लिया। तब अनवरखां ने सवा लाख रुपया देकर अपनी जान बचाई इस घटना से औरंगजेब व्याकुल हुआ और अनवरखां की भरे दरबार में बेइज्जती की और उससे सरदारी पदवी छीन ली।

वि० सं० १७४५ में औरंगजेब ने सब दरबारियों को बुलाया और छत्रसाल को विजय करने के लिये सदरुद्दीन नामक योद्धा भेजा और छत्रसाल पर हमला किया घमासान युद्ध हुआ मिरजा सदरुद्दीन कैद हो गया और छत्रसाल की स्वाधीनता स्वीकार करके चौथा भाग आय का देने लगा वि० सं० १७४६ में अब की बार खास दिल्ली के सूबेदार अब्दुल समद औरंगजेब का हुक्म पाते ही तीस हजार सवार और कई सौ पैदल सिपाहियों की सेना लेकर बुन्देलखण्ड की ओर चला। इस विशाल सेना का मुकाम मौहदा पर हुआ। छत्रसाल भी अपनी सेना सहित मौहदा नामक स्थान पर गये दोनों सेनाओं का घनघोर युद्ध एक दिन भर हुआ इस युद्ध में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब्दुल समद की शाही सेना को बुरी तरह से छत्रसाल ने हराया इस युद्ध में छत्रसाल की विजय हुई और २१ तोपें बुन्देलों को मिली। अब्दुल समद हार मानकर वापस दिल्ली चला गया और छत्रसाल कालिंजर होते हुए पन्ना आये।

वि० सं० १७४७ में भिलसे के किले को छत्रसाल ने विजय कर लिया था। परन्तु छत्रसाल के वापस आने पर फिर मुगलों ने कब्जा कर लिया इस कारण छत्रसाल ने भिलसा पर फिर आक्रमण किया तो धामौनी का सरदार बहलूलखां ने नौ हजार काबुली सेना लेकर छत्रसाल से युद्ध करने आ गया। छत्रसाल का बहलूल खां से गहरा युद्ध हुआ इस युद्ध में बहलूल खां मारा गया। शाहगढ़ और धामौनी के किले छत्रसाल के अधिकार में आ गये इस बार विजय छत्रसाल की हुई।

धामौनी से छत्रसाल मऊ चले आये फिर कोटरे पर अधिकार किया वि०सं० १७५८ में फिर वह महोबा पहुंचे महोबा व बांदा में अपना प्रबन्ध देखते हुये सेंहुड़ा पहुंचे। उस समय सेंहुड़ा दलेलखां के सूबे में था। और दलेलखाँ की तरफ से उसका नायब मुराद खां इस प्रान्त का प्रबन्ध करता था छत्रसाल ने मुराद खां से युद्ध किया और लड़ाई में मुराद खां मारा गया।

वि० सं० १७६१ में औरंगजेब ने बुन्देलखण्ड जीतने के लिए फिर उपाय किया सेनापति शाहकुली को भेजा। शाहकुली बहुत बड़ी सेना लेकर बुन्देलखण्ड में घुसा और शुरहट, कोटरा, जलालपुर इत्यादि छत्रसाल के विजय किए और वह नौली मुकाम पर ठहरा। यह पता लगते ही छत्रसाल सेना सहित शाहकुली से युद्ध करने लगे। इसी समय असमदखां नामक दूसरा मुसलमान सरदार अपनी सेना सहित शाहकुली की सहायता को आ गया इन दोनों सेनाओं में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ इस युद्ध में छत्रसाल की विजय हुई। असमद खां कैद हो गया शाहकुली हारकर वापिस दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चला आया और अपनी सहायता को और सेना माँगी । दिल्ली से औरंगजेब की आज्ञानुसार नन्दराम नामक सरदार आठ सौ सवार और सेना सहित शाहकुली के साथ फिर मऊ पर आक्रमण किया नवगांव छावनी स्थान पर युद्ध हुआ और इस युद्ध में शाहकुली कैद हो गया ।

वि० सं० १७६८ में छत्रसाल ने लोहागढ़ का किला जीतकर शिवाजी महाराज के नाती साहू जी को अर्पण कर दिया । बुन्देलखण्ड इस प्रकार स्वतन्त्र करके छत्रसाल पन्ना में रहने लगे ।

महाराजा छत्रसाल की राजधानी कुछ दिनों तक मऊ के निकट महेबा में रही । उसके बाद राजधानी पन्ना में हुई । छतरपुर नामक नगर छत्रसाल का बसाया हुआ है ।

महाराजा छत्रसाल का राज्य चम्बल नदी तक था कालपी जालौन कोंच ऐरच इसी राज्य में थे । झाँसी पहिले ओरछा के राज्य में थी । जब बहादुरशाह ने छत्रसाल से सन्धि कर ली थी तब झांसी छत्रसाल महाराज के पास आ गई । दक्षिण में छत्रसाल का राज्य नर्मदा तट तक पहुंचा था । सिरौज, गुना धामौनी, गढ़कोटा, सागर, दमोह, सागर, बांसा, मेहर यह सब छत्रसाल के राज्य में थे । पूर्व में राज्य की सीमा टोन्स नदी तक थी । कालिंजर, चित्रकूट छत्रसाल के राज्य में थे । उत्तरीय सीमा जमुना तक थी ।

वि० सं० १७७८ में बहादुर शाह मर गया उसके बाद सयैद भाइयों को मुहम्मद वंगस ने सहायता दी थी । इसलिए सैयद भाईयों ने प्रसन्न होकर उसे नबाब की पदवी देकर बुन्देलखण्ड के ऐरच, कौंच, कालपी, सेंहड़ा मौदा सीपरी और जालौन का सूबेदार बनाया गया । वि० सं० १७७८ में इलाहाबाद का सूबेदार हो गया । पीरखां मुहम्मद बंगस की ओर से कालपी का सरदार था उसे छत्रसाल ने कालपी से निकाल दिया और उसकी बनवाई मस्जिदें तुडवा दीं । दलेलखां एक क्षत्रिय राठौर वंश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का सरदार था। मुहम्मद वंगस ने उसे मुसलमान बना लिया था यह बात छत्रसाल को सहन नहीं हुई।

उसी समय मुहम्मद बंगस को कई बुन्देलों ने भी सहायता दी। इस समय ओरछे में हरदौल के प्रपौत्र उद्‌तसिंह का राज्य था। वह मुगलों की आधीनता स्वीकार कर चुके थे। इससे यह छत्रसाल के विरुद्ध मुसलमानों को सहायता दे रहे थे। सेंहुड़ा के बुन्देला पृथ्वीसिंह ने मुसलमानों को सहायता दी। दतिया के राजा उस समय रामचन्द्र थे वह पूरा सहयोग मुसलमानों को दे रहे थे। चन्देरी के राजा दुर्जनसिह और मौहदा के जयसिंह भी मुसलमानों की सहायता कर रहे थे। इन सबने छत्रसाल के विरुद्ध लड़ना स्वीकार कर लिया। ऐसे समय में सब बुन्देलों ने अपनी जाति वंश धर्म बन्धुओं का साथ न देकर मुहम्मद वगस को सहायता देना उचित समझा था। इन हिन्दू राजाओं के सिवाय इस समय मुगल सत्ता की पूरी शक्ति मुहम्मद वंगस की तरफ सहायता की हो गई थी।

मुगलों की प्रचण्ड सेना और समस्त बुन्देलों का छत्रसाल के विरुद्ध हो जाने से भी छत्रसाल की धीरता और वीरता को भी परिवर्तन नहीं हुआ और उनके सकल्प को और दृढ़ करने में सभी विरोधी सहायक माने गये थे। छत्रसाल ने युद्ध करने की तैयारी कर दी।

मुहम्मद वंगस और छत्रसाल के बीच कई युद्ध एक वर्ष तक वि० सं० १७८५-८६ तक होते रहे और मुसलमानों की तमाम सेना को मार डाला हमेशा छत्रसाल की विजय होती रही थी।

महाराजा छत्रसाल का उद्देश्य हिन्दू धर्म की रक्षा करना और भारत को यवन सत्ता से मुक्त करना था इस कार्य के लिये वह किसी भी स्वधर्माभिमानी हिन्दू से सहायता लेने को तत्पर थे महाराज छत्रसाल अपना दोहरा बल इस समय उत्थान में प्राप्त कर चुके थे। प्रथम में प्रशासनिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवस्था जो उनके बुन्देलण्ड के राजाओं के विरोधी बनने में लाभ हुआ । द्वितीय बल औरंजेब की कट्टर धार्मिक नीति से हिन्दू-मुस्लिम सम्प्रदायिक भेद उत्पन्न कर (चोटी वेटी का भय बतलाकर) परम्परा वादियों के माध्यम से जन बल प्राप्त कर अपने को हिन्दू धर्म का रक्षक की कोटि में खड़ा कर लिया था । छत्रसाल के पौरुष और पराक्रम से मुगल सत्ता भयभीत होने लगी थी । उनका पराक्रम रूपी सूर्य चारों ओर देदीप्यमान होने लगा था ।

मुहम्मद बंगस को बुन्देला राजाओं की तथा मुगल सत्ता की पूर्ण सहायता का अधिक अभिमान हो गया था । वह हमेशा छत्रसाल पर आक्रमण करता रहता था । इसी समय महाराजा छत्रसाल ने मराठों से सहायता लेना उचित समझा और उस समय मराठों के नायक बाजीराव पेशवा थे उनको पत्र में लिखकर भेजा:—

इस पत्र को पाते ही बाजीराव पेशवा अपनी बड़ी भारी सेना लेकर छत्रसाल की सहायता करने चल पड़े । उनके सामन्त मल्हाराव हौलकर भी इस सेना के साथ आ पहुंचे ।

बि० सं० १७८७ में जैतपुर के निकट मुहम्मद बंगस से महाराजा छत्रसाल का युद्ध दो माह तक होता रहा था । इस युद्ध में मुसलमानों की सेना बल हीन हो गई तो मुहम्मद बंगस का पुत्र कायमखां अपनी बड़ी सेना लेकर आ गया । उस समय छत्रसाल की सेना अजनर में थी । युद्ध से भागकर मुहम्मद बंगस फिर जैतपुर के किले के अन्दर घुस गया और किले के अन्दर से युद्ध छै मास तक होता रहा था अन्त में मुगल सेना किला से भाग गई । मुहम्मद बंगस और कायमखां सहित अपने प्राण बचा कर (औरत का भेष बनाकर) जैतपुर से हारकर भाग गया था । इस महायुद्ध में महाराजा छत्रसाल की विजय हुई और जो विरोधी राजा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुसलमानों की सहायता करते थे वह हार मानकर महाराजा छत्रसाल की शरण में आ गये थे।

बुन्देलखण्ड के संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ नं० २३१ पर महाराजा छत्रसाल की १७ रानियाँ और ६८ पुत्रों का वर्णन लिखा है।

वि० सं० १७६४ अर्थात् सन् १७०७ ई० सम्राट औरंगजेब की मृत्यु हो गई थी। उसी समय छत्रसाल ने मुसलिम प्रजा को लूटना शुरूकर दिया। बांदा, हमीरपुर, कालपी क्षेत्र में भारी लूटमार कर दी। जनजीवन अस्त, व्यस्त कर दिया था।

इतिहास वक्ताओं ने महाराज छत्रसाल के तेरह रानियों और बावन पुत्रों का होना सिद्ध किया है। चालीस पुत्रों को युद्धों में वीरगति प्राप्त हुई शेष बारह पुत्रों को वि० सम्वत् १७७८ में छत्रसाल ने अपनी राज्य सीमा का भार पृवक-पृथक रूप में इस दृष्टि से सौंप दिया था कि राज्य की व्यवस्था ठीक रूप से चल सके, किन्तु फल विपरीत हुआ। अधिकार प्राप्त कर सभी पुत्र कर्त्तव्य त्यागकर विलासिता पूर्ण जीवन बिताने लगे जिसके कारण बुन्देलखण्ड में प्रशासन व्यवस्था ढीली पड़ गई।

मुहम्मद बगस खां को इस युद्ध में पराजय होने का महान दुःख था वह तीन दिन तक बाहर नहीं निकला और भोजन नहीं किया।

छत्रसाल जैतपुर (अजनर) के युद्ध में विजयी तो हो गए परन्तु विजय मंहगी पड़ी। मराठों ने तीसरा हिस्सा मांगा तो छत्रसाल ने बहुत आनाकानी की। कई बार नकद रुपया रिश्वत में देकर टरकाते रहे थे। [महाराज छत्रसाल बुन्देला पं० ९८] परन्तु मराठे बड़े चतुर थे। रुपया भी खा गये एवं तीसरा हिस्सा राज्य भी ले लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Bajirao fully aliue to the political importance of such an alliance at onco responded. In return for the service he has randered, the made over a third shar of his possession to Bajirao E. S. G. Page 172.

महाराज छत्रसाल की चाल जब सफल न हुई तो पेशवा को अपना तीसरा बेटा मान लिया तथा बेटे को अपनी रखैल मस्तानी वैश्या भेंट कर दी। जिसका मंतव्य था कि पेशवा के भय से बुन्देलखण्ड के असन्तुष्ट राजा उनके पुत्रों को परेशान न कर सकें। परन्तु छत्रसाल का यह विचार गलत निकला। मराठों ने बुन्देलखण्ड को बाद में रौंद ही डाला।

बुन्देलों की भूमि पर मराठों ने झांसी, सागर, बांदा, जालौन एवं गुरसराय ठिकाने स्थापित कर लिए जो बुन्देली जनता एवं राजाओं के कष्टकारक रहे।

महाराजा छत्रसाल की रानी श्री कमलवति अधिक रूपवती थी लड़ाई के समय वह युद्धों में महाराज छत्रसाल के साथ में रहीं और घोड़े पर चढ़कर रण–भूमि में अतुल वीरता दिखाई। महाराजा छत्रसाल की सम्पूर्ण रानियों में यह महारानी थी आपने पन्ना में धुबेला महल–धुबेला तलाब कमलावति घाट बनवाया था। महारानी कमलवति से हिरदेशाह (हृदयशाह) और जगतराज हुए यही दोनों पुत्र राज्याधिकारी हुए।

महाराजा छत्रसाल ने अपने ही जीवन काल में बाजीराव पेशवा को तीसरा पुत्र [दत्तकपुत्र] मान लिया था। इससे पन्ना राज्य को तीन भागों में विभाजित कर दिया गया था।

१—हिरदेशाह [हृदयशाह] पन्ना के राजा हुए पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कालिजर, शाहगढ़ और इसके आसपास का इलाका राज्य से मिला था। जिसकी आमदनी ४२ लाख रुपया थी।

२—जगतराज को जैतपुर, अजयगढ़, चरखारी, बिजावर, सरीला भूरागढ़ और बाँदा राज्य में मिला था जिसकी आमदनी ३६ लाख रुपया थी।

३—बाजीराव पेशवा को राज्य का तीसरा हिस्सा मिला था जिसकी आमदनी ३३ लाख रुपया थी। पेशवा के हिस्से कालपी, हटा, हृदयमार जालौन, गुरसराय, झाँसी, सिरौंज, गुना, सागर और छोटी-छोटी जागीरें भी राज्य में प्रदान की गई थीं।

इस समय बाजीराव पेशवा और महाराजा छत्रसाल के दोनों पुत्रों के बीच निम्न शर्ते रखी गई थी।

१—दोनों भाई हृदयशाह और जगतराज चम्बल और जमुना के उस पार का प्रान्त छोड़कर सब स्थानों में युद्ध के लिए बाजीराव के साथ जावेंगे और जो लूट में मिलेगा उसे बराबर बाटेंगे।

२—यदि बाजीराव दक्षिण के किसी युद्ध में लगे हों तो दोनों बुन्देले भाइयों को बुन्देलखण्ड भर की दो माह तक रक्षा करनी होगी।

३—छत्रसाल महाराज ने वाजीराव को पुत्र के समान माना था इस लिए बाजीराव भी हिरदेशाह और जगतराव को भाई के समान मानेंगे।

परन्तु बाजीराव पेशवा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के बाद सभी शर्तों और ठहराव के प्रतिकूल काम करने लगा अन्त में दोनों भाइयों को बहुत परेशान किया गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराज छत्रसाल का देहान्त वि० सं० १७८८ में जेठ बदी ३ दिन बुधवार अर्थात् १२ मई सन् १७३१ को हुआ था उस समय जब मृत्यु हुई तब बाजीराव पेशवा भी पन्ना मौजूद थे।

ओरछा का राज्य छत्रसाल के अधिकार में नहीं था ओरछे के राज्य को प्राचीन बुन्देला वंश के शासक से निकाल लेना छत्रसाल ने ठीक नहीं समझा। ओरछे शासक कभी तो छत्रसाल के मित्र रहे और कभी वह भी मुसलमानों से मिलकर विपरीत हो जाते थे। छत्रसाल की राजधानी के नगर के शासक हृदयशाह ने छत्रसाल की सेज के निकट एक समाधि बनवाई वहां पर एक पुजारी नियत किया और उसके खर्चे के लिए सिगरावन नाम का एक गाँव लगा दिया था। यह गाँव छतरपुर राज्य में है।

महाराजा छत्रसाल की पुत्रवधू (महाराजा जगतराज की पत्नी)

बीरांगना महारानी विजय कुंवरि

सं० १७८८ में बुन्देला महाराज छत्रसाल की मृत्यु के पश्चात् बुन्देलखण्ड भूमि को वीर-विहीन समझ अवध के नवाब दलेल खाँ नामक पठान को अपनी सन्धि को तोड़ बुन्देलखण्ड पर चढ़ाई करने भेजा उसने जैतपुर (हमीरपुर जिला) पर अपना पड़ाव डालकर युद्ध का बिगुल बजा दिया।

वि० सं० १७८९ में महाराज छत्रसाल के पुत्र जगतराज ने जो अभी युवावस्था में पदार्पण कर रहे थे जब रण का बिगुल सुना तब उनके हृदय में मातृभूमि रक्षा का भाव जागृत हो उठा और वह शीघ्र अपनी लघु सेना को साथ में ले युद्ध भूमि के मोर्चे पर पहुंचे। घमासान युद्ध हुआ, किन्तु वह घायल हो गये। यह सूचना जब उनकी रानी विजय कुंवरि को मिली तब वह घोड़े पर चढ़ युद्ध भूमि में पहुंची और अपने रण-कौशल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वारा दलेलखाँ को परास्त कर अपने घायल पति जगतराज को साथ लेकर विजयश्री प्राप्त कर महल में लौट आई।

यह घटना वि० सं० १७८९ अर्थात् १७३१ ई० की है।

चंदेरी-बानपुर में बुन्देला राज्य की स्थापना

राज्य ओरछा के महाराजा बीरसिंह देव प्रथम ने मुगल सम्राट जहाँगीर से मैत्री पूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर ओरछा का राज्य अपने जेष्ठ भ्राता रामशाह से छीन लिया था। रामशाह को ओरछा की गद्दी से च्युत कर सम्राट जहांगीर ने उनके गुजारे एवं परिवारिक भरण पोषण के लिये ३ लाख रुपया वार्षिक आय की बार (ललितपुर जिला) की जागीर प्रदान की थी।

वि० सं० १६६६ अर्थात् सन् १६०९ ई० में रामशाह ओरछा से बाद में स्थापित हुये थे। रामशाह के ग्यारह पुत्र--संग्रामसिंह, हरीदास-मुक्तमणि, बिट्ठलदास, मोहनदास, त्रिभुवनदास, सुजानराव, भगतराव बलभद्र, मकुन्दसिंह और कुँअर जू थे। जेष्ठ पुत्र चूंकि ओरछा में ही देव-लोकवासी हो चुके थे। परन्तु उनके भी सात पुत्र भरतसिंह कृष्णसिंह रूपसिंह, कीरतसिंह, ध्रुवसिंह, चन्द्रभान और मानसिंह थे। इस प्रकार पदच्युत राजा रामशाह अपने दस पुत्र और सात नाती लेकर बार जा पहुंचे थे।

रामशाह ने बार पहुंच कर, बार और धमना के मध्य स्थित पहाड़ी पर किले की नींव डाली थी। तथा किले के निकट ही पहाड़ियों के बीच रामशाह सागर तालाब का निर्माण कराया था। तालाब के पृष्ठ भाग में केतकी की मनोहरी वाटिका भी लगवाई थी। बार का रामशाह सागर विशाल पैरियों से बनाया गया था। तालाब का निर्माण इस अनूठे ढंग से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया गया था। कि दो व्यक्ति स्त्री पुरुष साथ-साथ स्नान करते रहने पर भी एक दूसरे को नहीं देख सकते। बुन्देलखण्ड में इस तरह का यह एक सरोवर है। सरोवर से लगे हुये किले की नींव पड़ गयी थी कि रामशाह की मृत्यु सन् १६१२ (वि० सं० १६६९ ई०) में हो गयी थी। रामशाह की मृत्यु के पश्चात् उनके जेष्ठ पुत्र संग्रामसिंह के जेष्ठ पुत्र भरतसिंह परम्परा अनुसार जागीर के मालिक हुये। भरतसिंह होनहार नीतिज्ञ ब्यक्ति थे।

उनका इतना बड़ा परिवार और छोटी सी जागीर। भाग्य में भी राजा बनने के लक्षण थे। चाहे ओरछा रहते चाहें बार। इसी समय चदेरी की दशा अवनति पर थी। वहां गेंदाराम नामक सूबेदार प्रबन्धक था।

उचित अवसर समझकर भरतसिंह ने सन् १६१६ ई० वि०सं० १६७३ में चदेरी पर आक्रमण कर दिया था। चंदेरी विजय कर भरतसिंह ने शाहजहाँ से भेंट कर अपना पक्ष और प्रबल किया। शाहजहाँ उस समय बुरहानपुर में रहता था। जिसने वि० सं० १६७४ ई० सन् १६१७ में भरतसिंह से भेंट नजराना लेकर चन्देरी का स्वतन्त्र राजा मान लिया था। भरतसिंह ने मुगल सम्राट शाहजहाँ के समय कई बार काबुल कंधहार पर चढ़ाई की थी।

भरतसिंह एक योग्य एवं कुशल राजा था। चन्देरी राजधानी बनाकर उन्होंने उसकी सुव्यवस्था पर ध्यान दिया था। वि० सं० १६७५ अर्थात् १६१८ ई० में उन्होंने तालबेहट का किला बनवाया था। तालाब निर्माण कराया कस्वा बसाया था। प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रख कर भरतसिंह ने अपने राज्य को चार सम्भाग में बिभाजित किया था। जो दुदाही क्षेत्र हर्षपुर क्षेत्र (बांसी गोल कोट क्षेत्र ईशागढ़) एवं कान्तगढ़ क्षेत्र के नाम से विख्यात थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराज भरतसिंह ने भाइयों को जागीरें प्रदान कर प्रशासिक कार्यों में सहयोग प्राप्त किया था। उन्होंने भाइयों को निम्न प्रकार की जागीरें दीं।

१ कृष्णसिंह को बांसी की जागीर दी थी। इन्होंने बांसी का किला एवं रोरा की बावरी बनवायी थी।

२ रूपसिंह को विजरौल की जागीर दी थी।

३ ध्रुवसिंह को खड़ेसरा की जागीर दी थी (तालबेहट के पास)

४ चन्द्रभान को जामुनधाना (जाखलौन के पास) की जागीर दी थी।

५ कीरतसिंह को ककराना (ललितपुर) की जागीर दी थी।

६ मानसिंह को बरौदा (डांग बरौदा बानपुर के बीच) की जागीर दी थी।

१८ वर्ष राज्य कर चन्देरी राज्य के बुन्देला संस्थापक राजा भरतसिंह १६३० ई० वि० सं० १६८० में स्वर्गवासी हो गये थे।

चन्देरी बानपुर राज्य के संस्थापक राजा भरतसिंह की मृत्यु सन् १६३० ई० में हो चुकी थी। महाराजा भरतसिंह सम्राट शाहजहाँ की ओर से काबुल कंधहार की चढ़ाई में अनेक बार भाग ले चुके थे। परिणाम स्वरूप चन्देरी राज्य का मान एवं प्रभाव मुगल दरबार में भारी बढ़ गया था। उसी समय ओरछा के महाराजा जुझारसिंह के संदिग्ध आचरणों के कारण ओरछा राज्य की कीर्ति धूमिल भी हो रही थी। दतिया राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के संस्थापक भगवानदास तो मानो राज्य की बुनियाद की उधेड़बुन में ही थे। इस प्रकार केवल चन्देरी के राजा ही बुन्देलखण्ड में प्रभाव वाले थे। भरतसिंह की मृत्यु के पश्चात् सन् १६३० ई० में उनके पुत्र देवीसिंह राजा हुये थे। मुगल दरबार में देवीसिंह का भी भारी सम्मान था। यहां तक कि उन्हें बुन्देलखण्ड का राजा कहकर पुकारा जाता था। जुझारसिंह ओरछा की मृत्यु के उपरान्त सम्राट शाहजहाँ ने मात्र देवीसिंह को ही विश्वास पात्र और योग्य समझा था और सन् १६३२–३४ तक ओरछा का प्रबन्धक राजा बनाया था परन्तु चम्पतराय म्याद के बुन्देला जागीरदारी के विरोध के भय से उन्होंने प्रबन्धक पद त्याग दिया था।

महाराजा देवीसिंह ने शाहजहाँ को प्रसन्न कर राज्य के दक्षिण पूर्व के गदरीला, खिमलासा, इटावा, मालथौन, राहतगढ़, बसौंदा, उदैतपुर बसिया एवं सिरोज परगने अपने राज्य में विलय कर लिये थे। देवीसिंह ने चन्देरी में सिंह सागर तालाब सिंहपुरा और तालबेहट में सिंह बाग बल्देवगढ़ का किला तालाब बनवाया सन् १६६३ ई० में महाराजा देवीसिंह स्वर्गवासी हो गये।

देवीसिंह की मृत्यु १६६३ ई० के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र दुर्गसिंह चन्देरी के राजा (१६६३–८७) बने थे! इस समय ओरछा की गद्दी पर पहाड़सिंह के पुत्र सुजानसिंह और दतिया के राजा शुभकरण थे। महाराजा दुर्गसिंह के दो भाई सहजसिंह और सेनापति थे। जिन्हें क्रमशः कजिया और मानगढ़ की जागीरें दी गई थीं। दुर्गसिंह के शासनकाल में राजस्थान के बंजारों ने चन्देरी राज्य में भारी लूटमार की थी जैसे ही बंजारों को राज्य से बाहर खदेड़ा था कि १६७६ ई० में मराठा सरदार शंकरराव ने आक्रमण किया था। दुर्गसिंह ने साहस के साथ उनका सामना किया और उसे राज्य से बाहर किया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १६८७ ई० में दुर्गसिंह की मृत्यु के पश्चात् पुत्र दुर्जनसिंह (१६८७ से १७३६ ई०) चन्देरी में राजा हुये थे उनके समय पन्ना का स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो चुका था। बाजीराव पेशवा भी महाराजा छत्रसाल के दत्तक पुत्र की हैसियत से बुन्देलखण्ड के तीसरे हिस्से के अधिकारी बन चुके थे। जिन्होंने अपना सदर मुकाम सागर को बनाकर गोविन्द बल्लभ खैर (पं० गोविन्द और गोविन्द राव पण्डित भी कहते थे) को सूबेदार नियुक्त कर दिया था। उन्होंने चन्देरी राज्य के मालथौन खिमसाला और राहतगढ़ इलाकों पर आक्रमण कर भेलसा, उदैतपुर, बसौदा एवं सिरौंज इलाके भी छीन लिये थे।

दुर्जनसिंह की मृत्यु के पश्चात जेष्ठ पुत्र मानसिंह (१३३६-५० ई०) चन्देरी के राजा बने थे। मानसिंह के समय सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड की स्थिति दयनीय हो गई थी। बुन्देला की शक्ति क्षीण हो रही थी और मराठों का प्रभाव बढ़ रहा था। १७४८ ई० में नारीशंकर मराठा ने आक्रमण कर चन्देरी राज्य के मुगावली, सैराई, पिपराई, कंजिया और ईशागढ़ परगने छीनकर झाँसी राज्य पृथक से बना दिया था।

मानसिंह के तीन भाई थे। जिन्हें निम्न जागीरें दी गयी थीं १–जोब्रलसिंह को पाली (ललितपुर) की जागीर २–सूबाजू को बम्हौरी (बार के पास) की जागीर एवं ३–धीरज को बानपुर की जागीर दी।

मानसिंह ने ही महरौनी का किला बनवाया था सन् १७५० में मानसिंह की मृत्यु हो गई उनकी मृत्यु के बाद जेष्ठ पुत्र अनिरुद्धसिंह (१७५०–७५ ई०) चन्देरी के राजा बने थे। उन्होंने अपने छोटे भाई हर्षसिंह को प्रधान मन्त्री बना लिया था। इनके शासन काल से राज्य की शक्ति का ह्रास प्रारम्भ हुआ और झांसी के मराठा सूबेदार (राजा) के ऊपर निर्भर रहने की प्रवृत्ति का विकास हुआ अनिरुद्धसिंह के दो पुत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोहनसिंह और रामचन्द्र थे। परन्तु जेष्ठ पुत्र पिता के जीवनकाल में ही निसन्तान स्वर्गवासी हो गये थे। जिस कारण अनिरुद्धसिंह की मृत्यु (१७७५ ई०) के पश्चात् द्वितीय पुत्र रामचन्द्र, चन्देरी के राजा बने थे।

चन्देरी सिंधिया की चपेट में

सन् १७७५ ई० में अनिरुद्धसिंह के अल्प वयस्क पुत्र रामचन्द्र चन्देरी के राजा बने थे और संरक्षक हर्षसिंह नियुक्त किये गये थे। जो उनके चाचा प्रधान मन्त्री थे। परन्तु राजनारायण की माता संरक्षक देवर हर्षसिंह पर विश्वास नहीं करती थीं जिस कारण वह पुत्र को लेकर चन्देरी से अचलगढ़ (मुगावली के पास) के जागीरदार कीरतसिंह के पास भाग गयी थी कुछ समय पश्चात रामचन्द्र को लेकर कीरतसिंह एवं धुरमंगल पुनः चन्देरी वापिस आये उन्होंने हर्षसिंह को पदच्युत कर कीरत को संरक्षक एवं धुरमंगल को सेनापति बनाया था।

हर्षसिंह चन्देरी से तालबेहट में रहने लगे थे। परन्तु बाद में रामचंद्र ने उन्हें मुसौराखुर्द (ललितपुर के पास) की १६ गांव की जागीर दे दी। इसके बावजूद भी हर्षसिंह और रामचन्द्र के मध्य वैमनस्य कम न हुआ। परेशान होकर १७८३ ई० में रामचन्द्र ने चाचा हर्षसिंह और उनके कामदार तालबेहट के निवासी एक ब्राह्मण का कत्ल करवा डाला था तथा हत्या के अपराध का प्रायश्चित करने अयोध्या चले गये थे इस समय राज्य का प्रबन्ध देव जू पमार कर रहे थे। सूना राज्य पाकर सागर के सूबेदार अप्पा साहब ने मोरोपन्त को चन्देरी पर आक्रमण करने भेज दिया इस समय आक्रमण मुकाबला जाखलौन के छत्रसिंह अचलगढ़ के जागीरदार कीरतसिंह किची के जागीरदार दुर्जनसिंह एवं राव उमराव ने राज्य संयुक्त रूप से किया था। ललितपुर के पास पनियारे में युद्ध हुआ जो अनिर्णीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहा था परन्तु मराठों ने सागर संलग्न क्षेत्र पर प्रभाव जमा ही लिया था १८०२ ई० में रामचन्द्र की मृत्यु हो गयी थी।

महाराज रामचन्द्र के चार पुत्र प्रजापाल, मोरप्रहलाद, भुअनपाल और चित्रसिह थे। पिता की मृत्यु के बाद १८०२ ई० में प्रजापाल चन्देरी के राजा हुये थे। जो सिर्फ १५ दिन बाद स्वर्गवासी हो गये थे जिस कारण उनके दूसरे भाई मोरप्रहलाद राजा बने थे।

मोरप्रहलाद अक्खड़ और उदण्ड व अभिमानी था जिस कारण राज्य के समस्त जागीरदार और भले आदमी उससे नाराज हो गए थे। इस आन्तरिक कमजोरी का लाभ उठाकर सन १८११ ई० में ग्वालियर के सिंधिया ने अपने सेनापति जौन बैपटिस्ट को चन्देरी पर आक्रमण करने भेजा था। जौनबैपटिस्ट फ्रान्सीसी थे। बैपटिस्ट के आक्रमण से भयभीत होकर मोरप्रहलाद चन्देरी त्याग कर झांसी भाग गये थे। दीवान बखतसिंह और उमरावसिंह ने ३ माह तक चन्देरी की रक्षा की परन्तु पराजित ही हुये। चन्देरी, जेबरा, बांसी, कोटरा, ननौरा, रजबारा, महरौनी जाखलौन, और देवगढ़ परगने सिंधिया की सेना ने अपने अधिकार में कर लिये थे। इसके बाद १८१२ में बैपटिस्ट ने तालबेहट पर आक्रमण किया। वहाँ के किलेदार बल्लभ तिवारी ने सिंधिया की सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया दिया था। इस प्रकार कैलगुवाँ और बानपुर क्षेत्र के गाँव छोड़कर पूरा चन्देरी राज्य सिंधिया ने हड़प लिया था। सिंधिया की सेना के ग्वालियर लौट जाने पर मोरप्रहलाद १८१३ ई० में झाँसी से वापिस आये और कैलगुवाँ के किले में रहने लगे थे।

मोरप्रहलाद के समय बसीन की सन्धि १८०२ के बाद बुन्देलखण्ड पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया था। बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों ने बांदा में अपनी ऐजेन्सी कायम कर रखी थी। अंग्रेजो के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुन्देलखण्ड के सभी छोटे बड़े राजा मराठों के तम्बू से खिसककर अंग्रेज के शामयाने में जा पहुंचे थे। मोरप्रहलाद ने सिंधिया के आक्रमण की शिकायत के कारण १८२९ ई० में लार्ड विलियम बैंटिंग से कैथ (जैतपुर) के दरबार में की थी। जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों की ओर से बांदा में मीरमुन्शी जौन बैपटिस्ट और मोरप्रहलाद की संयुक्त बैठक सुनवाही गांव में हुई थी इसके बाद खजुरिया गांव में सिंधिया के पं० वासुदेव भाऊ और मोरप्रहलाद के पं० दुलारेलाल मिसर मिसौरा वालों ने १८३० ई० में सन्धि पत्र पर इस समझौते के अनुसार चन्देरी राज्य दो तिहाई सिंधिया के पास और बानपुर, तालबेहट, कैलगुवां का एक तिहाई भाग मोरप्रहलाद के पास रहना तय हुआ था। मोरप्रहलाद ने कैलगुवां छोड़कर १८३० में बानपुर को राजधानी बनाई थी। १२ वर्ष बानपुर में राज्य करके १८४२ ई० में मोर प्रहलाद स्वर्गवासी हो गये थे। उनके बाद मर्दनसिंह बानपुर राज्य के राजा बने थे जौनबैपटिस्ट को सिंधिया ने एक जागीर जरया (महरौनी) की प्रदान कर ललितपुर छावनी में रख दिया था।

महाराजा मर्दनसिंह, बानपुर

जन्म वि० सं० १८५५ मृत्यु वि० सं० १९२६ अर्थात सन १७९८ ई० में जन्म और मृत्यु सन १८६९ ई० वृन्दावन में हुई थी।

अमर सेनानी क्रान्तिकारी बीर मर्दनसिंह बुन्देला बानपुर के राजा ने सन १८५७ ई० के गदर में महारानी लक्ष्मीबाई झाँसी के साथ सहायता देकर अंग्रेजों के साथ स्वतन्त्रता संग्राम किया।

बुन्देलखण्ड की वीर-प्रसू भूमि के वीरों ने हमेशा स्वतन्त्रता संग्राम के लिए बलिदान किये हैं, और मरते दम तक यही प्रयास किया है कि उनका ध्वज ऊँचा रहे। ऐसे ही वीरों में ओरछा नरेश मधुकरशाह के पुत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीरसिंह जू देव प्रथम के भ्राता रामशाह चन्देरी बानपुर के राजा वि०सं० १६६३ में हुए थे जिसकी आमदनी दस लाख रुपया थी।

राजा रामशाह के बाद में क्रमशः सग्रामशाह, भारतशाह, देवीसिंह, दुरगसिंह, दुर्जनसिंह, मानसिंह, अनुरुद्धसिंह, रामचन्द्र, मोरप्रहलाद सिंह राजा बानपुर चन्देरी के हुए थे इसी राज्य वंशज राजा मर्दनसिंह बुन्देला का जन्म सन १७९९ ई० में हुआ। (वि० सं० १८५५ में) राजा मर्दनसिंह बुन्देला ने विदेशी सत्ता को देश से उखाड़ फेकने की योजना बड़ी चतुरता से बनाई। बह प्रारम्भ से ही अंग्रेजों के खिलाफ थे। अंग्रेजों ने उन दिनों देशी रियासतों के विरुद्ध ऐसी नीति बनाई थी कि उनमें असन्तोष होना स्वाभाविक था।

जब महाराजा छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा की मदद वि० सं० १७८६–८७ से मुहम्मद बंगस को पराजित किया था। तब महाराज छत्रसाल ने झाँसी बाजीराव पेशवा को प्रदान कर दी थी। सन् १८५३ ई० अर्थात् वि० सं० १९१० पेशवा वंश के राजा गंगाधर राव झांसी को मृत्यु का हाल पाकर बानपुर के राजा मर्दनसिंह परिवार के साथ समवेदना प्रगट करने झांसी आये। मरते समय राजा गंगाधर राव ने एक बालक को गोद ले लिया था। महारानी लक्ष्मीबाई ने राजा मर्दनसिंह से दामोदर राव को झांसी राज्य देने का विचार प्रकट किया।

राजा गंगाधर राव की मृत्यु का समाचार बुन्देलखण्ड के पोलीटिकल एजेन्ट मेजर मालकम के पास २१ नवम्बर सन् १८५३ ई० को पहुंचा इसकी खबर एजेन्ट ने अंग्रेज सरकार के परराष्ट्र सचिव को भेजी। उसमें दामोदर राव को गोद लेने का समाचार लिखा था। उसके साथ एजेन्ट ने परराष्ट्र सचिव को अपनी सम्मति दी कि झाँसी के राजा को गोद लेने का अधिकार नहीं है। इससे झांसी का राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जावे और महारानी लक्ष्मीबाई को पांच हजार रुपया माहवार से पेन्शन दी जाने की सलाह दी।

उपर्युक्त आशय का पत्र भेजकर मेजर मालकम ने झांसी का बन्दोबस्त स्वयं करना आरम्भ कर दिया और सुरक्षार्थ सिंधिया की रेजीडेन्ट पलटन का एक भाग और बंगाल नेटिव इनफ्रेंटी का एक भाग अपने पास रखा और कुछ सेना झांसी और करेरा के किले में रखी गई थी।

झाँसी के राज दरबार ने गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव के नाम से राज्य कार्य चलाने का निश्चय कर लिया। जिस समय दामोदर राव गोद लिये गये थे उस समय बुन्देलखण्ड के असिस्टेन्ट पोलीटिकल एजेन्ट मेजर एलिस भी उपस्थित थे। गोद का संस्कार होने के पहिले अंग्रेजों को खबर भी दे दी गई थी। इस खबर के पश्चात मेजर एलिश गोद के समय पहुंचे थे और झांसी के राज्य कर्मचारी ने यही समझा था कि दामोदर राव गोद लिये जाने के विषय में अंग्रेजों ने अनुमति दे दी है। झांसी राज्य और अंग्रेजी राज्य से जो शर्तें हुई थी उनके अनुसार भी वंश परम्परा के लिए राज्य रामचन्द्र राव को मिला था। परन्तु लार्ड डलहौजी की नियत झांसी राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लेने की थी। मेजर मालकम की भी यही सलाह थी कि झांसी का राज्य अंग्रेजों के राज्य में मिला लिया जावे।

मालकम साहब ने पत्र का उत्तर बहुत दिनों तक नहीं दिया इससे फिर महारानी लक्ष्मीबाई ने दूसरा पत्र अंग्रेजों को लिखा इस दूसरे पत्र में महारानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों की सन्धियों का उल्लेख करते हुये झांसी राज्य को रामचन्द्र राव के वंश में कायम रखने के उद्देश्य से दत्तक पुत्र लेने की आवश्यकता बतलाई अंग्रेज सरकार से प्रार्थना की कि दामोदर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राव का गोद लिया जाना स्वीकार किया जावे । एलिस साहब ने एक पत्र अंग्रेजों के गर्वनर को लिखा था । उस पत्र में एलिस साहब ने झांसी का राज्य दामोदर राव को दिए जाने की सलाह दी थी । परन्तु एलिस साहब की सलाह नहीं मानी गई ।

वि० सं० १९११ (सन् १८५४) में गवंनर जनरल लार्ड डलहौजी ने झांसी के राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लेने का हुक्म दे दिया और दामोदर राव के गोदनामा को नियम विरुद्ध बताकर अस्वीकार कर दिया ।

राजा मर्दनसिंह ने रानी लक्ष्मीबाई को धैर्य बंधाते हुए कहा कि बुन्देलों ने झांसी राज्य का समर्पण बाजीराव पेशवा को वि० सं० १७८८ में किया था झांसी अंग्रेजों की नहीं हो सकती है आप ही झांसी की अधिकारिणी हैं । यदि अंग्रेजों ने जरा भी अन्याय किया तो यह झाँसी अग्रेजों के गले की फांसी हो जायेगी ।

झाँसी में अंग्रेजों का राज्य सन् १८५४ ई० में हो गया । रानी लक्ष्मीबाई झाँसी के किले से बाहर रानीमहल शहर झाँसी में निवास करने लगीं । अग्रेजों की ओर से झाँसी के कमिश्नर मेजर स्कीन साहब नियत किये गये परन्तु रानी लक्ष्मीबाई ने अपना राज्य वापिस करने की अपील का मुकद्दमा लन्दन कोर्ट आफ डायरेक्टर्स के सामने पेश २४ नवम्बर सन् १८५४ ई० को किया और उमेशचन्द्र बनर्जी वकील कलकत्ता और दूसरा वकील यूरोपियन नियुक्त किया । दिनांक ३ फरवरी सन् १८५५ ई० का लन्दन कोर्ट आफ डायरेक्टर्स के यहां से रानी लक्ष्मीबाई की अपील खारिज हो गई और झांसी का राज्य अंग्रेजी राज्य में शामिल करने का फैसला हो गया ।

वि० सं० १८९२ अर्थात सन् १८३५ ई० में रानी लक्ष्मीबाई का जन्म माना गया है । इस समय सन् १८५५ ई० में कुल उम्र २० साल

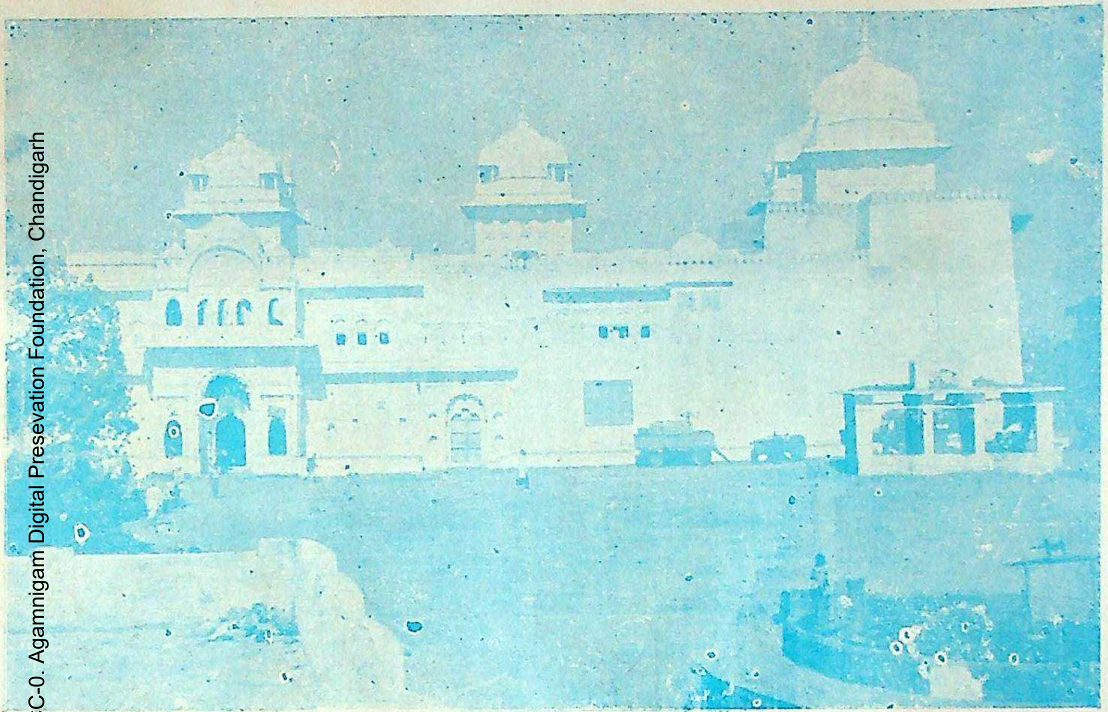

श्री रामराजा मन्दिर ओरछा

फोटो : डा० देवेन्द्र वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

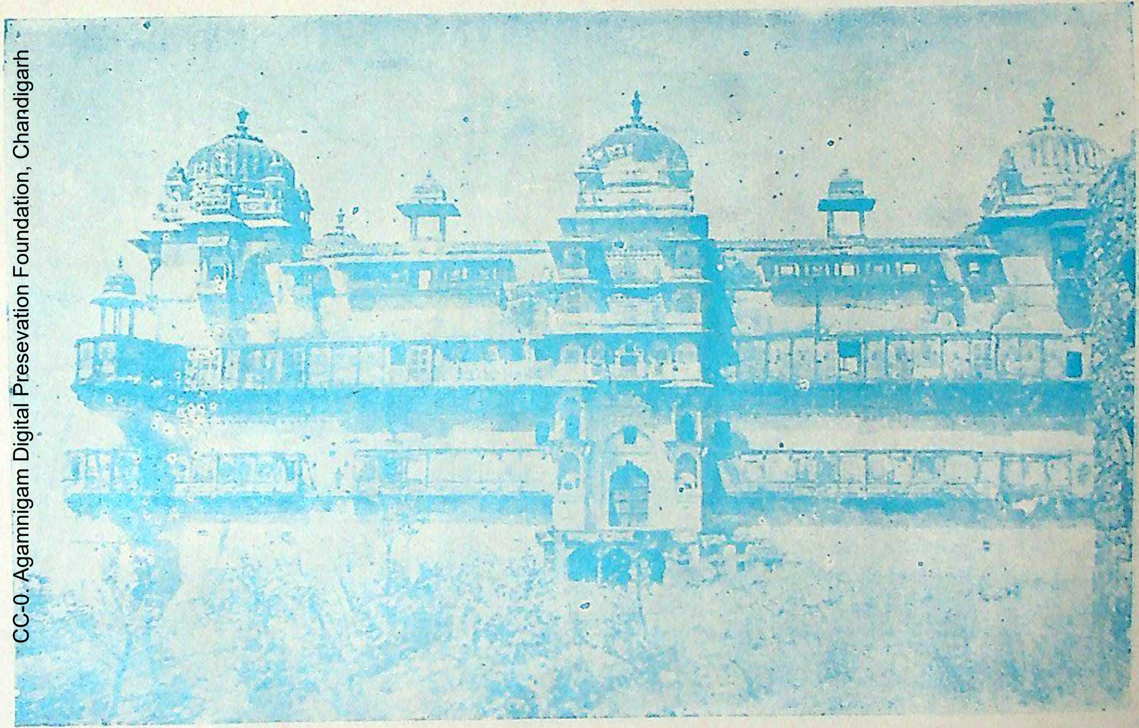

जहांगीर महल ओरछा

फोटो : डा० देवेन्द्र वर्मा

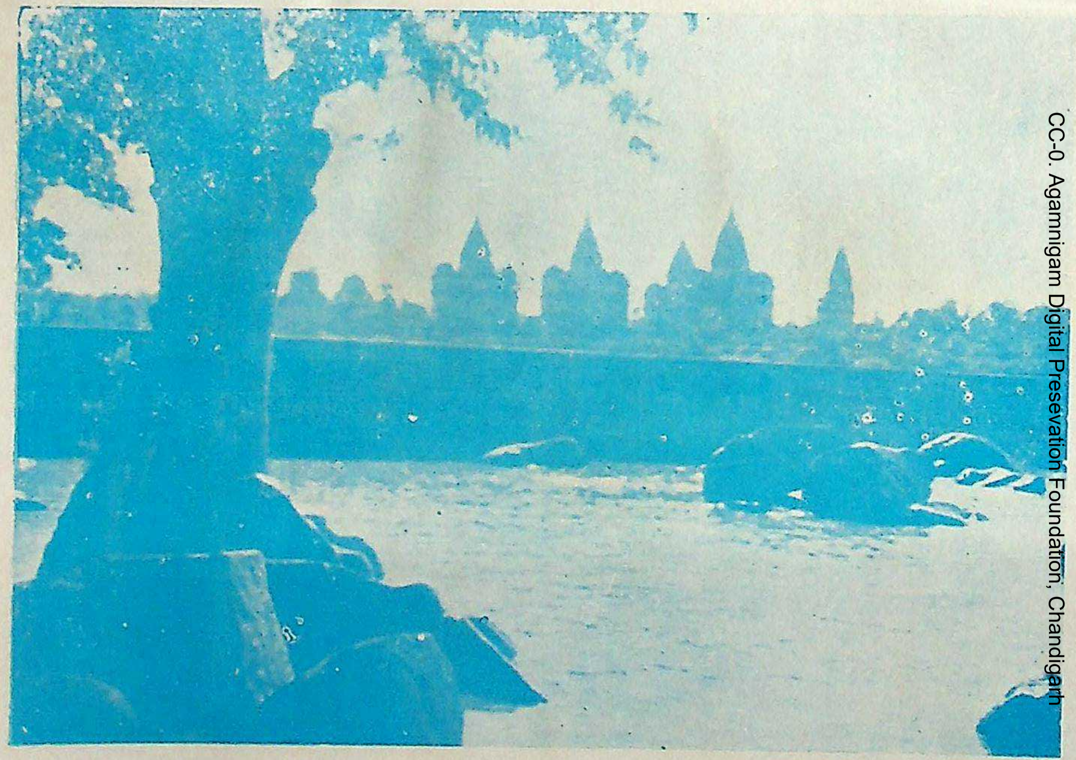

बेतवा नदी का दृश्य मकबरों सहित

फोटो : डा० देवेन्द्र वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्दन कटोरा

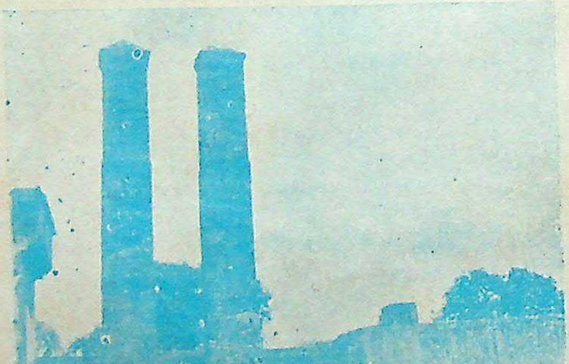

सावन भादों स्तम्भ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
की थी। मर्दनसिंह राजा बानपुर सदैव झाँसी आते जाते रहते थे और रानी लक्ष्मीबाई को स्वतन्त्रता संग्राम करने की सलाह दिया करते थे।

सन् १८५५ ई० सन् १८५६ ई० तक झाँसी का शासन रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों की तरफ से किया था।

लार्ड डलहौजी की राजनीति से सब राज्यों में असन्तोष फैल गया था अंग्रेजी राज्य की व्यवस्था भी ठीक नहीं थी। अंग्रेज किसी प्रकार रुपया वसूल करना ही अपना ध्येय समझते थे। अन्तर्वेद के जमींदार भी असन्तुष्ट हो गये थे। क्योंकि उनके अधिकारों की परवाह न करके कई जमींदारों के नाम कृषकों में लिख दिये गए थे। लगान की वसूली भी बड़ी सख्ती से होती थी इससे भी सारे देश में असन्तोष फैल रहा था। विद्रोह का असली कारण यही असन्तोष था परन्तु प्रासंगिक कारण बहुत तुच्छ था। विप्लव का प्रासंगिक कारण सैनिकों का असन्तोष ही था और इस असन्तोष का कारण सैनिकों में इस अफवाह का फैल जाना कि अंग्रेज लोग गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूस सैनिकों को देखकर उन्हें धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। लार्ड डलहौजी वि० सं० १९३१ (सन् १८५६ ई०) में इंगलैण्ड वापिस चले गये इनके स्थान पर लार्ड कैनिंग गवर्नर हुए। लार्ड डलहौजी की राजनीति से जो असन्तोष भारतवर्ष में उत्पन्न हो गया था। वह लार्ड कैनिंग को भली-भांति मालूम था। भारतवर्ष में आते समय कहा भी था कि कोई छोटी बात अशान्ति होने के कारण विप्लव उत्पन्न कर सकेगी। लार्ड कैनिंग का अनुमान सत्य ही निकला।

कानपुर के बलवे का समाचार झांसी पहुंचा। झाँसी में अंग्रेजों का सेनानायक कप्तान डेनयाल थे। रानी लक्ष्मीबाई का इस विद्रोह से कोई सम्बन्ध नहीं था। परन्तु अंग्रेजों की काली पलटन बागी हो गयी थी। इस सेना के हवलदार गुरुबख्श ने अचानक बलवा का झण्डा खड़ा किया गोला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारूद जो कुछ था उस समय में अधिकार कर लिया अंग्रेज झाँसी के किले से निकल भागे। किले और शहर झाँसी पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। गार्डन नामक अंग्रेज इस युद्ध में मारा गया था। झांसी के कमिश्नर साहब स्कीन का बध इसी समय हुआ था।

विद्रोह के दो दिन पहले मिस्टर गार्डन रानी लक्ष्मीबाई से मिले थे। उन्हें रानी लक्ष्मीबाई पर पूरा विश्वास था कि वह अंग्रेजों से विद्रोह नहीं करेगी। विद्रोहियों ने झाँसी के किले पर कब्जा करने के बाद शहर में रानी लक्ष्मीबाई के महल को घेर लिया। रानी लक्ष्मीबाई ने विदोहियों को मार कर भगा दिया और यह सब हाल अंग्रेजों को लिख भेजा। सागर के कमिश्नर की तरफ से रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की शासक बन गई थीं। झाँसी के कमिश्नर थिक भी रानी लक्ष्मीबाई को पूर्ण अधिकार प्रदान कर चुके थे।

सदाशिव नारायण एक बड़ी सेना लेकर झाँसी के समीप पहुंचा करेरा पर हमला करके उसने अंग्रेजों के थानेदार और तहसीलदार को मार भगाया और करेरा पर अधिकार कर लिया। रानी लक्ष्मीबाई अपनी सेना लेकर करैरा गई इनको देखकर सदाशिव नारायन डर कर भाग गया और करैरा पर रानी लक्ष्मीबाई का अधिकार हो गया। सदाशिव नारायन नरबर की ओर भागा परन्तु वह कैद होकर झाँसी के लिले में बन्द हो गया।

ओरछा के महाराजा हम्मीरसिंह का दीवान नत्थे खाँ ने उसी समय में बीस हजार सेना लेकर झाँसी (रानी लक्ष्मीबाई) पर आक्रमण करने आया इस युद्ध में नत्थे खाँ की हार हुई। रानी लक्ष्मीबाई ने दीवान जवाहरसिंह को अपनी सेना का अधिपति बनाया। मर्दनसिंह राजा बानपुर से झाँसी में आकर रानी लक्ष्मीबाई से मिले और स्वतन्त्रता संग्राम करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की सलाह दी। रानी लक्ष्मीबाई भी इस क्रान्तिकारी वीर योद्धा से उचित सहयोग पाकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारी करने लगीं। उसी समय अंग्रेजों को सब हाल मालूम हो गया था। कि रानी लक्ष्मीबाई अंग्रैजों के विरुद्ध हो गयीं हैं। झांसी में जो अंग्रेजों की हत्या हुई थी उस हत्याकाण्ड का आरोप रानी लक्ष्मीबाई पर लगाया गया। मर्दनसिंह ने झाँसी रानी को युद्ध करने की सलाह दी।

क्रांति की ज्वाला मेरठ से उठी और दिल्ली, कानपुर होती हुई झाँसी तक पहुंच गई। यहाँ पर अंग्रेजों के दो बँगले जला दिये गये झाँसी के उपद्रव का समाचार सरह्यू रोज को मालूम होते ही वह अपनी सेना सहित सन् १८५७ ई० के गदर को शान्ति करने नाराट की घाटी की ओर चले। इस घाटी पर मर्दनसिंह की बहुत सेना नियत थी। इसलिए सरह्यू रोज ने मदनपुर होते हुए निकल जाना ठीक न समझा। सरह्यू रोज को मदनपुर की ओर जाते हुए देख मर्दनसिंह ने प्रस्थान अपनी सेना सहित मदनपुर को कर दिया यह देख सरह्यू रोज ने अपनी सेना नाराट की घाटी की ओर भेजी और मर्दनसिंह की सेना को वहीं पर अटका दिया। मदनपुर में सरह्यू रोज ने शाहगढ़ की सेना को हरा दिया। यह युद्ध बड़ा भीषण हुआ अंग्रेजों की बहुत सी सेना मारी गई सरह्यू रोज को भी एक गोली लगी उस गोली से घोड़ा मर गया। परन्तु विजय अंग्रेजों को मिली इस समय मर्दनसिंह युद्ध में पहुंच पाते तो अंग्रेजों की निश्चय हार हो जाती। परन्तु मर्दनसिंह नाराट की घाटी में ही अटके रहे थे। मर्दनसिंह तथा शाहगढ़ के राजा बखतअली का मेल न होने पाया। शाहगढ़ का राज्य इस युद्ध के बाद अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। मर्दनसिंह नाराट की घाटी के पास अंग्रेजों की सेना से लड़ रहे थे। बानपुर, खुरई, नरयावली, तालबेहट, चन्देरी भी अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। फिर झाँसी की तरफ से अंग्रेजी सेनाओं ने आक्रमण करने को प्रस्थान कर दिया। नत्थे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खाँ अंग्रेजों की सेना को मार्ग बताकर झाँसी तक आया और रानी लक्ष्मीबाई के एक मुख्य सरदार दूलहजू ने बड़ा विश्वासघात किया और झाँसी में अंग्रेजों की सेना को प्रवेश होने में मदद कर दी थी।

मर्दनसिंह अंग्रेजों को चुनौती देकर ललकार रहा था रण–भेरी वीरों में रस संचार कर रही थी। रानी लक्ष्मीबाई ने घुड़सवारों को लेकर दूसरी ओर से हमला किया और अंग्रेजों के तोपखानों को नष्ट कर दिया। मर्दनसिंह के घुड़सवारों ने अंग्रेजों को मारना शुरू कर दिया। स्वतन्त्रता प्रेमी सेना ने जान की परवाह न करके घमासान युद्ध किया परन्तु वह अंग्रेजी सेना द्वारा घेर लिए गये।

अपने युद्ध कौशल से राजा मर्दनसिंह इस घेरे से बाहर निकल गये और अपनी बची हुई सेना लेकर ललितपुर आये और ग्वालियर जाकर वहाँ के राजा सिंधिया से मदद लेने के लिए चले गये थे।

अब अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति चलानी शुरू कर दी। उन्होंने राजा मर्दनसिंह को यह विश्वास दिलाया कि यदि वह रुक जाते तो उनके साथ अच्छा व्यवहार होगा।

बुन्देलखण्ड की रियासतों में ओरछा, दतिया और समथर यह विशेष महत्व की समझी जाती थी। इन तीनों में सबसे मूल्य रियासत ओरछे की है। ओरछे के राजा टीकमगढ़ में रहते हैं इससे इस रियासत को टीकमगढ़ राज्य भी कहते हैं। इन सब रियासतों के राजाओं ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली थी इनसे और अंग्रेजों से बराबरी की सन्धि हुई थी परन्तु राजा अंग्रेजों की सलाह के बिना बाहरी राज्य से राजनीतिक बात नहीं कर सकते थे। मर्दनसिंह ने बुन्देलखण्ड के उक्त राजाओं से इस युद्ध में सहायता मांगी परन्तु सब राजा विवश थे इसमें मर्दनसिंह ने अपनी सेना सहित झाँसी की तरफ महारानी लक्ष्मीबाई की सहायता करने हेतु चल पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महारानी लक्ष्मीबाई ने किले के बचाव के लिए पहिले ही से सामान तैयार करा लिया था। गोले बारूद और तोपें सब झाँसी के किले ही में तैयार हुई थी। इन तोपों की और गोलों की अंग्रेजों ने बड़ी प्रशन्सा की है। कई गोले अंग्रेजों के गोलों से भी अच्छे थे। रानी के पास एक चतुर गोलन्दाज भी था। जिसका नाम गुलाम गौस खां था इसने बड़ी बहादुरी से काम किया था और अपने कौशल से उसने अंग्रेजों को चकित कर दिया था।

अंग्रेजों ने किले पर आक्रमण करने के पहले ही झाँसी शहर से बाहर निकलने के बाद मार्ग रोक लिये थे झांसी की आस-पास की पहाड़ियों पर भी अंग्रेजी सेना रख दी गई थी पहिले तोपों से ही लड़ाई हुई फिर जरा आगे हट कर अंग्रेजों ने किले के दक्षिण में आक्रमण करना शुरू किया। अंग्रेजों ने किले के दक्षिण भाग पर खूब गोले बरसाए और दक्षिण से तोपों का उत्तर देना झांसी की सेना के लिए कठिन हो गया इस समय झांसी के गोलन्दाज गुलाम गौस खां ने अंग्रेजों के गोलन्दाज को मार गिराया फिर दोनों तरफ से तोपों की मार होने लगी।

झांसी के किले से जो गोले छूटते थे वह बहुत बड़े थे। जिनका बजन डेढ़ मन का होता था। २३ मार्च सन् १८५८ के युद्ध में सात दिन तक लड़ाई होती रही। रानी के पास गोला बारूद बहुत थी परन्तु सैनिक शिक्षित नहीं थे।

मर्दनसिंह की सेना ने इसी समय अंग्रेजों पर हमला कर दिया अंग्रेजी सेना कुछ पीछे हट गई। मर्दनसिंह की सेना ने बहुत वीरता और उत्साह से युद्ध किया था।

झाँसी की रानी ने नाना साहब पेशवा से सहायता मांगी। नाना साहब ने अपने विश्वासी और शूर सरदार तात्याटोपे को अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साथ बीस हजार सेना लेकर कालपी से झांसी आये और मर्दनसिंह भी इस सेना में शामिल थे। ४२ नम्बर और ५२ नम्बर की बागी पल्टन भी इस युद्ध में शामिल हो गई थी। शाहगढ़ के राजा बखतअली मर्दनसिंह की सहायता करने आ गए और दमोह वाले बागी मर्दनसिंह के साथ में आये थे। सन् १८५८ ई० के महायुद्ध में मेजर गाल, किडेल, राविंसन और स्टुअर्ट मिस्टर लांघ हार कर भागे और अंग्रजों की बहुत सी सेना मारी गई तात्याटोपे से पहिली अप्रैल सन् १८५८ से युद्ध प्रारम्भ हुआ इसमें रानी लक्ष्मीबाई की सेना में अधिकांश मुसलमान पठान थे। नत्थे खां जो महाराज ओरछा का दीवान था इसने रानी साहिबा के साथ धोखेबाजी करके अंग्रेजों की सहायता कर दी। रानी लक्ष्मीबाई के मुख्य सरदार कटेरा वाले रावसाहब दूल्हा जू ने बड़ा भारी विश्वासघात किया अंग्रेजों को झांसी के किले में निकल आने का मार्ग दे दिया था इस युद्ध में अंग्रेजों के सरदारों, डिक, मिकली, बोनस, फांक्स ने किले में प्रवेश किया परन्तु १५०० अंग्रेजी सेना सहित उक्त अंग्रेजी सरदार युद्ध में मारे गये। उस समय अंग्रेजी सेना किला के अन्दर प्रवेश दूल्हाजू की सहायता से कर गई थी। रानी लक्ष्मीबाईने मिस्टर वोकर को हराया और रामचन्द्र राव, मर्दनसिंह, देशमुख तात्याटोपे रानी लक्ष्मीबाई सहित झाँसी के किला से भागकर कालपी तरफ चली गई। ३ अप्रैल सन् १८५८ को रानी लक्ष्मीबाई का झांसी से प्रस्थान करने बावत बताया जाता है। मोरोपन्त तांबे भी रानी लक्ष्मीबाई की सहायता में साथ ही बने रहे थे। मोरोपन्त ने हाथी के ऊपर माल असवाव हीरा जवाहरात सोना आदि का खजाना लेकर झांसी से दतिया में दीवान बल्देव प्रसाद पुरोहित की शरण में गये वहां पर सब खजाना छीन कर बल्देव प्रसाद पुरोहित दीवान दतिया ने मोरोपन्त को पकड़ कर अंग्रेजों को दे दिया ४ अप्रैल सन् १८५८ ई० में झोकन बाग झांसी में मोरोपन्त को फाँसी लगाकर मार डाला इधर अंग्रेजों ने झांसी पर अधिकार प्राप्त करके शहर भर के आदमी औरतों बच्चों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को मार डाला। झांसी शहर में लाशों के ढेर लग गये तीन दिन तक लूट मार हुई झाँसी का पुस्तकालय नष्ट किया गया। उस समय व्रतांत से पता लगता है कि युद्ध में उतने मनुष्य नहीं मरे जितने बिजन और लूट के समय मारे गये थे।

३ अप्रैल सन् १८५८ को भाँडेर में अंग्रेजों के सेनापति बौकर को रानी लक्ष्मीबाई ने घायल करके हराया वह वापिस लौट गये। रानी साहिबा कालपी पहुंची वहां पर कानपुर के बागियों ने, नाना साहब ने, रानी लक्ष्मीबाई का महान स्वागत किया गया था उस समय मर्दनसिंह भी साथ में कालपी मौजूद थे। बांदा के नवाब अलीबहादुर, शाहगढ़ के राजा बखतअली, बानपुर के मर्दनसिंह की सेना वहाँ पर इकट्ठी हुई अनेक विद्रोही बागी पल्टन वाले भी शामिल हुये इसमें तात्याटोपे अधिनायक बनाये गये थे।

सरह्यूरोज ने अपनी सेना लेकर कालपी पर आक्रमण किया और कोंच पर अधिकार करके लौहारी के किले पर अधिकार किया। कालपी में रानी लक्ष्मीबाई ने बहुत सी सेना इकट्ठी कर ली थी। रोहिलों की सेना भी इसी समय लक्ष्मीबाई की सहायता को आ पहुंची। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ बीस हजार अंग्रेजी सेना मारी गई अन्त में कालपी पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। रानी लक्ष्मीबाई राव साहब पेशवा बांदा के नवाब, मर्दनसिंह सहित कालपी से निकल भागे और गोपालपुरा पहुंचे। तात्याटोपे भी सेनाओं सहित वहीं इकट्ठे हो गये।

ग्वालियर के सिंधिया महाराजा जियाजीराव अंग्रेजों के रेजिडेन्ट ही वास्तविक शासक थे। रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया और मुरार के निकट बहादुरपुर नामक स्थान पर युद्ध हुआ इसमें रानी लक्ष्मीबाई की विजय हुई और ग्वालियर पर कब्जा हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरह्यू रोज अपनी सेना लेकर ग्वालियर की तरफ चल दिया और १३ जून १८५८ को युद्ध हुआ मुरार पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया ग्वालियर से पांच मील दूरी पर कोटा की सराय नामक स्थान पर युद्ध हुआ ब्रिग्रेडियर स्मिथ को रानी लक्ष्मीबाई ने हराया। घमासान युद्ध हुआ इसमें रानी लक्ष्मीबाई के शरीर में अनेक घाव हो गये इसमें चौदह हजार सेना अंग्रेजों की नष्ट हो गई संग्राम भूमि के निकट एक पर्णकुटी में रानी साहिबा लक्ष्मीबाई का १६ जून सन् १८५८ को देहान्त होना बताया जाता है।

लेकिन असलियत यह है कि महारानी लक्ष्मीबाई जून सन् १८५८ ई० में प्रतापगढ़ के महाराजा की सहायता से वह नेपाल की जंगली पहाड़ियों की गुफा में अज्ञात वास किया था और वि० सं० १९७२ अर्थात् सन् १९१५ ई० में ८० साल की उमर में महारानी लक्ष्मीबाई स्वर्गवासी हुई थी। प्रतापगढ़ में प्रमाण मिला है।

मर्दनसिंह सन् १८५८ में अंग्रेजों द्वारा कैद कर लिये गये और २८ सितम्बर सन् १८५८ में लाहौर के जेल में भेजे गये परन्तु वृन्दावन वापिस कर दिये गये २२ जुलाई सन् १८६९ अर्थात् वि० सं० १९२६ में राजा मर्दनसिंह अमर सेनानी महान क्रान्तिकारी बानपुर वाले राजा परलोक-वासी हो गये थे।

दतिया के बुन्देला नरेशों की परम्परा

पहले यह राज्य विशाल था परन्तु समय समय पर ग्वालियर जालौन, समथर, झांसी राज्यों ने छीना झपटी कर इसे छोटा कर दिया। इसके पश्चिमी हिस्से पर पर सिन्धू नदी प्रवाहित है जिसके उतरी सिरे पर सैवड़ा प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हैं। पूर्वी भाग से पहूज नदी निकली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है जिसकी सहायक श्यामला एवं पद्मा है साधारण तौर पर पूरा राज्य टौरियाउ हैं परन्तु पहाड़ एवं घना वन केवल सैहुड़ा इलाके में ही है। यह राज्य दक्षिण से उत्तर की ओर क्रमशः पतला होता चला गया है। आकार में इटली देश के समान है। यहां सीता सागर तरोन ताल, लक्ष्मन ताल, कर्ण सागर रावा सागर, लाला का ताल, बड़ौनीताल, राम सागर एवं वीर सागर प्रसिद्ध तालाब हैं। जो सिंचाई के कम परन्तु निस्तारू अधिक है परन्तु पानी सदैव रखते है।

(वि० स० १६८३ से १७१३ वि० सं० तक)

(१) भगवानराय (सन् १६२६ से १६५६ तक)

एक पृथक इकाई के रूप में दतिया राज्य का इतिहास २० अक्टूबर सन् १६२६ से प्रारम्भ होता है जब ओरछा नरेश वीरसिंह जू देव ने अपने एक पुत्र भगवानराय को दतिया और बड़ौनी का राज्य प्रदान किया।

भगवान राय के तीन विवाह हुए (१) पहिली रानी से, शुभकरही तथा धर्म कुंवर कन्या हुई। पुत्री का विवाह सैगुवां हुआ था (२) दूसरी रानी से पृथ्वीराज (३) तीसरी रानी से धुरमंगद शक्तिसिंह हुये थे।

सन् १६२५ में जब सम्राट जहांगीर काबुल जा रहे थे महावत खां ने उन्हें अपने नियन्त्रण में ले लिया। समाचार पाते ही वीरसिंह जू देव ने अपने पुत्र भगवानराय को सहायता के लिये भेजा यद्यपि उस समय तक उनका अपने संरक्षक जहांगीर से कुछ मतभेद हो चुका था जहांगीर ने भगवान राय की राज्य भक्ति की सराहना करते हुए उनका अच्छा सम्मान किया। दूसरी बार जब भगवान राय मुगल सम्राट की सेवा में भेजे गये महाराजा वीरसिंह जू देव ने ओरछा राज्य अपने ज्येष्ठ पुत्र जुझारसिंह को सौंप दिया और मतभेद को कुछ और भी बढ़ा रखने के लिए भगवानराय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की पलेरा जागीर उनके ही दो पुत्र धुर मंगद और शक्तिसिंह को दे डाली। स्वाभाविक था कि लौटने पर भगवानराय विरोध ठानते क्योंकि अब इनके पास निरवाह का कोई साधन न था पिता पुत्र के थोड़े विरोध के पश्चात जो समझौता हुआ उसके अनुसार वीरसिंह जू देव ने भगवान राय को एक अलग जागीर प्रदान की। जिसमें दतिया नगर और दतिया का महल सम्मिलित था और जिसके साथ बड़ौनी की मालगुजारी भी थी। सम्राट से प्राप्त होने वाली तीन तलवारें और मधुकरशाह की लक्ष्मीनारायण की मूर्ति भी दतिया नरेश को प्राप्त हुई।

ओरछा घराने के बुन्देला राजपूत भगवानराय जो दतिया राज्य के संस्थापक हुये साम्राज्य सेवा के साथ बल प्रयोग के द्वारा राज्य बिस्तार की सुविधा स्पष्ट देख सके। उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से दतिया के लिए बैभव कमाया और मुगल साम्राज्य में बुन्देलों की प्रधान गद्दी ओरछा के बाद दतिया को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। एच० ईलियट के अनुसार सन् १६२६-३० जब खानजहाँ लोधी ने विरोध किया भगवानराय ने शाहस्ता खां के नेतृत्व में मुगल राज्यवंश की सहायता की और युद्ध में उन के भाई नरहरिदास मारे गए। सन् १६३१ में दतिया नरेश ने आसफखां के साथ बीजापुर अभियान में भाग लिया परन्तु सन् १६३४ में जुझारसिंह के विद्रोह के साथ वे तटस्थ रहे। सन् १६३९ म उन्होंने लाहौर में विद्रोही सूबेदार के विरोध में जो सेवायें प्रदान की, उनके पुरुस्कार स्वरूप उन्हें भांडेर परगना और पंच हजारी का मनसव (जिसे कुछ विदेशी विद्वानों ने ३००० हजार का आंका है) प्राप्त हुआ। सन् १६४६ में भगवानराय का देहान्त हुआ उनकी समाधि 'सुराही छतरी के नाम से प्रसिद्ध है

वि० सं० १७१३ से वि० सं० १७४० तक

(२) शुभकरण सन् १६५६ से १६८३ तक

भगवान राय के पुत्र शुभकरण जो सन् १६४६ से १६५३ के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आक्रमणों में बलख और बदखसां से मुगल सम्राट की उल्लेखनीय सेवा कर चुके थे दतिया की गद्दी पर प्रतिष्ठित हुए और शुभकरण के छोटे भाई पृथ्वीराज को बड़ौनी की जागीर प्राप्त हुई । राज्य पाकर शुभकरण अपने समय के सभी महत्वपूर्ण अभियानों में भाग लेते रहे स्थानीय परम्परा के अनुसार शुभकरण ने सब मिलाकर २२ लड़ाईयों में भाग लिया । सन् १६५७-५८ में उन्होंने चम्पतराय के साथ ओरङ्गजेब और मुराद का पक्ष लेकर दारा के साथ युद्ध किया और सुजा के साथ युद्ध करते हुए खुजवा की लड़ाई में शुभकरण के भाई पृथ्वीराज मारे गए । अधिकार पाकर ओरङ्गजेब ने शुभकरण को पँच हजारी का मनसब प्रदान करते हुए बुन्देलखण्ड का सूबेदार नियुक्त किया क्योंकि इस समय तक ओरङ्गब का चम्पतराय से कुछ विरोध हो जाने के कारण यह आवश्यक था कि बुन्देलखण्ड एक शक्तिशाली नियन्त्रण में रहे और सम्राट औरङ्गजेब शुभकरण से अधिक योग्य और विश्वसनीय दूसरा सामन्त नहीं पा सके थे । विद्वानों के अनुसार मनसब का मूल्य कुछ भी आंका जाय परन्तु इस राज्य में पंच हजारी का स्पष्ट उल्लेख है । पहले भले ही कुछ कम रहा हो परन्तु इस समय यह मनसब वृद्धि आश्चर्यजनक कदापि नहीं ।

बनियर के अनुसार सन् १६६६ में शुभकरण ने अराकान के अभियान में भाग लिया और सन् १६६७ से सन् १६८० तक उन्होंने दक्षिण की लड़ाईयों में वीरता दिखाई । दक्षिण की लड़ाइयों में शुभकरण के साथ उनके पुत्र दलपतिराव और भतीजे बड़ौनी के छत्रसाल रहे । फरिस्ता के अनुसार दलपतिराव सन १६८१ में अन्टूर में जख्मी हुए और उन्हें ३००० का मानसब प्राप्त हुआ । शुभकरण और दलपत राव ने दक्षिण में मराठों से युद्ध करते हुये अच्छी ख्याति प्राप्त की । सन् १६८२ में शुभकरण जब दक्षिण में दिलेरखां की सहायता कर रहे थे रोग ने उनके ऊपर अधिकार जमाया और सन् १६८३ में उनका देहान्त हो गया । इस वीर सैनिक के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निधन का सभी को भारी दुःख हुआ करण सागर नामक सुन्दर तालाब का निर्माण कराने वाले शुभकरण ने दतिया के पूर्वी भाग के एक टीले पर "राजगढ़" का भव्य प्रासाद निर्मित कराया।

वि० सं० १७४० से वि० सं० १७६४ तक

(२) दलपति राव (सन् १६८३ से १७०७)

मुगल घराने में तीसरे शासक अकबर की भांति दलपतिराव ने अपने राज्य को दृढ़ता प्रदान की । उन्होंने दतिया नगर को कुछ नये ढंग से बसाकर दलीप नगर नाम दिया । आपने रास नाम नर प्रतापगढ़ के नाम से नगर में एक सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण भी दलपति राव के समय में हुआ दलपति राव एक बड़े योद्धा थे जिन्होने अपने पिता शुभकरण की मृत्यु के बाद बुन्देली सेना का नेतृत्व किया। सुदुर दक्षिण में बीजापुर सन् १६८६ गोल कुण्डा सन् १६८७ अदौनी सन् १६८८ और जिन्जी सन १६६४ के मोर्चों पर लड़कर उन्होंने दतिया के लिए प्रशंनीय वैभव कमाया। दलपतिराव को प्रारम्भ ही से औरंगजेब का अच्छा विश्वास प्राप्त था। सन १६८२ में जब औरंगाबाद में रहते हुये खानजहां ने सम्मा जी के एक दूत के यों ही निकल जाने का आरोप दलपति राव पर लगाया और जब आरोप से रुष्ट होकर समस्त बुन्देली सेना भड़क उठी थी। सम्राट औरंगजेब खानजहां की शिकायत पर तनिक विश्वास न कर सके। सम्राट की एक बेगम हुसैन मीरा को आगरा ले जाने का भार जब दलपतिराव को सौंपा गया, तो मार्ग में नदी पार दरते हुए उनकी रानी का हाथी भड़क उठा। पर्दे की रक्षा के विचार से दलपतिराव हाथी का बध करने के लिये प्रस्तुत हुए तभी बेगम ने अपनी चोड़ेल (बन्द पालकी) रानी के लिये भेज दी। चोड़ेल का यह सम्मान दतिया की रानियों का एक विशिष्ट सम्मान है जो बुन्देलखण्ड के अन्य राज्यों को नहीं मिला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दतिया में रामसीज के घेरे में जख्म पाने वाले दलपतिराव को बार बार मनसब वृद्धि का अवसर प्राप्त हुआ। गाजीउद्दीन खां के साथ अहमद नगर से बीजापुर रसद ले जाते हुए जब उन पर मराठों ने अक्रमण किया तो दोनों सेनानायकों ने असाधारण वीरता दिखाते हुये प्राय: ४०० शत्रुओं को नष्ट कर दिया अपनी इस वीरता के लिए दलपतिराव, राव की उपाधि और अलम (ध्वजा) के सम्मान से विभूषित हुए। सन् १६८८ में दलपति राव अदौनी के किलेदार नियुक्त हुए परन्तु सन् १६९२ में राजकुमार वेदार बख्त को सहयोग देने के कारण सम्राट उनसे कुछ रुष्ट हो गये किन्तु शीघ्र ही सम्राट को प्रसन्न कर लिया। फारस के राजदूत को औरंगाबाद का भार जब उन्हें सौंपा गया तो मार्ग में मराठों ने आक्रमण कर दिया और दलपतराव ने मराठा सरदार लाकोजी सिंधिया को कैद कर लिया। सन् १६९४ में जिंजी की लड़ाई के बाद सम्राट ने दतिया नरेश को एक जोड़ विशाल फाटक प्रदान किया जो किले में फूलवाग के द्वार पर अब भी सुरक्षित हैं।

सन् १६९८ में दलपतिराव के सुपुत्र रामचंद्र को नमूढ़गढ़ का सूवेदार नियुक्त किया गया किन्तु रामचन्द्र ने चुपचाप उस स्थान को छोड़ कर पिता की अनुपस्थिति में दतिया को हथिया लेने का प्रयास किया किन्तु औरंगजेब के अधिकारियों की सतर्कता से रामचन्द्र का यह प्रयास विफल हुआ। सन् १७०० में दलपतिराव ने जुल्फिकार खाँ की सेना के अग्रभाग का नेतृत्व दाऊखाँ पन्नी के स्थान पर सम्भाला। परनाला के युद्ध में उन्होंने रण कौशल का सुन्दर परिचय दिया जिसके पुरुस्कार स्वरूप एच० ईलियट के अनुसार उन्हें ३००० रु० का मनसव प्राप्त हुआ। उन्होंने वाकिन खेरा के युद्ध में भी भाग लिया। शाह आलम बहादुरशाह और आजमशाह के बीच उत्तराधिकारी के युद्ध में दतिया नरेश ने आजमशाह का साथ दिया और १९ जुलाई सन् १७०७ में जाजऊ की लड़ाई में उन्हें एक घातक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घाव लगा जिसके कुछ समय पीछे उनका देहान्त हो गया। कोटा के राजा रामसिंह भी इस लड़ाई में उनके साथ थे। दलपतिराव की समाधि जाजऊ के एक बगीचे में स्थित है।

दलपति राव के समय दतिया की जनता समृद्धि राज्य की शान्ति से ही समझी जा सकती है शासन की विशेष बातों पर ध्यान देने का वह समय न था। दीर्घकाल तक नरेश के बाहर रहने पर प्रजा का सुखी और सन्तुष्ट रहना शासक की सुचारु व्यवस्था का ही परिचायक है। युग की मांग निजी वीरता की थी, जिसमें अकेले दलपति राव ने ही योग नहीं दिया दतिया के कितने ही लाड़ले दो-दो हाथ दिखाने के लिए सदैव कमर कसे रहते थे।

(वि० सं० १७६४ से वि० सं० १७९३ तक)
(४) रामचन्द्र (सन् १७०७ से १७३४)

दलपति राव के देहान्त के पश्चात् उनके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए कुछ झगड़ा खड़ा हो गया। ओरछा के महाराज उदैतसिंह ने दलपति राव के पांच पुत्रों में सबसे बड़े रामचन्द्र का समर्थन किया और देहली जाने पर मुगल सम्राट बहादुरशाह ने भी खिलयत और मनसब प्रदान करते हुए दतिया पर उनके अधिकार की पुष्टि की। दलपतिराव के द्वितीय पुत्र पृथ्वीसिंह या पृथ्वीचन्द्र को सेवढ़ा की जागीर प्राप्त हुई। उनके तृतीय पुत्र भारतीचन्द्र सन् १७११ तक संघर्ष करते रहे। पृथ्वीचन्द्र ने 'रसनिधि' नाम से काव्य साधना और जहाँदार शाह को सेना के अग्रभाग में नेतृत्व के लिए अच्छी ख्याति प्राप्त की हैं। सम्राट फरुखसियर जब सिंहासन पर आसीन हुए तो उन्होंने नवाब मुकरम खाँ के द्वारा दतिया का शाही फरमान खिलअत तलवार और कई उपहार भेजे। सन् १७१४ में राव रामचन्द्र ने दिल्ली में सम्राट से भेंट की। जब दरबार में हथियारों से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सजकर जाने का निषेध था राव रामचन्द्र ने आज्ञा का उल्लंघन किया और अपने साहस के लिए सम्राट से सराहना पाई।

सन् १७२३ में उन्होंने जाट सरदार बदनसिंह के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया और सन् १७३२ में मुहम्मद खाँ वंगस के विरोध में जैतपुर के जगत राज बुन्देला को सहायता पहुचाई। सन् १७३६ में उन्होंने कड़ा जहानाबाद के भगवतसिह खीची के विरुद्ध बुरहानपुर मुल्क सआदत खाँ की सहायता की युद्ध में भगवंतसिह मारे गये और राव रामचन्द्र को भी एक घातक घाव लगा। राव रामचन्द्र की समाधि कड़ा में स्थित है। उनकी बड़ी रानी सीता जू के नाम पर दतिया में "सीता सागर" तालाब और उनके नाम पर दतिया से कुछ ही दूर पर "राम सागर" नामक तालाब का निर्माण उनकी प्रजा वत्सलता का परिचायक है।

महाराजा रामचन्द्र के ५ रानियां एव ४ पुत्र थे। परन्तु इनके ज्येष्ठ पुत्र रामसिह १७३० में ही मर गये थे। अन्य पुत्रों में नारायण जू रघुनाथ सिह एवं किशुनसिह थे। राजा बहादुर माधोसिह एवं बुद्धसिह म्याद पुत्र थे। मृत रामसिह के ७ पुत्र गुमानसिह, उम्मेदसिह, धीरसिह, हरीसिह, मकुन्दसिह, खेतसिह, एवं उमरावसिह थे।

चूंकि स्वर्गवासी महाराज रामचन्द्र के मृत (१७३०) इनके पुत्र रामसिह सबसे बड़े थे। इनकी प्रथम शादी जिगनी पजन कुंवरि के साथ हुई थी पजन कुंवरि से १७१० में गुमानसिह का जन्म हुआ था। गुमान सिह की शादी चौका वाले घंघेरे के यहाँ हुई थी जिससे मात्र एक पुत्र इन्द्रजीतसिह ही पैदा हुये थे। उसी समय चेचक की बीमारी से १७२८ ई० गुमानसिह भी स्वर्गवासी हो गये इसी कारण पर बब्बा की गद्दी पर हक के अनुसार पन्ती (पुत्र के पुत्र का पुत्र) महाराजा रामचन्द्र के पश्वात १७३६ ई० में इन्द्रजीतसिह दतिया के राजा बने।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(वि० सं० १७९३ से वि० सं० १८१९ तक)

(५) इन्द्रजीत (सन् १७३६ से १७६२)

राव रामचन्द्र के देहान्त के पश्चात् उत्तराधिकार का प्रश्न उपस्थित हुआ। जिसमें ओरछा नरेश उदैतसिंह ने पुनः मध्यस्थता की और रामचन्द्र के प्रपौत्र इन्द्रजीत के पक्ष में निर्णय दिया। इन्द्रजीत के पिता गुमानसिंह का देहान्त सन् १७२८ में और पितामह रामसिंह का देहान्त १७३० में हो चुका था। बड़ी रानी सीता जू के संरक्षण में कुमार इन्द्रजीत ने दतिया का राज्य प्राप्त किया। और उनका विरोध करने वाले उनके पिता के चाचा रघुनाथसिंह को नन्दी गाँव की जागीर से सन्तोष करना पड़ा। इन्द्रजीत को गद्दी दिलाने में दतिया राज्य के दो सेवक नोनेशाह गूजर और लाला रघुवंशी कायस्थ प्रमुख थे। नोनेशाह को जागीर में पांच गांव और राजधर की उपाधि प्राप्त हुई। जिसकी स्मृति में दतिया में राजधर का बाजार (वर्तमान छोटा बाजार) बसाया गया नौनेशाह के पुत्र मर्दनसिंह को समथर की किलेदारी से सम्मानित किया। पश्चात् नौनेशाह के पौत्र देवीसिंह को पृथ्वीचन्द्र के पुत्र बहादुर जू का दमन करने के लिये सेवढ़ा भेजा गया जिसके उपलक्ष में देवीसिंह को पांच गांव और भी प्राप्त हुए इस प्रकार मर्दनसिंह द्वारा समथर राज्य की स्थापना का सूत्रपात हुआ जिसके पक्ष में निश्चित प्रमाण सुलभ हैं। तथापि समथर दरबार अपनी स्वतन्त्र सत्ता का दावा करते हुये जागीर प्रदान किये जाने की बात को अस्वीकार करता है।

सन् १७६० में शाह आलम बुन्देलखण्ड में आये और ओरछा तथा दतिया नरेश ने उनसे बांदा में भेंट की। उन्होंने राव इन्द्रजीत को 'राजा' की उपाधि से विभूषित किया तथा एक सिंहासन (तख्तनामा) दो ध्वजायें और अरबी बाजा प्रदान किया। सन् १७३२ में पन्ना के छत्रसाल द्वारा पेशवा को बुन्देलखण्ड का एक भाग जागीर में दिये जाने के कारण मराठों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के आक्रमण का मार्ग खुल गया। सन् १७४२ में नारू शंकर ने ओरछा और दमोह पर आक्रमण करने के साथ ही दतिया के कुछ भाग पर भी अधिकार जमाया। पश्चात् मालवा के सूबेदार आजम उल्ला खाँ भी दतिया तक बढ़े चले आये, और उन्होंने दतिया नरेश को सात लाख रुपया देने के लिए बाध्य कियां। सन् १७४५ में दतिया नगर के सन्निकट पीला जी गायकवाड़ ने आक्रमण किया जिसे दतिया की सेना ने विफल कर दिया पीला जी का भतीजा मारा गया और वे स्वयं जख्मी होकर लौटे। महाराज इन्द्रजीत की (१) रानी चित्रकुंवर सिराउल (२) अचल कुंवर जाटम (३) खुमान कुंवरि दुर्गापुर की थी। बड़ी रानी चित्रकुंवरि से शत्रुजीतसिंह हुए थे।

(वि० सं० १८१९ से वि० सं० १८५८ तक)
(६) शत्रुजीत (सन् १७६२ से १८०१)

इन्द्रजीत के उत्तराधिकारी शत्रुजीत ने ओरछा नरेश के दत्तकपुत्र विक्रमाजीत कुंवर दूल्हा को गद्दी पर प्रतिष्ठित करने में दो बार सहयोग पहुंचाया जिसके उपलक्ष में शत्रुजीत को १७ गाँव प्राप्त हुये। सन् १८०० में उन्होंने महादेजी सिंधिया की विधवा बाइयों को सेंवढ़े में आश्रय प्रदान किया। उनका पक्ष लेकर लकवा दादा ने जब सेंवढ़ा (प्राचीन नाम किन्नर गढ़ के किले के सामने भारी तैयारी के साथ ग्वालियर के दौलतराव सिंधिया के विरुद्ध मोर्चा जमाया तो 'वीर दलप शणदः' के पवित्र ध्येय से अनुप्राणित राजा शत्रुजीत ने ग्वालियर के रघुनाथ राव और फ्रान्सीसी सेना नायक पीरू (Perron) के विरुद्ध अदम्य वीरता दिखाई कैप्टेन साइम्स के नेतृत्व में बायें पार्श्व का तो दतिया के वयोवृद्ध वीर नरेश ने बुरी तरह परास्त किया। राजा अपने छत्र के कारण सहज पहचाने जा सकते थे जिसके कारण उन्हे एक घातक घाव लगा, परन्तु उन्होंने पीरू को भी घायल कर दिया। पीरू की असाधारण वीरता के कारण ही सिंधिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की भयंकर हार होते होते बच गई। राज्य में प्राप्त 'शत्रुजीत रासो' का यह दावा कि पीरू मारा गया भ्रामात्मक है क्योंकि वह सन् १८०३ में रिटायर होकर फ्रांस में मरा, शत्रुजीतसिंह की ६ रानी थी परन्तु महारानी आनन्द कुँवरि ननोरा वाली से पारीछत राजकुमार ने जन्म लिया था।

वि० सं० १८५८ से वि० सं० १८९६ तक
(७) पारीछत (सन् १८०१ से १८३९)

शत्रुजीत के सुपुत्र पारीछत ने सन् १८०१ में गद्दी पर आसीन होकर मराठों से राज्य के भूभाग को वापिस पाने का प्रयास किया और वे भांडेर को लेने में सफल भी हुए। उन्होंने चिरगाँव के पास वेत्रवती पर एक बड़ा बाँध बनवाया जो पारीछा बाँध के नाम से प्रसिद्ध है और जिससे दतिया राज्य के तत्कालीन विस्तार का अनुमान किया जा सकता है। सन् १८०४ में उन्हें यह सूचना मिली कि बुन्देलखण्ड के ए० जी० जी० कैप्टेन वेली निकट ही दौरा कर रहे हैं। अतः राजा पारीछत ने नदीगाँव जाकर उनसे भेंट की और १५ मार्च सन् १८०४ को कुञ्जन घाट नामक स्थान पर दतिया राज्य और ब्रिटिश सरकार के बीच सन्धि स्थापित हुई।

The ilaka of Bhandere and certain other manals having been lately ceded by British Government to the ran of Gohvd the raan engacesto abst ainform all manner of interference संधि की धारा ३)।

लार्ड हेस्टिंग्ज ने मध्य भारत के देशी राजाओं के नाम १३ अक्टूबर १८१७ एक प्रपत्र इस प्रकार भेजा--

"The British Government has now un altererably determined to suppress the predatary Part of

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

the pindaries and to distroy and prevent the Revival of the predatory system in every part of India. The British Armies are advancing from every quarters in to Malwa for this purpose. Every state must therefore declare it self either friends or foe. These even who do not co-operate. Zealously In this cause will be viewed and treated as enemies".

(Protects Princes of India Act 108)

३१ जुलाई सन् १८१८ को कलिंजर में राजा पारीछत की ओर से उनके वकील राव शिवप्रसाद और ब्रिटिश सरकार की ओर से जानवाकिफ साहब के बीच एक दूसरा सन्धि पत्र लिखा गया जिसके अनुसार शान्ति स्थापना के दतिया के प्रयत्नों की सराहना की गई और पुरुस्कार स्वरूप सिन्ध के पूर्व में 'चौरासी इलाका' नामक प्रदेश जिसमें इन्दरगढ़ भी सम्मिलित है, दतिया राज्य को प्राप्त हुआ। इस प्रकार "सहायक सन्धि" के उपर्युक्त दो सन्धि पत्रों ने दतिया राज्य के क्षेत्रफल को ९११ वर्ग मील सीमित कर दिया।

राजा पारीछत का समय अंग्रेजों से सम्पर्क का समय था। उन्होंने भरतपुर के घेरे और पिंडारियों के युद्ध में ब्रिटिश सरकार की अच्छी सहायता की। सन् १८१८ में लार्ड हैस्टिंग्स दतिया आये और १८२४ में राजा पारीछत ने लार्ड एम्हर्स्ट से कानपुर में भेंट की। सन् १८२५ में लार्ड कौम्बरमीस के सम्मान में दतिया में एक बृहत्त दरबार का आयोजन किया गया। सन् १८२९ में राजा पारीछत कैथा में विलियम बैंटिंग के दरबार में सम्मिलित हुए। दिसम्बर सन् १८३५ में कर्नल स्लीमान ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दतिया की यात्रा की और उन्होंने राज्य का सुन्दर वर्णन किया। राजा पारीछत उस समय ६५ वर्ष के थे और उनकी टांग में १२ वर्ष से गठिया ने आधिपत्य जमा रखा था तथापि वे स्वस्थ और प्रसन्नचित्त देखे गये थे। कर्नल स्लीमान ने किले में फलों से लदों हुए उद्यान और एक तोप की विशेष सराहना की है। नगर का परकोटा बनवाने वाले राजा राजा पारीछत का देहान्त सन् १८३९ में सत्तर वर्ष की अवस्था में हुआ।

वि० स० १८९६ से वि० सं० १९१४ तक
(८) विजय बहादुर (सन् १८३९ से १८५७)

राजा पारीछत के दत्तक पुत्र विजय बहादुर धार्मिक स्वभाव के थे। कहा जाता है कि राजा पारीछत जब हाथी पर शिकार खेलने जा रहे थे तो उन्होंने विजय बहादुर को एक शिशु के रूप में हाथी के पैरों के निकट पड़ा हुआ पाया था और उन्होंने अत्यन्त प्रेम पूर्वक उसका पालन पोषण किया। विजय बहादुर के गद्दी पर बैठने के समय बड़ौनी के ठाकुरों ने आपत्ति की और भगवान राय के सीधे उत्तराधिकारी होने के नाते अपना अधिकार प्रकट किया किन्तु ब्रिटिश सरकार ने राजा पारीछत की मित्रता का ध्यान रखते हुए उनकी इच्छा को ही मान्यता दी। राजा विजयबहादुर ने तीर्थाटन करते हुए प्रचुर दान दिया। एक मुहूर्त में बावन नीवें डलवाने वाले अपने पूर्वज वीरसिंह जू देव के तुलादान की भांति विजय बहादुर का दान भी बृजभूमि में विख्यात है। झांसी के महाराजा गंगाधर राव नेवाल्कर के समकालीन राजा विजय बहादुर भी उत्तराधिकार के लिए चिंतित हुए। दतिया राज्य जितना छोटा था उतना ही भाग्यशाली था जो यहाँ सन् १८५७ में वृसिंह जू देव के भाई हरसिंह जू देव के कुटुम्ब की भसनेह शाखा से महरबानसिंह के पुत्र भवानीसिंह गद्दी के अधिकारी हुए। अंग्रजों ने बड़ी रीजेन्ट रानी कीं भरपूर सराहना की है क्योंकि झाँसी में केवल १७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
मील के अन्तर पर रहकर भी रानी ने शान्ति बनाये रखने और अंग्रेजों को सहायता पहुंचाने पर असाधारण सफलता प्राप्त की।

विο संο १९१४ से विοसंο १९६४ तक

(९) भवानी सिंह (सन् १८५७ से १९०७ तक)

भवानीसिंह के विरोध में विजय बहादुर के एक दासी पुत्र अर्जुनसिंह ने कुछ अशान्ति खड़ी की तो ब्रिटिश सेना के एक भाग ने विद्रोह का दमन किया। अर्जुनसिंह को काशी और कालान्तर में नौगांव के लिए निष्कासन का दण्ड मिला और अर्जुनसिंह का पक्ष समर्थन करने वाली दूसरी रानी भी दतिया में नजर कैद कर ली गई। महाराजा भवानीसिंह ने ५० वर्ष तक शासन किया और दतिया की आधुनिक प्रगति के इस युग में सुधार का श्री गणेश हुआ। नियमित न्यायालयों की स्थापना हुई और सन् १८५८ में पहला नियमित स्कूल खोला गया जो सन् १८६४ में अंग्रेजी स्कूल बन कर सन् १८८८ में हाई स्कूल कहलाया। सन् १८६१ में बड़ौनी के ठाकुरों ने उत्तराधिकार के लिये पुनः दावा खड़ा किया परन्तु उनकी कुछ चली नहीं सन् १८६२ में भवानीसिंह को उत्तराधिकार की सनद प्राप्त हुई और सन् १८५६ में राज्याधिकार प्राप्त हुए। दतिया और बड़ौनी का विवाद बहुत समय तक चलता रहा। अन्त में ब्रिटिश सरकार ने निर्णय दिया कि राजनैतिक दृष्टि से बड़ौनी के ठाकुर दतिया के आश्रित हैं तथापि राज्य के अन्य जागीरदारों से अलग उनकी सत्ता है क्योंकि बड़ौनी की जागीर का सीधा देहली का समर्थन प्राप्त था।

सन् १८७९ में दतिया राज्य और ब्रिटिश सरकार में नमक समझौता हुआ जिसके अनुसार दतिया दरबार को १०,००० रुο वार्षिक क्षति पूर्ति के रूप में प्राप्त हुए। सन् १८८९ में बेतवा नहर के लिये भूमि दी जाना, सन् १८८४ में रेलवे के लिये भूमि दी जाना तथा सन् १९०३ में अंग्रेजी सिक्के का चलन होना इस शासन की कुछ उल्लेखनीय विशे-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बतायें हैं। सन् १८७७ के देहली दरबार में राजा भवानीसिंह को 'लोकेन्द्र' की वंशगत उपाधि के साथ एक ध्वजा और एक स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। सन् १८९७ के अकाल का सुप्रबन्ध करने के फलस्वरूप महाराज भवानी सिंह को के० सी० एस० आई० और दीवान जानकीप्रसाद को राव बहादुर की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् १९०२ में लार्ड कर्जन का दतिया में आगमन हुआ और सन् १९०३ के देहली दरबार में महाराज भवानी सिंह को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

महाराज भवानीसिंह संस्कृत विद्या और ललित कला, कुश्ती और संगीत के उदार आश्रय दाता थे। उनका शासन राज्य के इतिहास में "स्वर्ण युग" था। कितने ही विद्वान कलाकार और पहलवान इस युग में दूर-दूर से दतिया खिचे चले आये। बिहार से मन्त्र शास्त्री ओझा, काशी, मद्रास और गुजरात से संस्कृत के पंडित, और देश के विभिन्न भागों से संगीतज्ञ महाराज के दरबार में आये और उनमें से कितने ही दतिया में बस गये। महाराज भवानीसिंह ने भ्रमण भी खूब किया। विश्व विजयी गामा को बनाने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। मृदंग पर 'गज कर्ण' बजाकर उन्मत हाथी को वश में करने वाले भारत प्रसिद्ध पखावजी कुदऊ सिंह भी दतिया की विभूति थे, जिन्होंने महाराज भवानीसिंह के दरबार की शोभा बढ़ाई। ४ अगस्त सन् १९०७ को इस गुण ग्राही नरेश का देहान्त हुआ।

(वि० सं० १९६४ से वि० सं० २००९ तक)

(१०) गोविन्दसिंह (सन् १९०७ से १९४५)

दसवें और अन्तिम नरेश महाराज गोविन्दसिंह का जन्म २१ जून सन् १८८६ को हुआ था। सन् १९०७ में राज्याधिकार पाकर उन्होंने अपने पूर्वज दलपतिराव की वीरता को अपनाते हुये शिकार में अच्छा नाम पाया,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्वी अफ्रीका में महाराज ने १४ शेर २ गेंड़ा, १ हिप्पो टेमश, ४ विभिन्न प्रकार के हिरन और अन्य कितने ही जानवरों का शिकार किया। यहाँ भारत के विभिन्न भागों में भी उन्होंने प्रायः २०० बाघों और कितने ही तेंदुओं और रीछों तथा कुछ शेरों और चीतों का शिकार किया। सन् १९१४ में प्रथम महायुद्ध छिड़ने पर उन्होंने पूर्ण तत्परता से ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिये हाथ बढ़ाया और दोनों महायुद्धों दतिया राज्य की सहायता उसके छोटे विस्तार से कहीं अधिक रही जिसकी सराहना अंग्रेजों ने मुक्त कण्ठ से की है। सन् १९१८ में उन्हें के० सी० एस० आई० की उपाधि सन् १९२६ में मेजर का सम्मान तथा सन् १९३२ में जी० सी० एस० आई० की उपाधि और लैफ्टीनैन्ट कर्नल के सम्मान से विभूषित किया गया।

महाराजा गोविन्दसिंह के तीन व्याह हुए थे। प्रथम मनपुरा, सुवारा और तीसरा सायला। प्रथम रानी चन्दकुंवर से बलभद्रसिंह का जन्म हुआ था। कुछ समय वाद चन्द्रकुंवर का निधन हो गया था। द्वितीय रानी से कुछ न हुआ था। तृतीय रानी सायला वाली से रावराजा जसवन्तसिंह उर्फ दादा साहब का जन्म हुआ था। महाराजा गोविन्द ने बलभद्रसिंह की शादी बलरामपुर [लखनऊ] में हुई थी। गोबिन्दसिंह की पुत्री जगम्मनपुर में ब्याही गई।

१९१९ ई० के बाद राज परिवार का घटना चक्र तेजी से घूमने लगा था बलभद्रसिंह को अयोग्य ठहरा कर जसवन्तसिंह को गद्दी पर बैठाने के नाना प्रकार के षणयन्त्र रचे गये। इसमें राजा गोविन्दसिंह एवं युवराज बलभद्र सिंह दोनों को अपयश भोगना पड़ा था। कर्मचारी एवं जागीरदार भी पक्ष विपक्ष में लग कर स्वार्थ की रोटियां सेंकने लगे थे। राजा के पक्षकारों ने कहा कि बलभद्रसिंह कैरुआ की ठकुराइन ने लैपालक पुत्र थे। इस प्रकार अवैध पुत्र को वली अहद (राज्याधिकारी) नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनाया जा सकता । युवराज पक्ष ने आक्षेप किया कि जसवंतसिंह भी अवैध पुत्र है। राजा ने एक स्त्री पर मोहित होकर एक व्यक्ति का कत्ल कर दिया है। राजा पागल हो गये हैं। विवाद यहां तक बढ़ा कि गोलियां भी दागी गई थी। परिणाम स्वरूप अंग्रेजी सरकार ने हस्तक्षेप किया राजा और युवराज दोनों को पृथक रक्खा गया था युवराज बलभद्रसिंह बलरामपुर, लखनऊ रहे। डेली कालेज इन्दौर में अध्ययन किया धीरे-धीरे विवाद ठण्डा पड़ गया था।

महाराजा गोविन्दसिंह ने शिकार, सुरा और सुन्दरी की ऐसी त्रिवेणी बहाई थी कि उनका नाम सम्पूर्ण भारत में विख्यात हो गया था। शेरों को मारकर अपने दरबार हाल को सजाना उनकी अपनी विशेष प्रतिमा थी। कालीनों के स्थान पर शेरों की खाल का बिछावन, खम्बों के धरातल को उसके सिर से चौखम्बा बनाना उनकी शान एवं विशिष्ट रुचि का प्रतीक। सुरा में हर समय सरोवोर रहने से सामाजिक मर्यादाओं को लांघकर इतने ऊंचे उठ गये थे कि सुरा के द्वार से सुन्दरियों के सपनों में ऐसे लिप्त हुए कि मानो महल में सौन्दर्य प्रतिस्पर्धा का नग्न एवं मुक्त प्रदर्शन का द्वार खुल गया हो। इसका कुछ चित्रण पटियाला के दीवान जर-मनीदास ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (महाराजा) में भी किया है। सुन्दरी सौन्दर्य साधना के ध्यान स्वरूप ही उन्हें अपना कुछ निर्वासित जीवन काटना पड़ा था। निर्वासित जीवन में अपनी बुन्देलों की शौर्य परम्परा का भी ख्याल आया।

राजतंत्र का स्वेच्छा चारी समय था। राजा गोविन्दसिंह ने महाराज भुमानीसिंह की एक प्रतिभा किले के पास स्थापित कराई थी। अपने निवास हेतु कोठी बनवाई थो तथा ठण्डी सड़क बनवाई थी।

महाराज गोविन्दसिंह के समय में कितने ही ब्रिटिश पदाधिकारी और देशी नरेश दतिया आये जिनमें लार्ड विलिंगडन और लार्ड लिन–

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिथगो, निजाम हैदराबाद, महाराजा ग्वालियर, महाराजा बीकानेर और महाराजा पटियाला के नाम उल्लेखनीय हैं। महाराजा के समय में शासन की सुचारू व्यवस्था बहुत कुछ अंग्रेजी ढंग पर किये जाने का भी अच्छा प्रयास हुआ और निःशुल्क शिक्षा के साथ ही उदार छात्रवृत्ति की जो व्यवस्था दतिया राज्य में थी वह बहुत कम स्थानों में देखी गई है। हार्डिग अस्पताल, गोविन्द इनफैन्ट्री, स्टेट वैंक जैसी महत्वपूर्ण देन भी किसी प्रकार कम सराहनीय नहीं। इस राज्य की परिणति से कुछ पूर्व सन् १९४६ में जनता ने एक प्रबल आन्दोलन द्वारा ब्रिटिश पोलीटिकल विभाग से टक्कर ली, जो रजवाड़ों के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में निर्विवाद रूप से अपने ढंग का पहला प्रयास था। सन् १९४८ के प्रारम्भ में प्रजा ने उत्तरदायी शासन के लिए आन्दोलन किया।

२३ अप्रैल सन् १९४८ को विंध्य प्रदेश की संयुक्त सरकार ने राज्य का शासन भार सम्भाला और २३ जनवरी सन् १९५२ को महाराज गोविन्दसिंह का देहान्त हुआ। उन्होंने अपने पीछे दो कुमार राजा बहादुर बलभद्रसिंह और राव राजा जसवन्तसिंह तथा उनका भरा पूरा परिवार छोड़ा महाराजा बलभद्रसिंह महाराज बि० स० २००९ (सन् १९५२ ई०) राजगद्दी पर आसीन हुये २८ मार्च सन ७८ को महाराजा बलभद्रसिंह दतिया स्वर्गवासी हुये थे।

महाराज बलभद्रसिंह की शादी महाराजा भगवती प्रसाद सिंह बलरामपुर की कन्या गिरराज कुमारी से हुई थी जिनके कृष्णसिंह-बलरामसिंह-चन्द्रभूषणसिंह-लक्ष्मेध्वासिह केशवसिंह पाँच पुत्र दो कन्या हुई थी। श्री कृष्णसिह महाराजा दिनांक २८–३–७८ ई० को गद्दी पर आसीन हुए। आपके राजेन्द्रसिंह-हरिचन्द्र-घनश्यामसिंह तीन राजकुमार हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरछा के राजाओं का वंश वृक्ष

रुद्रप्रताप

(१) भारतीचन्द्र	(२) मधुकरशाह	(३) उदयजीत	(४) कीरतसिंह	(५) भूपतसिंह	(६) अमानदास
(७) चन्दनदास	(८) दुर्गादास	(९) घनश्याम	(१०) प्रागदास	(११) भैरवदास	(१२) खण्डेराव

मधुकरशाह ओरछा राज्य वंश वृक्ष

रामशाह चन्देरी वृक्ष — वीरसिंह देव — हरसिंह देव, भसनेह

वीरसिंह देव:
- जुझारसिंह
- पहाड़सिंह
  - सुजानसिंह
  - इन्द्रमणि
    - जसवन्तसिंह
      - भगवन्तसिंह
      - उद्दैतसिंह
        - पृथ्वीसिंह
          - गन्धर्वसिंह
            - सामन्तसिंह
        - अमरेश — खनियाधाना वृक्ष १५
- भगवानराय — दतिया वृक्ष (१३)
- हरदौल — विजयसिंह — बिजना वृक्ष (१४)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तेजसिंह | विक्रमाजीत

सुजानसिंह

हम्मीरसिंह

प्रतापसिंह

भगवन्तसिंह | सामन्तसिंह विजावर नरेश

वीरसिंह	करनसिंह	जहेन्द्रसिंह	महेन्द्रसिंह
(१)	(२)	(३)	(४)
देवेन्द्रसिंह	नरेन्द्रसिंह	प्रदन्मसिंह	दिनेशसिंह
मधुकरसिंह	ज्ञानेन्द्रसिंह		

पन्ना के राजाओं का वंश वृक्ष

उदयाजीत (महाराज रुद्रप्रताप ओरछा वालों के पुत्र)

सन् १५०१ से १५३१ ई० तक

राघोदास काशीदास गंगादास भारतीचंद्र हृदयनारायन प्रेमचन्द्र

सन् १५३१ से १५६०

भगवतदास कुंवरसैन मानशाह

सन् १५६० से १५८५ तक कुलनंदन १५८५ से १६१० ई. (गरौली वृक्ष ११)

सन् १६१० से १६३४ ई० तक

चम्पतराय चन्द्र जू

सन् १६३४ से १६६४ ई० तक

खडगराय सुजानराय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोपालराय छत्रसाल महाराजा रतनशाह अंगदराय सारवाहन

सन् १६६४ से १६३१ तक
(१२ मई १७३१ में मृत्यु

जगतराज (जैंतपुर वृक्ष ३)

भारतीचन्द्र (जसो वृक्ष ९)

पद्मराज

हृदयशाह जिगनी वृक्ष १०)

पृथ्वीसिंह शाहगढ़ वृक्ष ४

सभासिंह सलामसिंह

हिन्दूपत अमानसिंह

अनुरुद्धसिंह धौकलसिंह

किशोरसिंह सन् १८०२ से १८३४ ई० तक

नृपतसिंह
सन् १८३९ से १८७० तक

हरिवंश राव
सन् १८३४ से १८३६ तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोकपालसिंह (सन् १८९३ से १८९७ तक) — रुद्रप्रताप सन् १८७० से १८९३ ई० तक — खुमानसिंह — लछमनसिंह

लोकपालसिंह → माधवसिंह सन् १८९७ से १९०१ तक

खुमानसिंह → यादवेन्द्र सिंह सन् १९०२ से १९४८ तक

बुन्देलखण्ड के विभिन्न राज्य संस्थापकों की वंशावली

विन्द्रोलमूल हेमकर्ण (काशी)

रुद्रप्रताप (ओरछा)

भारतीचन्द्र — मधुकरशाह — उदयादित्य

मधुकरशाह

रामशाह — वीरसिंह (प्रथम)

रामशाह → देवीसिंह (चन्देरी)

वीरसिंह (प्रथम) → जुझारसिंह — दिमान हरदौल — भगवानराय

ओरछा दतिया और बड़ौनी)

विजयसिंह (बड़ागांव)

प्रेमचन्द्र

कुंवरसेन — इन्द्रमणि गरौली

कुंवरसेन → मानसिंह → भगवन्तदास → चम्पतराम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतापसिंह

छत्रसाल (पन्ना और डँगाई)

महाराजा ओरछा
उदोतसिंह
अमरसिंह
(खनियाधाना)

भारतीचंद्र (वघौरा वजसो) — हरीसिंह (जसो)
जगतराज जैतपुर
पहाड़सिंह — मानसिंह (सरीला)
पद्मसिंह (जिगनी)
हिरदैसिंह — अमरसिंह (लुगासी)

खुमानसिंह (चरखारी)
गुमानसिंह (अजयगढ़)
वीरसिंह (बिजावर)

अ ष्ट भै या जा गी र

फतेह सिंह दांतपुरा	उमेद सिंह बंकापहाड़ी	मान सिंह ढुरवई	भजवल सिंह पसरारी	हिंदुपत टोड़ीफतेहपुर	सावत सिंह विजना	लछमन सिंह टहरौली	मोहकम सिंह चिरगांव

दतिया राज्य संस्थापकों की वंशावली

भगवानराय [ओरछा के वीरसिंह प्रथम के पुत्र]
(२० अक्टूबर सन् १६२६ से १६५६ ई० तक)

शुभकरण
(सन् १६५६ से १६८३ तक)

अर्जुनसिंह

दलपतिराव
(सन् १६८३ से १७०७ ई० तक)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृथ्वीचन्द्र

रामचन्द्र
(सन् १७०७ से १७३६ ई० तक)

रामसिंह

गुमानसिंह

इन्द्रजीत
(सन् १७३६ से १७६२ ई० तक)

सत्तजीत
(सन् १७६२ से १८०१ ई० तक)

राजा पारीछत
(सन् १८०१ से १८३९ ई० तक)

महाराजा विजयबहादुर
(सन् १८३९ से १८५७ ई० तक)

भवानीसिंह
(सन् १८५७ से १९०७ ई० तक)

महाराज गोविन्दसिंह
[१७०७ से १९४८ ई० तक (२३ जनवरी सन् १९५२ को स्वर्गवासी)]

बलभद्रसिंह

रावराजा यशवन्तसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

|

कृष्णसिंह, बलरामसिंह, चन्द्रभूषणसिंह, लक्ष्मेष्वासिंह, केशवसिंह

|

राजेन्द्रसिंह, हरिश्चन्द्र, घनश्यामसिंह

श्री दिमान हरदौल जू ओरछा वंशवृक्ष

श्री महाराजा वीरसिंह जू देव प्रथम (सन् १६०६-२७ ई० तक)

|

श्री दिमान हरदौल जू शाखा बड़ागाँव

|

श्री विजयसिंह

|

श्री प्रतापसिंह

- जसकरन राव — लड़वारी
- भगवन्तसिंह — दिगौड़ा
- रायसिंह — अष्टगढ़ी
  - फतेह सिंह — दातपुरा
  - उम्मेद सिंह — बंकापहाड़ी
  - भुजवल सिंह — पसरारी
  - मान सिंह — धुरबई
  - हिन्दूपति — टोरीफतेपुर
  - सामन्त सिंह — बिजना
    - सुरजनसिंह
      - हिरदेशाह
  - लक्ष्मन सिंह — टारौली
  - मौका माक्षी — चिरगाँव
- श्री महाराजउदेतसिंह — ओरछा (सन् १६८९-१७३६ ई०)
- पंचमसिंह — टकरौली, पठार, बकोरा, भदखार
- अचलसिंह — लखैपुर, मौगना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिजना वंश वृक्ष

- खण्डेराव
  - मुकुन्दसिंह
    - हीरासिंह
    - रतनसिंह दिगोड़ा

दिगौड़ा वंश वृक्ष

- दिमानसिंह भगवन्तसिंह जू देव, रानी रकसा
  - रतनसिंह
    - खुमानसिंह, रानी डामरौन
      - शत्रुजीतसिंह
        - मंगलसिंह
        - रामसिंह, रानी नौनेर
          - मर्दनसिंह, रानी रूपकुँवर
            - गनेशराव, रानी पियरौना
              - गम्भीरसिंह
                - हिन्दूपत
                - पंचमसिंह
                  - मजबूतसिंह
              - खुमानसिंह भ्याजू प्रौना
            - महाराजा हमीरसिंह ओरछा की गद्दी मिली
            - प्रतापसिंह महाराजा ओरछा
              - भगवन्तसिंह
              - सामंतसिंह महाराजा बिजावर
        - बहादुरसिंह बिजना
  - सकतसिंह चिरगाँव
  - सूरतसिंह जैतवार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा वहादुर भगवन्तसिंह

- वीरसिंह
  - देवेन्द्रसिंह
    - मधुकरशाह
- करनसिंह
  - नरेन्द्रसिंह
- जयेन्द्रसिंह
  - प्रदुमन्नसिंह
- महेन्द्रसिंह
  - दिनेशसिंह

टोड़ी फतेहपुर बंश वृक्ष

रायसिंह श्री दिमान हरदौल जू के प्रपौत्र

|

राजा हिन्दूपतसिंह सन् १७३१ ई० से सन् १७६५ ई० तक

|

राजा मेदनीमल सन् १७६६ से सन् १७८८ ई० तक

|

राजा धुरमंगलसिंह सन् १७८९ ई० से सन् १८११ ई० तक

|

राजा हरप्रसादसिंह सन् १८१६ ई० से सन् १८५४ ई० तक गोदी बिजना से

|

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजा पृथ्वीसिंह सन् १८५४ ई० से सन् १८७९ ई० तक गोद बिजना से

राजा अर्जुनसिंह सन् १८७६ से सन् १९४२ ई० तक

राजा रघुराजसिंह सन् १९४२ ई० से सन् १९६४ ई० तक

चन्द्रभानसिंह — राजा बृजेन्द्रसिंह सन् १९६४ ई० से वर्तमान

राजकुमार कौशलेन्द्रसिंह — राजकुमार पुष्पेन्द्रसिंह — भानुप्रतापसिंह राजकुमार

जैतपुर के राजाओं का बंश वृक्ष

जगतराज महाराजा छत्रसाल के पुत्र

वीरसिंह दीवान विजावर वृक्ष (५) — कीरतसिंह — पहाड़सिंह

कीरतसिंह: खुमानसिंह — गुमानसिंह

खुमानसिंह: चरखारी वृक्ष

गुमानसिंह: अजयगढ़ वृक्ष (७)

पहाड़सिंह: मानसिंह — सरीला वृक्ष (८)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

।
गर्जसिंह
।
केशरीसिंह
।
पारीछत
खेतसिंह

शाहगढ़ के राजाओं का वंश वृक्ष

पृथ्वीसिंह (पन्ना के राजा हृदयशाह के पुत्र)
।
हरीसिंह
।
मर्दनसिंह
।
अर्जुनसिंह
।
बखतबली

बिजावर के राजाओं का वंश वृक्ष

दिमान वीरसिंह जैतपुर जगतराज के पुत्र
वि० सं० १८२६ से वि० सं० १८५० तक
केशरीसिंह सं० १८५० से १८६७ तक
।
रतनसिंह सं० १८६७ से १९०४ तक
।
लक्ष्मणसिंह सं० १८९० से १९४० तक
भानुप्रताप महाराज सं० १९०४ से १९५५ तक
सामन्तसिंह गोद गये राज्य वंश ओरछा से
वि० सं० १९५५ में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चरखारी के राजाओं का वंश वृक्ष

खुमानसिंह (जैतपुर के जगतराज के नाती कीरतसिंह के पुत्र)
।
राजा विक्रमाजीत विजय बहादुर
।
रणजीतसिंह
।
रतनसिंह
।
जयसिंह
।
महाराज मलखानसिंह

अजयगढ़ के राजाओं का वंश वृक्ष

गुमानसिंह (जैतपुर के जगतराज के नाती कीरतसिंह)
।
बखतसिंह
।
- राजा महिपतसिंह
- राजा माधौसिंह
  ।
  विजयसिंह
  ।
  महाराजा रजोसिंह
  ।
  भूपालसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरीला के राजाओं का वंश वृक्ष

मानसिंह (जैतपुर के पहाड़सिंह के पुत्र)

धुरबई राज्य वंश शाखा		बंका पहाड़ीराज्य वंश शाखा
	तेजसिंह	
दिमान हरदौल जू	अनुरुद्धसिंह	दिमान हरदोल जू
,, रामसिंह		,, रायसिंह
,, अमानसिंह	हिन्दूराव	बंका दिमान उम्मेदसिंह
,, खेतसिंह		,, ,, दुरगासिंह
,, बुधसिंह	खड़कसिंह	,, ,, छत्रपति
,, नाहरसिंह		,, ,, शत्रुजीतसिंह
,, रनजोरसिंह	पहाड़सिंह	,, ,, ईश्वरीसिंह
,, हम्मीरसिंह		,, ,, विजयबहादुरसिंह
		,, ,, प्यारे जू
		,, ,, महरबानसिंह

जसौ के राजाओं का वंश वृक्ष

भारतीचन्द्र [महाराजा छत्रसाल के पुत्र]

।

दुर्जसिंह

।

चेर्वासिह

।

मूरतसिंह

।

पहाड़सिंह

।

रामसिंह

।

छत्रजीत

।

भोपालसिंह

।

गजराजसिंह बहादुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिगनी के राजाओं का वंश वृक्ष

पद्मराव महाराजा छत्रसाल के [पुत्र]

खरगापुर राज्य वंश शाखा	।	टारौली राज्य बंश
वीरसिंह देव [सन् १६०५-२७ई०]	लक्ष्मनसिंह	दिमान हरदोलजू देव
दिमान माधौसिंह	।	दिमान रायसिंह मानसिंह
पदमसिंह	हरीसिह	,, लक्ष्मनसिंह नृपतसिंह
दिमान किशोरसिंह	।	,, गम्भीरसिंह अचलसिंह
दिमान अर्जुनसिंह	पृथ्वीसिंह	,, ईश्वरीसिंह पजनसिंह
दिमान रघुराजसिंह	।	,, जगजीतसिंह पानसिंह
	भोपालसिंह	,, बलवन्तसिंह
	।	,, भानुप्रतापसिंह
	भानुप्रतापसिंह	

गरौली के राजाओं का वंश वृक्ष

मानशाह प्रेमचन्द्र के पुत्र

।

इन्दमनि

शाहमन

पखतसिंह

अनुरुद्धसिह

जीतसिह

भगवन्तसिह

गोपालसिह

दीवान बहादुर पारीछत

।

बैंकाराव | रनधीरसिंह

बुन्देल का संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ नं० ३८३ से ३९५ तक राजाओं का वंश वृक्ष से।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्देरी के राजाओं का वंश वृक्ष

राजा रामशाह (ओरछा के मधुकरशाह के पुत्र)

पलेरा राज्य वंश शाखा

वीरसिंह देव (सन् १६०५-२७ई०)

भगवानराय महाराजा दतिया

धुरमंगद — शक्तिसिंह

(धुरमंगद के पुत्र) चामुन्डराव — छत्रसाल

संग्रामसिंह

भारतशाह

देवीसिंह

दुरगसिंह

दुरजनसिंह

मानसिंह

अनुरुद्धसिंह

राजारामचन्द्र

प्रजापाल — मोरप्रहलाद

(मोरप्रहलाद के पुत्र) मरदनसिंह

बानपुर के राजा

श्री रामचन्द्र राय की वंशावली

श्री वंशावली झांसी वाले नेवालकर गेन्ति गौतम राजा हरी दामोदर दास नेवालकर (पान्होला के)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिवरामराव भाऊ राजा (पत्नी सखूबाई)

कन्या मृ० शाहौरे नागपुर

कन्या मृ० ना० गोविंदचांदोरकर

रघुनाथराव राजे

वैश्यापुत्र

अलीबहादुर

नसरत जंग

कृष्णराव उर्फ छोटेभाऊ पत्नी सरस्वती बाई

कृष्णराव

गंगाधरराव राजे मृत सं० १९११ पत्नी महारानी लक्ष्मीबाई मृत सन् १८५७ई. लश्कर में (वि. सं. १९१४)

गंगाधरराव

ताई० ड. गंगाबाई मृ० मोरेश्वरराव विनायकराव सूबेदार सागर

रामचन्द्र राजे मृत सं० १८८२

दामोदरराव दत्तक वंश इन्दौर में

कृष्णाराव सूबेदार दत्तक नाजायज करार दिया गया

कृष्णाराव सागर (दत्तक) रामचन्द्रराव राजे झाँसी

ब्यंकटराव सूबेदार सागर

खनियाधाना के राजाओं का वंश वृक्ष

दीवान अमरेस [ओरछा के उद्दैतसिंह के पुत्र]

महाराज देव

जवाहरसिंह

पृथ्वीपाल

गुमानसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छत्रसिंह

खलकसिंह

चिरगाँव के राजाओं का वंश वृक्ष

मोहकमसिंह बिजना के रायसिंह के पुत्र

पारसजू

गनेशजू

बखतसिंह सन् ५७ के विद्रोह में भाग लेने वाले

बुन्देला क्षत्रिय ही गहरवार क्षत्री हैं

छत्तीस वाले क्षत्रियों की चार शाखायें विभाजित हैं।

सूर्य वंश [१] रवि के दस—गहरवार, वैस, गौर, राठौर, सिसौदिया बड़ उज्जल, कछवाहे, रक्षक, सेंगर सिरनेत।

चन्द्र वंश [२] चन्द्र के दस—जांदो, तेवर, चन्देल, पाँडु, वघेल, सौम, वंशी, भाटी, कृष्णातिल, नदवानी, झाला।

मुनि वंश [३] ऋषियों के बारह-शिव बन्शी, बणदिया, दीखत, नागवंशी बोच्छिल, विशेन, काफुन, सकेत, भृगुवंशी, गर्गवंशी, कदम्ब, घाकरे।

अग्नि वश [४] अग्नि के चार परिहार, चौहान, सोलंकी, प्रमार, भारतवर्ष, के पुरातत्व वेत्ताओं ने क्षत्रिय जाति के तीन वंश वाले तेरह वाले और छत्तीस कुल प्रधान माने हैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेष सब इन्हीं की शाखा प्रशाखायें हैं। छत्तीस विवरण इस प्रकार हैं: —

क्षत्रियों का परिचय

नाम क्षत्रिय	गोत्र	वंश	परिचय स्थान
गहरवार	कस्यव	सूर्य	भाटा, हरदोई, बांदा, उन्नाव झाँसी जिलों में रहते हैं।
करोक्ष	कस्यव	सूर्य	मादोन कोट में रहते हैं।
बुन्देला	कस्यव	सूर्य	गहरवार की साख बुन्देलखण्ड में रहते हैं।
काटरन	"	"	काठिया वाड़ में रहते हैं।
लिच्चचछली	"	"	प्राचीन राठौर वंश
पाव वंश	"	"	यह वंश लोप हो गया हैं।
दाहिया	"	"	राठौर की साख मारबाड़ में रहते हैं।
जेटबा	"	"	राजा घुमली
चौपट सम्भ	"	"	जौनपुर में रहते हैं।
कासिव	"	"	सहारनपुर में रहते है।
सिंदेल	"	"	आजमगढ़ जिले में रहते हैं।
तरकट	"	"	आगरा व मथुरा में रहते हैं।
खाती	"	"	बीखतों की खास झांसी जिला में रहते हैं।
दुर्ग वंशी	"	"	जोधपुर राजवाड़ा में रहते हैं।
विलकरयां	"	"	प्रतापगढ़ में रहते हैं।
डूंगरा	"	"	काश्मीर बलिया महोनी में रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रक्षक	,,	,,	रीवा राज्य व बुन्देलखण्ड में रहते हैं।
दीखत	,,	,,	उन्नाव व झाँसी जिले में रहते हैं।
निम वंशी	,,	,,	संयुक्त प्रान्त में रहते हैं।
लांगर	,,	,,	बुन्देलखण्ड झांसी जिला में रहते हैं।
हाला	,,	,,	मालवा प्रान्त में रहते हैं।
झाला	,,	चन्द्र	धारा मेवाड़ में रहते हैं।
जसवार	,,	,,	पंजाब मिर्जापुर में रहते हैं।
जायस	,,	,,	बरेली जिला में रहते हैं।
चारदेव	,,	वर्ष	द्वारकापुरी में रहते हैं।
गौहिल	वैजवा पाइन	भृगवंश	कांटिया बाढ़ में रहते हैं।
गहलौत	,,	सूर्य	मथुरा व कानपुर जिलों में रहते हैं।
सिसोदिया	,,	,,	महाराष्ट्र जयपुर उदयपुर राज्यों में रहते हैं।
अहिड़िया	,,	,,	आजमगढ़ जिला में रहते हैं।
उदावत	,,	,,	गहलौत को खास आजमगढ़ जिला में रहते हैं।
जघेरे	भारद्वाज	अग्निवंश	चौहान की साख शिवपुरी जिला व बुन्देलखण्ड में रहते हैं।
गौर	,,	सूर्य	कानपुर झाँसी दतिया टीकमगढ़ जिलों में रहते हैं
वैस	,,	,,	उन्नाव रायबरेली झांसी शिवपुरी जिलों में रहते हैं।
पायक	,,	,,	वैसों की साख झांसी टीकमगढ़ उन्नाब जिला बांदा में रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिरनेत	"	"	गाजीपुर गोरखपुर जिलों में रहते हैं।
सिकरवार	"	"	बड़ उजवल साखा गुजरात ग्वालियर मुरैना आगरा जिलों में रहते हैं।
चौल वंश	"	"	मद्रास में रहते हैं।
पल्लव	"	"	दक्षिण में रहते हैं।
बल्ला	"	"	काठियाबाड़ में रहते हैं।
सुकेत	"	"	गौरों की साख पंजाब में रहते हैं।
उनार्य	"	"	गौरों की साख झाँसी जिला में रहते हैं।
जरैया	"	"	गौरों की मध्य भारत शिवपुरी जिला में रहते हैं।
पिपरैया	"	"	झांसी जिला में रहते हैं।
चन्दोसिया	"	"	वैसों की साख सुल्तानपुर में रहते है
धाकरे	"	"	आगरा जिला में रहते हैं।
गोतसिया	"	"	बड़उज्जवल की साख बलिया जिले में रहते हैं।
भाले सुल्तान	"	"	वैसों की साख रायबरेली लखनऊ में रहते हैं।
अमेठिया	भारद्वाज	सूर्य	गौरों की साख लखनऊ अमोठी में रहते हैं।
मनबग	"	"	जोधपुर में रहते हैं।
भ्रगु वंश	"	चन्द्र	बनारस बस्ती में रहते हैं।
नाहर	"	"	बघेलों की साख आजमगढ़ जिला में रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बघेल	,,	,,	बघेलखण्ड रीवा राज्य में रहते हैं।
नदवानी	,,	,,	बुन्देलखण्ड झांसी जिला में रहते हैं।
सोलंकी	,,	अग्नि	राजपूताना में रहते हैं।
हाड़ा	,,	,,	कोटा बूंदी राज्य में रहते हैं।
टड़ैया	,,	,,	सोलंकी की साख दतिया टीकमगढ़ जिलों में रहते हैं।
खीची	,,	,,	चौहान की साख इटावा ग्वालियर नौगांव, बराटा में रहते हैं।
चौहान	,,	,,	सब जगह एक दो कुटुम्ब रहते हैं।
प्रमार	वशिष्ट	,,	मालवा, जोधपुर, राजस्थान धौलपुर जिलों में रहते हैं।
निकुम्भ	,,	सूर्य	गोरखपुर, आजमगढ़, हरदोई जौनपुर जिलों में रहते हैं।
चंवड़रा	,,	अग्नि	चौहान की साख मालवा दतिया जिला में रहते हैं।
कटगरिया	,,	चन्द्र	झाँसी दतिया मालवा जिलों में रहते हैं।
तीन देव	,,	सूर्य	द्वारकापुरी के आसपास बसते हैं
रघुवंशी	,,	,,	हमीरपुर जिला में रहते हैं।
सेंगर	गौतम ब्र०	क्षत्रिय	जालौन जिला में रहते हैं।
गौतम	गौतम	सूर्य	राज अरगल
बरादिया	,,	ब्र० क्षत्रिय	सेंगरों की साख पूर्वी बंगाल में रहते हैं।
खरवांच	,,	सूर्य	कछवाहों की साख बुलन्दशहर तथा झांसी जिला में रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विशेन	ब्रह्म	ब्र० क्षत्रिय	गोरखपुर गोंडा प्रतापगढ़ जिलों में रहते हैं।
मौरी	,,	सूर्य	मथुरा आगरा जिलों में रहते हैं।
ऊदमतिया	,,	ब्र० क्षत्रिय	आजमगढ़ गौरख बाड़ा में रहते हैं।
भदौरिया	,,	अग्नि वंश	चौहान की साख ग्वालियर, भिन्ड जिलों में रहते हैं।
देवड़ा	,,	,,	राजपूताना सिरोही राज्य में रहते हैं।
संभरी	,,	,,	चौहान की साख पंजाब में रहते हैं।
बच्छगौत्री	,,	,,	सुल्तानपुर प्रतापगढ़ में रहते हैं।
पतैया	,,	,,	ग्वालियर जिला में रहते हैं।
रजलाम	,,	,,	बुन्देलखण्ड में रहते हैं।
जांगड़ा	,,	चन्द्र वंशी	बुलन्दशहर में रहते हैं।
राज कोमार	,	,,	सुल्तानपुर जिले में रहते हैं।
टांक	सोनक	नया वंश	मैंनपुरी पंजाब में रहते हैं।
गर्गवंशी गर्ग		ब्र० क्षत्रिय	नरसिहपुर सुल्तानपुर में रहते हैं।
दहिया	,,	,,	काठियाबाढ़ में रहते हैं।
सरपैंगा	,,	चन्द्र	उत्तरा खण्ड पूरब में पाये जाते हैं।
वाकाटक	विष्णु बोधक	सूर्य	पता नहीं
शिव वंश	क्षत्रिय	ब्र०क्षत्रिय	यह वंश लोप हो गया है
सिसरवार	,,	सूर्य	बुलन्दशहर में रहते हैं।
सोमवंशी	क्षत्रिय	,,	आजमगढ़ प्रतापगढ़ हरदोई झांसी जिला में रहते हैं।
भाटी	,,	,,	राजपूताने में रहते हैं।
जाड़ेजा	,,	,,	कच्छ गुजरात में रहते हैं।
जादों	,,	,,	अवांगढ़ कोटला आजमगढ़ आगरा जिलों में रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वांच्छिद	,,	,,	मथुरा में रहते हैं।
तौलना	,,	,,	राजा वीर नगर
मोखरे	,,	,,	प्राचीन राठौर वंश पता नहीं
पांडु	,,	,,	पता नहीं
सरस्वार	,,	,,	तम्बरों की साखा आगरा जिला में रहते हैं ।
छोकर	,,	,,	तम्बरों की साखा आगरा में रहते हैं।
तम्बर	व्याघ्र	,,	भिण्ड मुरैना ग्वालियर जिलों में रहते हैं।
कटहार	,,	,,	धरमपुरा का राज हरदोई जिला में रहते हैं।
पालीवार	,,	,,	गोरखपुर में रहते हैं।
जैवार	,,	,,	तम्बरों की साख बुलन्दशहर झांसी दतिया जिलों में रहते हैं।
इन्दौरिया	व्याघ्र	चन्द्र	जालौन व झांसी जिला मे रहते हैं
वीरवार	,,	,,	बलिया गाजीपुर जिला में रहते हैं
सरगैया	,,	,,	बुन्देलखण्ड में रहते हैं।
मदेशा	,,	,,	झांसी जिला में रहते हैं।
करचुल	हेहय	,,	कृष्णातिल की साख बलिया फैजाबाद जिला में रहते हैं।
चन्देल	चन्द्रावत	,,	सब जगह पाये जाते हुं।
सिलार	राकिन	,,	सूरत राजपूताना जिले में पाये जाते हैं।
कौशिक	कौशिक	,,	बलिया जिले में रहते हैं।
बनाफर	परासर	,,	हमीरपुर बांदा जिले में रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पांच देव	परासर	सूर्य	द्वारकापुरी के आसपास रहते हैं।
कृष्णातिल	अग्नि	चन्द्र	दतिया जिले में रहते हैं।
परिहार	कौशल	अग्नि	झाँसी जालौन आदि सब जगहों में मिलते हैं।
तरवी	,,	,,	पंजाब काँगड़ा जलन्धर जिलों में रहते हैं।
जनवर	,,	,,	बलरामपुर अवध झांसी जिलों में
तसहीया	,,	,,	चौहान की साख इलाहाबाद में रहते हैं।
छैदेव	भार्गव	,,	द्वारकापुरी के आसपास बसते हैं।
सात देव	नागिम	नागवंश	द्वारकापुरी के आसपास बसते हैं।
जासास्त	मानव	सूर्य	कछवाहों की साख मथुरा आगरा जिलों में रहते हैं।
कोड़ेवाल	,,	,,	लुधयाना जालन्धर जिलों में रहते हैं।
नदबक	,,	,,	जौनपुर में रहते हैं।
महोनी	,,	,,	बलिया व आगरा जिलों में रहते हैं।
मौनस	,,	,,	कछवाहों की साख मिर्जापुर में रहते हैं।
कछवाहे	मानव	सूर्य	जोधपुर, बीकानेर, ग्वालियर जालौन जिलों में रहते हैं।
डांगी	,,	,,	जोधपुर, बीकानेर, कन्नौज
राठौर	कस्यप	,	आदि सब जगह पाये जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तेरह शाखा वाले क्षत्रियों का विवरण

(१) जुजपेला (२) लहावल (३) पैंजवार (४) जयतेले (५) डेंगर (६) बुरवयांगत (७) बदरेले (८) गुरमार (९) रिछारिया (१०) डहिया (११) तौर (१२) खरे बुन्देला (१३) खरे प्रमार।

क्षत्रियों की शाखा से प्रथम समाजवादी तीन वाले क्षत्रियों का विवरण

(१) प्रमार (२) धंधेरे (३) बुन्देला यह सब छत्तीस शाखा वाले क्षत्रियों में शामिल थे बुन्देला क्षत्री माने जाते हैं।

आचार्य कवीन्द्र–केशव ओरछा

जन्म	देहान्त
वि० सं० १६१२	वि० सं० १६७४
(सन् १५५५ ई०)	(सन् १६१७ ई०)

रायप्रवीन

जन्म	देहान्त
वि० सं० १६४२	वि० सं० १७०१
(सन् १५८५ ई०)	(सन् १६४४ ई०)

आपके पूर्वजों का काव्य पर जन्म-सिद्ध अधिकार था। आपके पूर्वज सर्वदा से ऊँची श्रेणी के विद्वान और कवि होते रहे हैं। वह अपनी सरस्वती उपासना ही के प्रभाव से बड़े–बड़े सम्राटों से गुरुवत् पूजे जाते रहे हैं। ओरछा राजवंश तो आपके पूर्वजों का अनन्य भक्त ही था इस सम्बन्ध में विशेष जानने के लिए सुकवि सरोज का प्रथम भाग देखिये। आपके वंश में बराबर कवि होते रहने का वरदान सा है श्री पं. कृष्णदत्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जी और उनके पुत्र श्री पं. काशीनाथ जी प्रसिद्ध कवि थे। उनके तीनों पुत्र महाकवि बलभद्र जी कवीन्द्र पं. केशवदास जी और महाकवि कल्याण जी अपने समय के अद्वितीय महाकवि हुये। बलभद्र जी के पुत्र पं० बालकृष्ण जी हुये कवीन्द्र पं० केशवदास जी के पुत्र कविवर पं० बिहारीदास जी भी अच्छे कवि थे। केशव के आचार्य्यत्व पर विचार करते समय हमारा ध्यान उनके दो प्रसिद्ध ग्रन्थों की ओर जाता है। ये 'कविप्रिया' तथा 'रसिक-प्रिया' है पहला ग्रन्थ अलकारों पर है दूसरा रसों पर।

कविप्रिया में केशव ने काव्यभेद, कविभेद, कवि-सम्प्रदाय, काव्य के वर्ण्य विषय, अलकार, काव्यदोष इत्यादि का विस्तृत वर्णन किया है। केशव के इस ग्रन्थ का आधार 'काव्यदर्श, कविकल्पलतावृत्ति,' 'अलंकार शेखर' इत्यादि ग्रन्थ हैं। संस्कृत साहित्य में इन विषयों पर दो प्रकार के ग्रन्थ प्रस्तुत हुये। एक प्रकार के ग्रन्थों का लक्ष्य आचार्यत्व की दृष्टि से रसों, अलंकारों इत्यादि का विवेचन था, दूसरे प्रकार के ग्रन्थों में कवियों की शिक्षा के लिए कुछ लिखा जाता था। आचार्यत्व की दृष्टि से लिखी गई पुस्तकों में काव्यप्रकाश, काव्यादर्श, रसगंगाधर, साहित्यदर्पण इत्यादि के नाम लिये जा सकते हैं। इन पुस्तकों में ग्रन्थकर्ताओं का उद्देश्य वैज्ञानिक विश्लेषण के द्वारा विषय का पांडित्यपूर्ण ढंग से प्रतिपादन करना रहता था। दूसरी प्रकार की पुस्तकों का लक्ष्य साधारण कवियों को काव्य की साम्प्रदायिक बातों से तथा लौकिक ज्ञान से परिचित कराना चाहता था। सब कवियों के लिये देशाटन इत्यादि सम्भव नहीं था अतः उनके लाभ के लिए कुछ सामग्री प्रस्तुत कर दी जाती थी। परन्तु इन कवि-शिक्षा पर लिखी गई पुस्तकों के आधार पर जो रचनायें होती होंगी उनमें प्रत्यक्ष अनुभव से लिखी गई कविता से प्राप्त होने वाली सजीवता न रहती होगी। फिर भी ऐसी पुस्तकों से साधारण कवियों का लाभ ही हुआ होगा। इन कवि-शिक्षा की पुस्तकों में यहां बता दिया गया है कि किन-किन प्रस्तुतों के कौन-कौन से उपमान हो सकते हैं। ग्रन्थकर्ताओं का तो लक्ष्य यही रह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होगा कि कुछ बातों का संकेत स्वतन्त्र उद्भावना तथा कल्पना को जागृत करेगा। परन्तु फल उसका एकदम विपरीत हुआ। संस्कृत के पिछले काल में अनेक ऐसे कवि मिलेंगे जो पुस्तकों में गिनाये हुये उपमानों से आगे न बढ़ सके। कवि-शिक्षा पर लिखी गई इस प्रकार की पुस्तकों में 'काव्य-कल्पतावृत्ति' 'काव्यमीमांसा' इत्यादि के नाम लिये जा सकते हैं केशवदास जी ने 'कविप्रिया' के चार अध्याय इसी विषय पर लिखे हैं। इन अध्यायों में कवि सम्प्रदाय में प्रचलित कुछ बातों का संकलन कर दिया गया है।

श्री रामचन्द्रिका तथा संस्कृत-ग्रन्थ

हिन्दी के अनेक प्राचीन तथा आधुनिक कवियों ने रामकथा पर काव्य लिखे हैं। प्राचीन काव्यों में 'रामचरित मानस' तथा 'रामचन्द्रिका' इन दोनों ग्रन्थों का अधिक प्रचार हुआ। 'रामचन्द्रिका' प्रचार की दृष्टि से कुछ संकुचित क्षेत्र में रही परन्तु 'रामचरित मानस' घर-घर में विराजने लगी। भाषा में रामचरित गाने वालों ने अपने काव्य के लिये संस्कृत की भिन्न-भिन्न रामायणों अनेक पुराणों तथा काव्य-नाटकों से सामग्री ग्रहण की। संस्कृत के काव्यकारों तथा नाटककारों ने अपनी-अपनी आवश्यकता नुसार रामकथा में अनेक परिवर्तन किये जिनकी उद्भावना भक्ति मिश्रित कल्पना से की गई। तुलसीदास इत्यादि भाषा कवियों ने भी अपनी रुचि के अनुसार कभी रामचरित को अधिक सुन्दर बनाने की तथा कभी कथा की आवश्यकतानुसार अनेक कल्पनाऐं कीं। केशवदास जी ने 'रामचन्द्रिका' की प्रस्तावना में लिखा है कि वाल्मीकी मुनि ने मुझे स्वप्न में दर्शन दिए थे। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वाल्मीकी-कृत रामायण से उन्हें अधिक सहायता मिली होगी। ग्रन्थ को देखने से ज्ञात होता है।

संस्कृत के दो नाटक ऐसे हैं जिनका बहुत गम्भीर तथा विस्तृत प्रभाव तुलसीदास तथा केशवदास दोनों पर पड़ा है ये 'प्रसन्नराघव' तथा 'हनुमाननाटक' हैं तुलसीदास का झुकाव 'हनुमाननाटक' की ओर अधिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था और केशवदास पर अपेक्षाकृत 'प्रसन्नराघव' नाटक का अधिक प्रभाव पड़ा है। तुलसी का परशुराम-सम्वाद 'हनुमाननाटक' की छाया है तथा केशव का परशुराम–सम्वाद 'प्रसन्नराघव' से प्रभावित है संस्कृत के इन दोनों नाटकों को मिलाकर पढ़ने से एक बात आश्चर्य में डाल देती है। कुछ श्लोक इन दोनों ग्रन्थों में एक ही हैं या बहुत कुछ मिलते जुलते हैं।

कविप्रिया तथा संस्कृत के आचार्य

'कविप्रिया' में केशव ने सोलह प्रभाव रखे हैं। पहले दो प्रभावों में कवि ने अपने तथा अपने आश्रयदाता के वंशों का सविस्तार वर्णन किया है। दूसरे प्रभाव से वास्तविक पुस्तक प्रारम्भ होती है। तीसरे प्रभाव में काव्य-दोषों का वर्णन किया गया है।

पांडित्य

कवि के संक्षिप्त परिचय के प्रसंग में कहा जा चुका है कि इनके यहां पांडित्व की परम्परा बहुत दिनों से चली आती थी। इनके वंश में अनेक प्रसिद्ध विद्वान हो चुके थे। पुराण-वृत्ति इनके घराने में पहले से चली आती थी। केशवदास जी स्वयं भी उच्च कोटि के संस्कृत-साहित्य के पंडित थे। जैसा इनकी रचनाओं से प्रमाणित होता है। रामचन्द्रिका तथा संस्कृत ग्रन्थ वाले प्रकरण में यह दिखाया जा चुका है कि इन्होंने 'प्रसन्न-राघव' तथा 'हनुमाननाटक' इत्यादि ग्रन्थो से बहुत सामग्री ली थी। इन दोनों नाटकों के अतिरिक्त कादम्बरी' इत्यादि का भी कुछ-कुछ प्रभाव इनकी रचनाओं पर पड़ा है। 'विधि के समान है विमानकृत राजहंस' इत्यादि स्थल तो प्रत्यक्ष ही कादम्बरी के हैं। विज्ञानगीता की रचना प्रवोध-चंद्रोदय के अनुसार हुई। संस्कृत के और ग्रन्थों का भी प्रभाव 'रामचन्द्रिका पर स्पष्ट लक्षित होता है। जब ग्रन्थकर्ता की अपनी रचनाओं का प्रभाव ऐसा होता है कि दूसरे ग्रन्थों की सूक्तियां उसमें काव्योचित सामजस्य के साथ बैठाई जा सके केशव वैद्यक भी अच्छी जानते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अलंकार

'भूषन बिन न बिराजई कविता बनिता मित्त'

—केशव

रामचन्द्रिका की कथावस्तु

रामचन्द्रिका में राम की कथा है। यह कथा ३९ प्रकाशों में विभक्त की गई है। १ से लेकर २० प्रकाश तक की कथा रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध में और २१ से ३९ प्रकाश की कथा रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध में वर्णित है। संक्षेप मे प्रत्येक प्रकाश की कथा इस प्रकार है—

पहला प्रकाश–गणेश-वन्दना, सरस्वती-वन्दना, श्रीराम वन्दना, कवि का वंश-परिचय, ग्रन्थ-रचनाकाल, ग्रन्थ-रचना-कारण, राजा दशरथ का परिचय, विश्वामित्र का अयोध्या में आना, सरयू का वर्णन, राजा दशरथ के हाथियों का वर्णन, राजा दशरथ के बागों का वर्णन, अयोध्या नगरी का वर्णन।

दूसरा प्रकाश–महर्षि विश्वामित्र का राज़ा दशरथ के दरबार में आना, दरबार का वर्णन, राम और लक्षमण का विश्वामित्र के साथ वन में जाना।

तीसरा प्रकाश–वन वर्णन, यज्ञ-रक्षण, सीता-स्वयंवर का वर्णन।

चौथा प्रकाश–रावण-बाणासुर-सम्वाद।

पांचवां प्रकाश–राम का जनकपुरी-गमन, अहिल्याबाई का उद्धार, अरुणोदय, जनक की निराशा, राम का धनुष तोड़ना।

छठा प्रकाश–दशरथ का बारात लेकर जनकपुरी आना, राम के विवाह का वर्णन।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकाश—परशुराम-सम्वाद, राम का परशुराम के मान को भंग करना।

आठवाँ प्रकाश—राम का अयोध्या नगरी में प्रवेश और अयोध्या-वासियों के आनन्द का वर्णन।

नवाँ प्रकाश—दशरथ द्वारा भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल भेजना, राम-लक्ष्मण-सम्वाद, राम का वन गमन, सीता-मुख-वर्णन, राम का लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट पर्वत पर पहुंचना।

दशवाँ प्रकाश—भरत का अयोध्या लौटना, राजा दशरथ की मृत्यु, भरत का सेना-सहित राम को वापस लाने के लिए चित्रकूट की ओर प्रस्थान, राम के न लौटने पर भरत का उनकी खड़ाऊँ लेकर आना और नन्दीग्राम में रहकर राज-काज़ चलाना।

ग्यारहवाँ प्रकाश—राम का पंचवटी में निवास करना, पंचवटी वर्णन, गोदावरी वर्णन, सीता का गान-वाद्य का प्रभाव-वर्णन, सूर्पणखा-राम-सवाद सूर्पणखा के नाक कान काटकर उसे कुरूप करना।

बारहवाँ प्रकाश—खर-दूषण और त्रिसरा का वध, सीता का रावण द्वारा अपहरण, सीता का विलाप, राम की उन्मत दशा का वर्णन, पम्पासर-वर्णन, सुग्रीव का मिलन।

तेरहवाँ प्रकाश—बालि का वध, वर्षा ऋतु और शरद ऋतु का वर्णन, सीता की खोज, राम की समुद्र पार करने की तैयारी, रावण-सीता संवाद हनुमान सम्वाद, राम की विरहावस्था का वर्णन।

चौदहवाँ प्रकाश—हनुमान का लंका जलाना, राम के लिये सीता का सन्देश भेजना, राम का सागर तीर पर डेरे डालना, समुद्र वर्णन।

पन्द्रवाँ प्रकाश—रावण का अपने मन्त्रियों से विचार-विमर्श करना, विभीषण का राम से मिलना, राम का सागर पार करना, लंका का वर्णन.

सोलहवाँ प्रकाश—रावण अंगद सम्वाद, अंगद का रावण के मुकुट को छीनकर ले जाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अलंकार

'भूषन बिन न बिराजई कविता बनिता मित्त'

—केशव

रामचन्द्रिका की कथावस्तु

रामचन्द्रिका में राम की कथा है। यह कथा ३९ प्रकाशों में विभक्त की गई है। १ से लेकर २० प्रकाश तक की कथा रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध में और २१ से ३९ प्रकाश की कथा रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध में वर्णित है। संक्षेप में प्रत्येक प्रकाश की कथा इस प्रकार है—

पहला प्रकाश—गणेश-वन्दना, सरस्वती-वन्दना, श्रीराम वन्दना, कवि का वंश-परिचय, ग्रन्थ-रचनाकाल, ग्रन्थ-रचना-कारण, राजा दशरथ का परिचय, विश्वामित्र का अयोध्या में आना, सरयू का वर्णन, राजा दशरथ के हाथियों का वर्णन, राजा दशरथ के बागों का वर्णन, अयोध्या नगरी का वर्णन।

दूसरा प्रकाश—महर्षि विश्वामित्र का राजा दशरथ के दरबार में आना, दरबार का वर्णन, राम और लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ वन में जाना।

तीसरा प्रकाश—वन वर्णन, यज्ञ-रक्षण, सीता-स्वयंवर का वर्णन।

चौथा प्रकाश—रावण-बाणासुर-सम्वाद।

पांचवाँ प्रकाश—राम का जनकपुरी-गमन, अहिल्याबाई का उद्धार, अरुणोदय, जनक की निराशा, राम का धनुष तोड़ना।

छठा प्रकाश—दशरथ का बारात लेकर जनकपुरी आना, राम के विवाह का वर्णन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवाँ प्रकाश–परशुराम-सम्बाद, राम का परशुराम के मान को भंग करना।

आठवाँ प्रकाश–राम का अयोध्या नगरी में प्रवेश और अयोध्या-वासियों के आनन्द का वर्णन।

नवाँ प्रकाश–दशरथ द्वारा भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल भेजना, राम-लक्ष्मण-सम्वाद, राम का वन गमन, सीता-मुख-वर्णन, राम का लक्ष्मण और सीता सहित चित्रकूट पर्वत पर पहुंचना।

दशवाँ प्रकाश–भरत का अयोध्या लौटना, राजा दशरथ की मृत्यु, भरत का सेना-सहित राम को वापस लाने के लिए चित्रकूट की ओर प्रस्थान, राम के न लौटने पर भरत का उनकी खड़ाऊँ लेकर आना और नन्दीग्राम में रहकर राज-काज़ चलाना।

ग्यारहवाँ प्रकाश–राम का पंचवटी में निवास करना, पंचवटी वर्णन, गोदावरी वर्णन, सीता का गान-वाद्य का प्रभाव-वर्णन, सूर्पणखा-राम-सवाद सूर्पणखा के नाक कान काटकर उसे कुरूप करना।

बारहवाँ प्रकाश–खर-दूषण और त्रिसरा का वध, सीता का रावण द्वारा अपहरण, सीता का विलाप, राम की उन्मत दशा का वर्णन, पम्पासर-वर्णन, सुग्रीव का मिलन।

तेरहवाँ प्रकाश–बालि का वध, वर्षा ऋतु और शरद ऋतु का वर्णन, सीता की खोज, राम की समुद्र पार करने की तैयारी, रावण-सीता संवाद हनुमान सम्वाद, राम की विरहावस्था का वर्णन।

चौदहवाँ प्रकाश—हनुमान का लंका जलाना, राम के लिये सीता का सन्देश भेजना, राम का सागर तीर पर डेरे डालना, समुद्र वर्णन।

पन्द्रवाँ प्रकाश–रावण का अपने मन्त्रियों से विचार-विमर्श करना, विभीषण का राम से मिलना, राम का सागर पार करना, लंका का वर्णन.

सोलहवाँ प्रकाश–रावण अंगद सम्वाद, अंगद का रावण के मुकुट को छीनकर ले जाना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सत्रहवां प्रकाश—राम की सेना द्वारा लंका को घेरना, शत्रु की सेना का वर्णन, लक्ष्मण-मूर्च्छा हनुमान का द्रोणापर्वत लाना, लक्ष्मण का सचेत होना।

अठारहवाँ प्रकाश—कुम्भकरण और मेघनाद की मृत्यु।

उन्नीसवां प्रकाश—मकराक्ष-वध रावण का युद्ध क्षेत्र में जाना मन्दोदरी का उसे समझाना, रावण-यज्ञ-भंग, मन्दोदरी के कचुकी रहित उरोजों का वर्णन, राम-रावण युद्ध और रावण का वध।

बीसवां प्रकाश—सीता-मिलन और उसकी अग्नि परीक्षा ब्रह्मादि की स्तुति त्रिवेणी–वर्णन भारद्वाज के आश्रम का वर्णन, भारद्वाज के रूप का वर्णन।

इक्कीसवां प्रकाश—राम-विधान-वर्णन सनाढ्योत्पत्ति वर्णन, राम-भरत मिलाप।

बाईसवां प्रकाश—राम का अयोध्या में प्रवेश।

तेईसवां प्रकाश—ऋषिगण-आगमन-वर्णन राम की राजश्री की निन्दा।

चौबीसवां प्रकाश—राम की विरक्ति का वर्णन, बचपन यौवन तथा वृद्धावस्था के दुखों का वर्णन।

पच्चीसवां प्रकाश—वशिष्ठ का राम को जीवोद्धार की रीति बताना।

छब्बीसवां प्रकाश—राम-नाम के महात्स्य वर्णन, तिलकोत्सव वर्णन।

सत्ताईसवां प्रकाश—ब्रह्मा आदि द्वारा राम की स्तुति।

अट्ठाईसवां प्रकाश—राम राज्य का वर्णन।

उन्नतीसवां प्रकाश - चौगान वर्णन, अयोध्या की रोशनी का वर्णन शयनागार का वर्णन, राज्यपटल का वर्णन।

तीसवां प्रकाश—संगीत वर्णन, नृत्य-वर्णन, संगीत प्रशंसा, सेज-वर्णन प्रभात-वर्णन, प्रातःकालीन कृत्यों का वर्णन, भोजन के विविध प्रकारों का वर्णन, बसन्त वर्णन, चन्द्र वर्णन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इकत्तीसवां प्रकाश—बाग-गमन-वर्णन, शुक्र द्वारा सीता का नख शिख वर्णन ।

बत्तीसवाँ प्रकाश—बाग-वर्णन, कृत्रिम पर्वत का वर्णन, कृत्रिम सीता का वर्णन, जलाशय का वर्णन, जल-क्रीड़ा का वर्णन, स्नानान्तर नारी तन की शोभा का वर्णन, राम का रनिवास को वापस लौटने का वर्णन ।

तेतीसवां प्रकाश—ब्रह्मा का आगमन तथा विनय करना, शबुक–बध राम-सीता सम्वाद, सीता निर्वासन, कुष–लव का जन्म ।

चौंतीसवां प्रकाश—स्वान-सन्यासी-अभियोग मठधारी निन्दा, सत्य-केतु का व्याख्यान, सनढ्य द्विज आगमन वर्णन, मथुरा–महात्म्य–वर्णन लवणासुर–वध वर्णन ।

पैंतीसवां प्रकाश—राम के अश्वमेघ यज्ञ का वर्णन ।

छत्तीसवां प्रकाश—लव और लक्ष्मण के युद्ध का वर्णन ।

सैंतीसवां प्रकाश—लव का कटु वचन कहना, भरत को बांण लगना ।

अड़तीसवां प्रकाश—लव और अंगद का युद्ध ।

उन्तालीसवां प्रकाश—सीता का विलाप, राम–सीता–मिलन, राम का अपने पुत्रों में राज्य-वितरण, राम द्वार राजनीति का उपदेश, राज्य, रक्षा के उपायों का वर्णन, राम–चरित-महात्म्य, रामचन्द्रिका के पाठ का महात्म्य का वर्णन ।

रावण के कथन में राजनीति के दांव–पेंच की कितनी सुन्दर व्यंजना है । अंगद के कथन में कितनी विदग्धता तथा व्यङ्ग है ।

उत्कृष्ट संवादों से सारी रामचन्द्रिका भरी पड़ी है और इन संवादों के कारण रामचन्द्रिका में नाटक की सी सजीवता आ गई है । राम-चन्द्रिका के लिए ये सम्वाद भूषण नहीं । हिन्दी साहित्य में कही भी अन्यत्र इतने सुन्दर सम्वाद नहीं मिलते और इस दृष्टि से केशव का स्थान निर्विवाद सर्वोच्च स्वीकृत किया गया है । तुलसी के सम्वादों में भी वह सजीवता तथा विदग्धता नहीं है जो केशव के सम्वादों में है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपसंहार—

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि कला निपुणता तथा शुद्ध कविता की दृष्टि से हिन्दी कवियों में केशव का स्थान किसी से भी नीचा नहीं हैं। तुलसी और सूर का जनता के ऊपर अधिक प्रभाव है। वह उनकी भक्ति की गम्भीरता तथा भावुकतापूर्ण व्यंजना के कारण हैं वे प्रथम भक्त हैं तदनन्तर कवि। केशव प्रथम कवि हैं तदनन्तर भक्त। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि हमें तुलसी तथा सूर में उत्कृष्ट कवित्व शक्ति के दर्शन नहीं होते इसका अभिप्राय केवल इतना ही है कि जहाँ तक कला चातुरी तथा शुद्ध कवित्व का सम्बन्ध है केशव उनसे आगे बढ़ जाते हैं। यदि हम कला निपुणता के साथ-साथ प्रभविष्णुता का भी विचार करते हैं। तो तुलसी और सूर का स्थान निःसन्देह केशव से ऊँचा ठहरता है और केशव तृतीय स्थान के ही भागी बनते हैं। केशव को कबीर, जायसी, बिहारी तथा देव के भी नीचे घसीटना उस महान कवि के साथ घोर अन्याय करना है।

केशव को सम्वादों में अत्यन्त अधिक सफलता मिली है। फड़कती हुई सजीव भाषा में पात्रों के अनुकूल क्रोध उत्साह आदि की अत्यन्त सुन्दर व्यंजना सम्वादों की प्रथम विशेषता है। रावण-वाण सम्वाद का लक्ष्मण राम परशुराम–सम्वाद तथा लवकुश के प्रसंग के संवाद इस दृष्टि से द्रष्टव्य हैं। विदग्धता तथा व्यंग मुंह तोड़ उत्तर–प्रत्युत्तर तथा भावानु–कूल छन्द योजना इनके सम्वादों की कुछ अन्य विशेषतायें है। राजनीति के दांव पेंच की प्रभावपूर्ण व्यजना भी इनके संवादों में कहीं कहीं बहुत ही सुन्दर हुई है। रावण-अंगद-सम्वाद, रावण-हनुमान सम्वाद इस दृष्टि से बहुत ही सुन्दर तथा रोचक हुये हैं। दशरथ-विश्वामित्र-सम्वाद. वामदेव-परशुराम-सम्वाद, रावण-सीता-सम्वाद, रावण-मन्दोदरी-सम्वाद, राम-भरत सम्वाद इत्यादि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थ रचना सम्पूर्ण व्याख्या

(१) कवीन्द्र का सर्वप्रथम ग्रन्थ रसिकप्रिया है, महाराजा इन्द्रजीत सिह के लिए यह ग्रन्थ बनाया था सं० १६४८ वि० में रचना हुई पहिले कुछ सारांश लिखा है राजधानी, राजवंश का वर्णन करते हुए ग्रन्थ रचना का कारण लिखा है नवरस-नायिका, जाति-नायिका, भेद-चारी प्रकार के दर्शन वियोग श्रृङ्गार-चारों वृत्तियों का वर्णन है श्री राधाकृष्ण का अति ह्रास अति विह्वलता हास्य रस लिखा।

(२) आपका दूसरा ग्रन्थ प्रकाण्ड पांडित्य से पूर्ण रामचन्द्रिका ग्रन्थ सर्वोपरि सं० १६५८ वि० में लिखा गया है पहले सारांश लिखा है। सम्पूर्ण रामायण स्वरूप है।

(३) आपका तीसरा ग्रन्थ कवि प्रिया स० १६५८ वि० में इन्द्रजीत सिह व अपनी शिष्या रायप्रबीन के लिए रचना हुई। ग्रन्थ में सत्रह अध्याय हैं।

(४) चौथा ग्रन्थ विज्ञान गीता सं. १६६७ वि० के इक्कीस अध्याय हैं अध्यात्म विषय–महामोह विवेक और उपदेश प्रद ग्रन्थ लिखा है।

(५) पांचवां ग्रन्थ वीरसिंह देव चरित सं० १६६४ वि० बनायाहै। इसमें महाराज बीरसिंह देव का बृतान्त हैं एतिहासिक दृष्टि से यह ग्रन्थ बड़े ही महत्व का है पाँडित्यपूर्ण है।

(६) छठवाँ ग्रन्थ रतन बावनी सं० १६५८ वि० में महाराजा रतन सिह की विजय बहादुरी के प्रसंग अकबर बादशाह से मिलन ओरछा का हाल लिखा है अनोखी घटनायें लिखी हैं।

(७) जहांगीर जस चन्द्रिका सं० १६६९ बि० में जैसा कि ग्रन्थ का नाम रचना दरबार का वर्णन–उद्यम-भाग्य की चर्चा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(८) नखशिक सं० १६५८ वि० श्री महादेव जी की अस्तुति ।

(९) छन्द माला सं० १६५८ वि० सम्पूर्ण देवताओं के कवित्त ।

(१०) बारहमासी सं० १६५८ वि० प्रत्येक महीना के पद कवित्त ।

(११) बटुक सप्तकें सं० १६६८ भैरव वि० जी की अस्तुति ।

(१२) बाणिज्य प्रिया वि० सं० १६६९ में ।

बुढ़ापे से ये वास्तव में बहुत दुःखी थे और स्थान-स्थान पर जहां कहीं बुढ़ापे का वर्णन किया है । एक चित्र सा अंकित कर दिया है ।

केशव केशन अस करी, जस अरिहू न कराहिं ।
चन्द्रवदनि, मृगलोचनि बाबा कहि कहि जाहि ।।

कुलीन स्त्रियां जब बाहर निकलती है तो प्रायः सङ्कोच के कारण दबी-सी जाती है और ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी कमर लचकती हो ।

कचन के भार कुचभारन सकुचमार ।
लचकि-लचकि जात कटितट बाल के ।।

दिनांक १४ अप्रैल सन् १६१७ ई० अर्थात् वि० सं० १६७४ में श्री आचार्य कबीन्द्र केशव जी स्वर्गवासी हुए आपके सुपुत्र कविवर बिहारी दास का जन्म वि०सं० १६५५में हुआ था आपके ग्रन्थ रचना वि० १७१९ में बिहारी सतसई की हुई जिसमें ७१९ दोहा है आपका देहान्त वि० सं० १७२० में फुटेरा पिछोर ननिहाल में हुआ था ।

इन्द्रजीत महाराजा (ओरछा)

इन्द्रजीत महाराजा ओरछा का जन्म सं० १६२० वि० देहान्त सं० १७०५ वि० में हुआ आप ओरछा की गद्दी पर नहीं रहे परन्तु यहां के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्यवाहक शासक थे ओरछा राज्य ही के अन्तर्गत कछौआ पिछोर पर आप जागीरदार थे मधुकरशाह के तीसरे पुत्र थे। कवीन्द्र केशव ने वीर–सिंह देव चरित नामक ग्रन्थ में महाराजा शब्द का प्रयोग किया है।

ओरछा गजेटियर पृष्ठ नं० १८ पर लिखा है कि यह कार्यबाहक शासक थे।

आचार्य–कवीन्द्र केशव ने सं० १६५८ वि० में ग्रन्थ कविप्रिय में अपने महाराजा इन्द्रजीत के प्रीत्यर्थ उनकी प्रीति पात्री और अपनी शिष्य रायप्रवीण के लिए रचा है। राय प्रवीण स्वयं काव्य करती थीं और गान विद्या में पारङ्गत थी ऐतिहासिक दृष्टि से यह ग्रन्थ बड़े महत्व का है। रायप्रवीण को महाराजा इन्द्रजीत की प्रेमिका को शिरोमणि बताते हुए रायप्रवीण को ओरछा की नर्तकी कहते हैं।

इसी काल की कवियत्रियों में ओरछा के दरबार आश्रय में रहने वाली श्रेष्ठ वेश्या 'राय प्रवीन' तीन तरङ्ग विलोच नयना तथा मधुर अली के नाम उल्लेखनीय हैं।

राय प्रवीन ओरछा की नर्तकी

जन्म सं० १६४२ वि० और निधन सं० १७०१ वि० ओरछा राज्य को हिन्दी के नवरत्नों में से महाकवि 'केशव' ने अपनी काव्य स्थली बनाया, जो इतनी रङ्गीन तबियत के थे—

जब अकबर सम्राट ने राय प्रवीन को आगरा बुलाने का आदेश (सन् १६०२ ई०) सं० १६५९ वि० में भेजा था उस समय इन्द्रजीतसिंह से रायप्रवीन निवेदन करती है कि—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त— आई हौं बूझन मन्त्र तुम्हें
निज शासन से सिगरी मति गोई।
देह तजौं कि तजौं कुल कानि
हियै न लजौ लज है सब कोई ॥
स्वारथ औ परमारथ को पथ,
चित्त विचार कहौ सब कोई।
जामें रहै प्रभु की प्रभुता, अरु
मौर पतिव्रत भङ्ग न होई ॥

सन् १६०२ई० अर्थात् सं०१६५९ वि० में इन्द्रजीतसिंह की सम्मत्ति से रायप्रवीन आगरा अकबर दरबार में उपस्थित हुई और इस प्रकार अकबर बादशाह से रायप्रवीन कहती—

॥ दोहा ॥

स्वर्ण ग्राहक तीन हैं, कवि, विभिचारी-चोर।
पग न धरत, संसय करत, तनक न चाहत शोर ॥
पेड़ बड़ौ छाया घनी, जगत करै विश्राम।
ऐसे तरुवर के तरै, मोय सतावै घाम ॥
कहा दोष करतार कौ, कर्म कुटिल गहैं बांह।
कर्महीन किलपत फिरहिं, कल्पवृक्ष की छांहि ॥
कनक छरीसी कामिनी, काहै कटि की छीन।
कटि की कंचन काढ़िकै, कुच-नितम्ब भर दीन ॥
जो कुच कंचन के बनै, मुख कारौ किहि कीन।
जीवन ज्वर के जोर में, मदन मुहर कर दीन ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर बादशाह ने रायप्रवीन से प्रश्न पूछा—

जुवन चलत तिय देह तै,
चटकि चलत केहि हेतु ॥ १ ॥

रायप्रवीन का उत्तर—

मनमथ गारि मशाल का,
संति सिहारौ लेत ॥ २ ॥

बादशाह अकबर का प्रश्न—

ऊँचै ह्वै सुर बस किये,
सब ह्वै नर वस कीन ॥ १ ॥

रायप्रवीन का जवाब—

अब पताल बस करन को,
ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥

ओरछा की नर्तकी रायप्रवीन ने मुगल सम्राट अलबर को भरे दरबार में फटकारते हुए कहा था। जूँठी पत्ताल और पातुर को अधम और नींच ही स्वीकार करते हैं।

'विनती राय प्रवीन की सुनिये साहि सुजान।
जूठी पातर भखत हैं बारी वायस स्वान॥"

और मुगल सम्राट को निरुत्तर होकर वेश्या पुत्री होने पर भी पतिव्रत और जननी जन्म-भूमि के सम्मान के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाली इस कवियित्री ओरछा की नर्तकी को आदर सहित ओरछा ही भेज दिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराजा ओरछा के राज्य शासन काल का परिचय (परिशिष्ट) कालबोध

क्र०	नाम महाराजा	सन् ईस्वी	विक्रमी सम्वत्	विशेष विवरण
१	भारती चन्द्र (प्रथम)	सन् १५३१–१५५४ ई०	१५८८ १६११ वि०	
२	मधुकरशाह	सन् १५५४ १५९२ ई०	१६११ १६४९ वि०	(कार्यवाहक
३	रामशाह	सन् १५९२–१६०६ ई०	१६४९–१६६३ वि०	शासक इन्द्रजीत
४	वीरसिंह देव (प्रथम)	सन् १६०६-१६२७ ई०	१६६३–१६८४ वि०	सिंह)
५	जुझारसिंह	सन् १६२७–१६३४ ई०	१६८४–१६९१ वि०	
६	देवीसिंह	सन् १६३४–१६३६ ई०	१६९१-१६९३ वि०	(कार्यवाहक
७	पृथ्वीराज	सन् १६३६–१६३७ ई०	१६९३–१६९४ वि०	शासक हरदौल)
८	चम्पतराय	सन् १६३७–१६४१ ई०	१६९४-१६९८ वि०	
९	पहाड़सिंह	सन् १६४१–१६६३ ई०	१६९८-१७२ वि०	
१०	सुजानसिंह	सन् १६६३–१६७२ ई०	१७२०–१७२९ वि०	
११	इन्द्रमनी	सन् १६७२–१६७५ ई०	१६२९·१७३२ वि०	
१२	जसवन्तसिंह	सन् १६७५-१६८४ ई०	१७३२–१७४१ वि०	
१३	भगवन्तसिंह	सन् १६८४ १६८९ ई०	१७४१–१७४६ वि०	
१४	उद्दैतसिंह	सन् १६८९-१७३६ ई०	१७४६–१७९३ वि०	
१५	पृथ्वीसिंह	सन् १७३६-१७५२ ई०	१७९३-१८०९ वि०	
१६	सामन्तसिंह	सन् १७५२–१७६५ ई०	१८०९–१८२२ वि०	
१७	हेतसिंह	सन् १७६५ १७६८ ई०	१८२२–१८२५ वि०	
१८	मानसिंह	सन् १७६८–१७७५ ई०	१८२५–१८३२ वि०	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्र०	नाम महाराजा	सन् ईस्वी	विक्रमी सुम्वत	[illegible]
१९	भारतीचन्द्र (द्वितीय)	सन् १८१७-१८३४ ई०	१८७४-१७९१ वि०	
२२	तेजसिंह	सन् १८३४-१८४१ ई०	१८९१-१८९८ वि०	
२३	सुजानसिंह	सन् १८४१-१८५४ ई०	१८९८-१९११ वि०	
२४	हमीरसिंह	सन् १८५४-१८७४ ई०	१९११-१९३१ वि०	
२५	प्रतापसिंह	सन् १८७४-१९३० ई०	१९३१-१९८७ वि०	
२६	वीरसिंह (द्वितीय)	सन् १९३०-१९५६ ई०	१९८७-२०१३ वि०	(दिस. सन् ४७ में उत्तरदायी शासन प्रजा को सौंपा)
२७	देवेन्द्रसिंह	सन् १९५६-१९७९ ई०	२०१३-२०३६ वि०	
२८	मधुकरशाह	वर्तमान महाराजा	दिनांक ९-५-७९ ई० से (वैशाख शुक्ल १२ बुधवार वि० सं० २०३६ से)	

रचयिता—प्रकाशक—लेखक—

ठाकुर लक्ष्मनसिंह गौर

मुकाम पोस्ट—ओरछा

जिला—टीकमगढ़

म० प्र०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कंचनाघाट (नदी वेतवा किनारे) ओरछा स्थिति महाराजाओं के मकबरे समाधियां

क्रमांक	नाम मकबरा समाधी का विवरण	निर्माण वि० सम्वत्	काल सन् ईस्वी
१	श्री रुद्रप्रताप महाराजा स्थिति स्थान लैका भंवर बाग ओरछा	१५८८ वि०	१५३१ ई०
२	श्री भारतीचन्द कंचनाघाट ओरछा जीर्ण हालत में	१६११ वि०	१५५४ ई०
३	श्री मधुकरशाह ,, ,, ,, ,,	१६४९ वि०	१५९२ ई०
४	श्री वीरसिंह देव प्रथम, कृपाराम गौर कंचनाघाट पर	१६८४ वि०	१६२७ ई०
५	श्री देवतुल्य हरदौल रानी बाग मकड़ारिया के पास	१६८८ वि०	१६३१ ई०
६	श्री जुझारसिंह गौड़वाना मण्डला म० प्र० में	१६९१ वि०	१६३४ ई०
७	श्री पृथ्वीसिंह कंचनाघाट के पास बगिया में	१६९४ वि०	१६३७ ई०
८	श्री पहाड़सिंह ,, ,, ,,	१७२० वि०	१६६३ ई०
९	श्री सुजानसिंह ,, ,, ,,	१७२९ वि०	१६७२ ई०
१०	श्री इन्द्रमनीसिंह ,, ,, ,,	१७३२ वि०	१६७५ ई०
११	श्री जसवन्तसिंह ,, ,, जाने वाले मार्ग पर	१७४१ वि०	१६८४ ई०
१२	श्री भगवन्तसिंह ,, ,, ,,	१७४२ वि०	१६८५ ई०
[illegible]	श्री सामन्तसिंह [illegible]टोवा उ० प्र०	१७९३ वि०	१७३६ ई०
१५	[illegible]	१८०९ वि०	१७५२ ई०

नोट—इसके आगे वाले वि०सं० १८४० (सन्१७८३ई०) से वर्तमान समय तक के मकबरे टीकमगढ़ म०प्र० में [illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आलोक प्रेस, झाँसी